लैव्यव्यवस्था

होमबलि के नियम

1 यहोवा परमेश्वर ने मूसा को बुलाया और मिलापवाले तम्बू में से उससे बोला। यहोवा ने कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो: तुम लोगों में से कोई जब यहोवा को भेंट लाए तो वह भेंट तुम्हें उन जानवरों में से लानी चाहिए जो तुम्हारे झुण्ड या रेवड़ में से हो।

3"यदि कोई व्यक्ति अपने पशुओं में से किसी की होमबलि दे तो वह नर होना चाहिए और उस जानवर में कोई दोष नहीं होना चाहिए। उस व्यक्ति को चाहिए कि वह जानवर को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले जाये। तब यहोवा भेंट स्वीकार करेगा। 4इस व्यक्ति को अपना हाथ जानवर के सिर पर रखना चाहिए। परमेश्वर होमबलि को व्यक्ति के पाप के लिए भुगतान के रूप में स्वीकार करेगा।

5"व्यक्ति को चाहिए कि वह बछड़े को यहोवा के सामने मारे। हारून के याजक पुत्रों को बछड़े का खून लाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार की वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 6वह उस जानवर का चमड़ा हटा देगा और उसे टुकड़ों में काटेगा। 7हारून के याजक पुत्रों को वेदी पर लकड़ी और आग रखनी चाहिए। 8हारून के याजक पुत्रों को वे टुकड़े, (सिर और चर्बी) लकड़ी पर रखनी चाहिए। वह लकड़ी वेदी पर आग के ऊपर होती है। 9याजक को जानवर के भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब याजक को जानवर के सभी भागों को वेदी पर जलाना चाहिए। यही होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

10"यदि कोई व्यक्ति भेड़ या बकरी की होमबलि चढ़ाए तो वह एक ऐसे नर पशु की भेंट दे जिसमें कोई दोष न हो। 11उस व्यक्ति को वेदी के उत्तर की ओर यहोवा के सामने पशु को मारना चाहिए। हारून के याजक पुत्रों को वेदी के चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 12तब याजक को चाहिए कि वह पशु को टुकड़ों में काटे। पशु का सिर और चर्बी याजक को लकड़ी के ऊपर क्रम से रखना चाहिए। लकड़ी वेदी पर आग के ऊपर रहती है। 13याजक को पशु के भीतरी भागों और उसके पैरों को पानी से धोना चाहिए। तब याजक को चाहिए कि वह पशु के सभी भागों को वेदी पर जलाएँ। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

14"यदि कोई व्यक्ति यहोवा को पक्षी की होमबलि चढ़ाए तो यह पक्षी फ़ाख्ता या नया कबूतर होना चाहिए। 15याजक भेंट को वेदी पर लाएगा। याजक पक्षी के सिर को अलग करेगा। तब याजक पक्षी को वेदी पर जलाएगा। पक्षी का खून वेदी की ओर बहना चाहिए। 16याजक को पक्षी के गले की थैली और उसके पंखों को वेदी के पूर्व की ओर फेंक देना चाहिए। यह वही जगह है जहाँ वे वेदी से निकालकर राख डालते हैं।

17तब याजक को पंख के पास से पक्षी को चीरना चाहिए, किन्तु पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटना चाहिए। याजक को वेदी के ऊपर आग पर रखी लकड़ी के ऊपर पक्षी को जलाना चाहिए। यह होमबलि है अर्थात् आग के द्वारा यहोवा को सुगन्ध से प्रसन्न करना।

अन्नबलि के नियम

2 "जब कोई व्यक्ति यहोवा को अन्नबलि चढ़ाये तो उसकी भेंट महीन आटे की होनी चाहिए। वह व्यक्ति उस आटे पर तेल डाले और उस पर लोबान रखे। 2तब वह इसे हारून के याजक पुत्रों के पास लाए। वह व्यक्ति तेल और लोबान से मिला हुआ एक मुट्ठी महीन आटा ले तब याजक वेदी पर स्मृतिभेंट के रूप में आटे को आग में जलाए। यह यहोवा के लिए सुगन्ध होगी 3और बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों के लिए होगी। यह भेंट यहोवा को आग से दी जाने वाली भेंटों में सबसे अधिक पवित्र होगी।

चूल्हे में पकी अन्नबलि के नियम

4"जब तुम चूल्हे में पकी अन्नबलि लाओ तो यह अखमीरी मैदे के फुलके या ऊपर से तेल डाली हुई अख़मीरी चपातियाँ होनी चाहिए। 5यदि तुम भूनने की कड़ाही से अन्नबलि लाते हो तो यह तेल मिली अख़मीरी महीन आटे की होनी चाहिए। 6तुम्हें इसे कई टुकड़े करके कई भागों में बाँटना चाहिए और इन पर तेल डालना चाहिए। यह अन्नबलि है। 7यदि तुम अन्नबलि तलने की कड़ाही से लाते हो तो यह तेल मिले महीन आटे की होनी चाहिए।

8“तुम इन चीज़ों से बनी अन्नबलि यहोवा के लिए लाओगे। तुम उन चीज़ों को याजक के पास ले जाओगे और वह उन्हें वेदी पर रखेगा। 9फिर उस अन्नबलि में से याजक इसका कुछ भाग लेकर उसे स्मृति भेंट के रूप में वेदी पर जलायेगा। यह आग द्वारा दी गई एक भेंट है। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होता है। 10बची हुई अन्नबलि हारून और उसके पुत्रों की होगी। यह भेंट यहोवा को आग से चढ़ाई जाने वाली भेंटों में अति पवित्र होगी।

11“तुम्हें यहोवा को ख़मीर वाली कोई अन्नबलि नहीं चढ़ानी चाहिए। तुम्हें यहोवा को, आग द्वारा भेंट के रूप में ख़मीर या शहद नहीं जलाना चाहिए। 12तुम पहली फ़सल से तैयार की गई खमीर या शहद यहोवा को भेंट के रूप में ला सकते हो, किन्तु खमीर और शहद मधुर गन्ध के रूप में ऊपर जाने के लिए वेदी पर जलाने नहीं चाहिए। 13तुम्हें अपनी लायी हुई हर एक अन्नबलि पर नमक भी रखना चाहिए। यहोवा से तुम्हारे वाचा के प्रतीक रूप, नमक का अभाव तुम्हारी किसी अन्नबलि में नहीं होना चाहिए। तुम्हें अपनी सभी भेंटों के साथ नमक लाना चाहिए।

पहली फ़सल से अन्नबलि के नियम

14“यदि तुम पहली फ़सल से यहोवा को अन्नबलि लाते हो तो तुम्हें भुनी हुई अन्न की बालें लानी चाहिए। इस अन्न को दलकर छोटे टुकड़ों में तोड़ा जाना चाहिए। इस पहली फ़सल से तुम्हारी अन्नबलि होगी। 15तुम्हें इस पर तेल डालना और लोबान रखना चाहिए। यह अन्नबलि है। 16याजक को चाहिए कि वह स्मृति भेंट के रूप में दले गए अन्न के कुछ भाग, तेल और इस पर रखे पूरे लोबान को जलाए। यह यहोवा को आग से चढ़ाई भेंट है।

मेलबलि के नियम

3 “यदि यह भेंट मेलबलि है और यह यहोवा को अपने पशुओं के झुण्ड से एक नर या मादा पशु देता है, तो इस पशु में कोई दोष नहीं होना चाहिए। 2 इस व्यक्ति को अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस व्यक्ति द्वारा उस पशु को मार डालना चाहिए। तब हारून के याजक पुत्रों को वेदी पर चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 3इस व्यक्ति को मेलबलि में से यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ानी चाहिए। भीतरी भागों को ढकने वाली और भीतरी भागों में रहने वाली चर्बी की भेंट चढ़ानी चाहिए। 4उस के दोनों गुर्दों पर की चर्बी और पुट्ठे* की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। गुर्दों के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी निकाल लेनी चाहिए। 5तब हारून के पुत्र चर्बी को वेदी पर जलाएंगे। वे आग पर रखी हुई लकड़ी, जिस पर होमबलि रखी गई, उसके ऊपर उसे रखेंगे। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करती है।

6“यदि व्यक्ति यहोवा के लिए अपनी रेवड़ में से मेलबलि के रूप में पशु को लाता है तब उसे एक नर या मादा पशु भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। 7यदि वह भेंट में एक मेमना लाता है तो उसे यहोवा के सामने लाना चाहिए। 8उसे अपना हाथ पशु के सिर पर रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। हारून के पुत्र वेदी पर चारों ओर पशु का खून डालेंगे। 9तब वह व्यक्ति मेलबलि का एक भाग यहोवा को आग द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाएगा। इस व्यक्ति को चर्बी और चर्बी से भरी सम्पूर्ण पूँछ और पशु के भीतरी भागों के ऊपर और चारों ओर की चर्बी लानी चाहिए। (उसे उस पूँछ को रीढ़ की हड्डी के एकदम पास से काटना चाहिए।)

10इस व्यक्ति को दोनों गुर्दे और इन्हें ढकने वाली चर्बी और पुट्ठे की चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे गुर्दों के साथ कलेजे को भी निकाल लेना चाहिए। 11तब याजक वेदी पर इस को जलाएगा। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट होगी तथा यह लोगों के लिए भी भोजन होगी।

मेलबलि के रूप में बकरे की बलि के नियम

12“यदि किसी व्यक्ति की भेंट एक बकरा है तो वह उसे यहोवा के सामने भेंट करे। 13इस व्यक्ति को बकरे के सिर पर हाथ रखना चाहिए और मिलापवाले तम्बू के सामने उसे मारना चाहिए। तब हारून के पुत्र बकरे का खून वेदी पर चारों ओर डालेंगे। 14तब व्यक्ति को बकरे का एक भाग यहोवा को अग्नि द्वारा भेंट के रूप में चढ़ाने के लिए लाना चाहिए। इस व्यक्ति को भीतरी भाग के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी की भेंट चढ़ानी चाहिए। 15उसे दोनों गुर्दे, उसे ढकने वाली चर्बी तथा पशु के पुट्ठे की चर्बी भेंट में चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे को ढकने वाली चर्बी चढ़ानी चाहिए। उसे कलेजे के साथ गुर्दे को निकाल लेना चाहिए। 16याजक को वेदी पर बकरे के भागों को जलाना चाहिए। यह यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट तथा याजक का भोजन होगा। इसकी सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करती है। (लेकिन सारा उत्तम भाग यहोवा का है।) 17यह नियम तुम्हारी सभी पीढ़ियों में सदा चलता रहेगा। तुम जहाँ कहीं भी रहो, तुम्हें खून या चर्बी नहीं खानी चाहिए।”

पुट्ठे पशु की पसली के पिछली से लेकर उसकी पिछली टाँगों तक का भाग।

संयोगवश हुए पापों के लिए पापबलि के नियम

4 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“इस्राएल के लोगों से
कहो: यदि किसी व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसा
पाप हो जाए जिसे यहोवा ने न करने का आदेश दिया
है तो उस व्यक्ति को निम्न बातें करनी चाहिए:

3“यदि अभिषिक्त याजक से कोई ऐसा पाप हुआ हो
जिसका बुरा असर लोगों पर पड़ा हो तो उसे अपने किए
गए पाप के लिये यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए : उसे
एक बछड़ा यहोवा को भेंट में देना चाहिए जिसमें कोई
दोष न हो। उसे यहोवा को बछड़ा पापबलि के रूप में
चढ़ाना चाहिए। 4अभिषिक्त याजक को उस बछड़े को
परमेश्वर के सामने मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना
चाहिए। उसे अपना हाथ उस बछड़े के सिर पर रखना
चाहिए और यहोवा के सामने उसे मार देना चाहिए।
5तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ खून लेना
चाहिए और मिलापवाले तम्बू में ले जाना चाहिए।
6याजक को अपनी उँगलियाँ खून में डालनी चाहिए
और महापवित्र स्थान के पर्दे के सामने खून को सात
बार परमेश्वर के सामने छिड़कना चाहिए। 7याजक को
कुछ खून सुगन्धित धूप की वेदी के सिरे पर लगाना
चाहिए। यह वेदी यहोवा के सामने मिलापवाले तम्बू में
है। याजक को बछड़े का सारा ख़ून होमबलि की वेदी
की नींव पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू
के द्वार पर है।) 8और उसे पापबलि किए गए बछड़े की
सारी चर्बी को निकाल लेना चाहिए। उसे भीतरी भागों
के ऊपर और उसके चारों ओर की चर्बी को निकाल
लेनी चाहिए। 9उसे दोनों गुर्दे, उसके ऊपर की चर्बी
और पुट्ठे पर की चर्बी ले लेनी चाहिए। उसे कलेजे को
ढकने वाली चर्बी भी लेनी चाहिये और उसे कलेजे को
गुर्दे के साथ निकाल लेना चाहिए। 10याजक को ये चीज़ें
ठीक उसी तरह लेनी चाहिए जिस प्रकार उसने ये चीज़ें
मेलबलि के बछड़े से ली थी।* याजक को होमबलि
की वेदी पर पशु के भागों को जलाना चाहिए।
11-12किन्तु याजक को बछड़े का चमड़ा, सिर सहित
इसका सारा माँस, पैर, भीतरी भाग और शरीर का
बेकार भाग निकाल लेना चाहिए। याजक को डेरे के
बाहर विशेष स्थान पर बछड़े के पूरे शरीर को ले जाना
चाहिए जहाँ राख डाली जाती है। याजक को वहाँ लकड़ी
की आग पर बछड़े को जलाना चाहिए। बछड़े को वहाँ
जलाया जाना चाहिए जहाँ राख डाली जाती है।

13“ऐसा हो सकता है कि पूरे इस्राएल राष्ट्र से अनजाने
में कोई ऐसा पाप हो जाए जिसे न करने का आदेश
परमेश्वर ने दिया है। यदि ऐसा होता है तो वे दोषी होंगे।
14यदि उन्हें इस पाप का पता चलता है तो पूरे राष्ट्र के
लिए एक बछड़ा पापबलि के रूप में चढ़ाया जाना चाहिए।
उन्हें बछड़े को मिलापवाले तम्बू के सामने लाना चाहिए।
15बुजुर्गों को यहोवा के सामने बछड़े के सिर पर अपने
हाथ रखने चाहिए। यहोवा के सामने बछड़े को मारना
चाहिए। 16तब अभिषिक्त याजक को बछड़े का कुछ
खून मिलापवाले तम्बू में लाना चाहिए। 17याजक को
अपनी उँगलियाँ खून में डुबानी चाहिए और पर्दे के
सामने सात बार खून को यहोवा के सामने छिड़कना
चाहिए। 18तब याजक को कुछ खून वेदी के सिरे के
सींगों पर डालना चाहिए। (वह वेदी मिलापवाले तम्बू में
यहोवा के सामने है।) याजक को सारा खून होमबलि
की वेदी की नींव पर डालना चाहिए। वह वेदी मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर है।

19“तब याजक को पशु की सारी चर्बी निकाल लेनी
चाहिए और उसे वेदी पर जलाना चाहिए। 20वह बछड़े
के साथ वैसा ही करेगा जैसा उसने पापबलि के रूप में
चढ़ाये गये बछड़े के साथ किया था। इस प्रकार याजक
लोगों के पाप का भुगतान करता है, इससे यहोवा
इस्राएल के लोगों को क्षमा कर देगा। 21याजक डेरे के
बाहर बछड़े को ले जाएगा और उसे वहाँ जलाएगा। यह
पहले के समान होगा। यह पूरे समाज के लिये पापबलि
होगी।

22“हो सकता है किसी शासक से संयोगवश, कोई
ऐसी बात हो जाए जिसे उसके परमेश्वर यहोवा ने न
करने का आदेश दिया है, तो यह शासक दोषी होगा।
23यदि उसे इस पाप का पता चलता है तब उसे एक ऐसा
बकरा लाना चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। यही उसकी
भेंट होगी। 24शासक को बकरे के सिर पर हाथ रखना
चाहिए और उसे उस स्थान पर मारना चाहिए जहाँ वे
होमबलि को यहोवा के सामने मारते हैं। बकरा पापबलि
है। 25याजक को पापबलि का कुछ खून अपनी उँगली
पर लेना चाहिए। याजक होमबलि की वेदी के सिरे पर
खून छिड़केगा। याजक को बाकी खून होमबलि की
वेदी की नींव पर डालना चाहिए 26और याजक को
बकरे की सारी चर्बी वेदी पर जलानी चाहिए। इसे उसी
प्रकार जलाना चाहिए जिस प्रकार वह मेलबलि की
चर्बी को जलाता है। इस प्रकार याजक शासक के पाप
का भुगतान करता है और यहोवा शासक को क्षमा
करेगा।

27“हो सकता है कि साधारण जनता में से किसी
व्यक्ति से संयोगवश कोई ऐसी बात हो जाए जिसे
यहोवा ने न करने का आदेश दिया है। 28यदि उस
व्यक्ति को अपने पाप का पता चले तो वह एक बकरी
लाए जिसमें कोई दोष न हो। यह उस व्यक्ति की भेंट
होगी। वह इस बकरी को उस पाप के लिए लाए जो
उसने किया है। 29उसे अपना हाथ पशु के सिर पर
रखना चाहिए और होमबलि के स्थान पर उसे मारना
चाहिए। 30तब याजक को उस बकरी का कुछ खून

जिस प्रकार ... ली थी देखें लैव्यव्यवस्था 3:1–5

अपनी उँगली पर लेना चाहिए और होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। याजक को वेदी की नींव पर बकरी का सारा खून उँडेलना चाहिए। 31तब याजक को बकरी की सारी चर्बी उसी प्रकार निकालनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि से चर्बी निकाली जाती है। याजक को इसे यहोवा के लिये सुगन्धित धूप की वेदी पर जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान कर देगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा।

32“यदि यह व्यक्ति पापबलि के रूप में एक मेमने को लाता है तो उसे एक मादा मेमना लानी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। 33व्यक्ति को उसके सिर पर हाथ रखना चाहिए और उसे उस स्थान पर पापबलि के रूप मे मारना चाहिए जहाँ वे होमबलि के पशु को मारते हैं। 34याजक को अपनी उँगली पर पापबलि का खून लेना चाहिए और इसे होमबलि की वेदी के सिरे पर डालना चाहिए। तब उसे मेमने के सारे खून को वेदी की नींव पर उँड़ेलना चाहिए। 35याजक को मेमने की सारी चर्बी उसी प्रकार लेनी चाहिए जिस प्रकार मेलबलि के मेमने की चर्बी ली जाती है। याजक को यहोवा के लिए आग द्वारा दी जाने वाली भेंटों के समान ही वेदी पर इन टुकड़ों को जलाना चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा कर देगा।

असावधानी में किए गए विभिन्न अपराध

5 “यदि कोई व्यक्ति न्यायालय में गवाही देने के लिए बुलाया जाता है और जो कुछ उसने देखा है या सुना है, उसे नहीं बताता तो वह पाप करता है। उसे उसके अपराध के लिए अवश्य ही दण्ड भोगना होगा। 2अथवा कोई व्यक्ति किसी ऐसी चीज़ को छूता है जो अशुद्ध है जैसे अशुद्ध जंगली जानवर का शव या अशुद्ध मवेशी का शव अथवा रेंगने वाले किसी अशुद्ध जन्तु का शव और उस व्यक्ति को इसका पता भी नहीं चलता कि उसने उन चीज़ों को छुआ है, तो भी वह बुरा करने का दोषी होगा। 3किसी भी व्यक्ति से बहुत सी ऐसी चीज़ें निकलती है जो शुद्ध नहीं होतीं। कोई व्यक्ति इनमें से दूसरे व्यक्ति की किसी भी अशुद्ध वस्तु को अनजाने में ही छू लेता है तब वह दोषी होगा। 4अथवा ऐसा हो सकता है कि कोई व्यक्ति अच्छा या बुरा करने का जल्दी में वचन दे देता है। लोग बहुत प्रकार के वचन जल्दी में दे देते हैं। यदि कोई व्यक्ति ऐसा वचन दे देता है और उसे भूल जाता है तो वह अपराधी है और जब उसे अपना वचन याद आता है तब भी वह अपराधी है। 5अत:, यदि वह इनमें से किसी का दोषी है तो उसे अपनी बुराई स्वीकार करनी चाहिए। 6उसे परमेश्वर को अपने किए हुए पाप के लिए दोषबलि लानी चाहिए। उसे दोषबलि के रूप में अपनी रेवड़ से एक मादा जानवर लाना चाहिए। यह मेमना या बकरी हो सकता है। तब याजक वह कार्य करेगा जिससे उस व्यक्ति के पाप का भुगतान होगा।

7“यदि कोई व्यक्ति मेमना भेंट करने में असमर्थ है तो उसे दो फ़ाख्ता या कबूतर के दो बच्चे यहोवा को भेंट में देना चाहिए। यह उसके पाप के लिए दोषबलि होगी। एक पक्षी दोषबलि के लिए होना चाहिए तथा दूसरा होमबलि के लिए होना चाहिए। 8उस व्यक्ति को चाहिए कि वह उन पक्षियों को याजक के पास लाए। पहले याजक को दोषबलि के रूप में एक पक्षी को चढ़ाना चाहिए। याजक पक्षी की गर्दन को मोड़ देगा। किन्तु याजक पक्षी को दो भागों में नहीं बाँटेगा। 9तब याजक को दोषबलि के खून को वेदी के सिरों पर डालना चाहिए। तब याजक को बचा हुआ खून वेदी की नींव पर डालना चाहिए। यह दोषबलि है। 10तब याजक को नियम के अनुसार होमबलि के रूप में दूसरे पक्षी की भेंट चढ़ानी चाहिए। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के अपराधों का भुगतान देगा। और परमेश्वर उस व्यक्ति को क्षमा करेगा।

11“यदि कोई व्यक्ति दो फ़ाख़्ता या दो कबूतर भेंट चढ़ाने में असमर्थ हो तो उसे एपा का दसवाँ भाग* महीन आटा लाना चाहिए। यह उसकी दोषबलि होगी। उस व्यक्ति को आटे पर तेल नहीं डालना चाहिए। उसे इस पर लोबान नहीं रखना चाहिए क्योंकि यह दोषबलि है। 12व्यक्ति को आटा याजक के पास लाना चाहिए। याजक इसमें से मुट्ठी भर आटा निकालेगा। यह स्मृति भेंट होगी। याजक यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट पर वेदी के ऊपर आटे को जलाएगा। यह दोषबलि है। 13इस प्रकार याजक व्यक्ति के अपराधों के लिए भुगतान करेगा और यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। बची हुई दोषबलि याजक की वैसे ही होगी जैसे अन्नबलि होती है।”

14यहोवा ने मूसा से कहा, 15“कोई व्यक्ति यहोवा की पवित्र वस्तुओं* के प्रति अकस्मात् कोई गलती कर सकता है। तो उस व्यक्ति को एक दोष रहित मेढ़ा लाना चाहिए। यह मेढ़ा यहोवा के लिए उसकी दोषबलि होगी। तुम्हें उस मेढ़े का मूल्य निर्धारित करने के लिए अधिकृत मानक का प्रयोग करना चाहिए। 16उस व्यक्ति को पवित्र चीज़ों के विपरीत किये गये पाप के लिए भुगतान अवश्य करना चाहिए। जिन चीज़ों का उसने वायदा किया है, वे अवश्य देनी चाहिए। उसे मूल्य में पाँचवाँ भाग जोड़ना चाहिए। उसे यह धन याजक को देना

एपा का दसवां भाग अर्थात् लगभग बराबर दो लीटर।

यहोवा की पवित्र वस्तुओं ये संभवत: विशेष भेंटे हैं जिन्हें व्यक्ति चढ़ाने का वचन देता है।

चाहिए। इस प्रकार याजक दोषबलि के मेढ़े द्वारा उस
व्यक्ति के पाप को धोएगा और यहोवा उसके पाप को
क्षमा करेगा।

17"यदि कोई व्यक्ति पाप करता है और जिन चीज़ों
को न करने का आदेश यहोवा ने दिया है, उन्हें करता
है तो इस बात का कोई महत्व नहीं कि वह इसे नहीं
जानता। वह व्यक्ति अपराधी है और उसे अपने पाप का
फल भोगना होगा। 18उस व्यक्ति को एक निर्दोष मेढ़ा
अपनी रेवड़ से याजक के पास लाना चाहिए। मेढ़ा
दोषबलि होगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के उस
पाप का भुगतान करेगा जिसे उसने अनजाने में किया।
यहोवा उस व्यक्ति को क्षमा करेगा। 19व्यक्ति अपराधी ह
चाहे वह यह न जानता हो कि वह पाप कर रहा है।
इसलिए उसे यहोवा को दोषबलि देनी होगी।"

बेईमान लोगों की दोषबलि

6 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"कोई व्यक्ति यहोवा के
प्रति इनमें से किसी एक को करके अपराध
कर सकता है: वह किसी अन्य के लिए जिसकी वह
देखभाल कर रहा हो, उसे कुछ होने के बारे में झूठ
बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति अपने दिए वचन*
के बारे में झूठ बोल सकता है, अथवा कोई व्यक्ति
कुछ चुरा सकता है, या कोई व्यक्ति किसी को ठग
सकता है, 3अथवा किसी को कोई खोई चीज़ मिले
और तब वह उसके विषय में झूठ बोल सकता है या
कोई व्यक्ति कुछ करने का वचन दे सकता है और तब
अपने दिए गए वचन को पूरा नहीं करता है, अथवा
कोई कुछ अन्य बुरा कर सकता है। 4यदि कोई
व्यक्ति इनमें से किसी को करता है तो वह पाप
करने का दोषी है। उस व्यक्ति को जो कुछ उसने
चुराया हो या ठगकर जो कुछ लिया हो या किसी व्यक्ति
के कहने से उसकी धरोहर के रूप में जो रखा हो, या
किसी का खोया हुआ पाकर उसके बारे में झूठ बोला
हो 5या जिस किसी के बारे में झूठा वचन दिया हो, वह
उसे लौटाना चाहिए। उसे पूरा मूल्य चुकाना चाहिए
और तब उसे वस्तु के मूल्य का पाँचवाँ हिस्सा
अतिरिक्त देना चाहिए। उसे असली मालिक को धन
देना चाहिए। उसे यह उसी दिन करना चाहिए जिस दिन
वह दोषबलि लाए।

6"उस व्यक्ति को दोषबलि याजक के पास लाना
चाहिए। यह रेवड़ से एक मेढ़ा होना चाहिए। मेढ़े में कोई
दोष नहीं होना चाहिए। यह उसी मूल्य का होना चाहिए
जो याजक कहे। यह यहोवा को दी गई दोषबलि होगी।
7तब याजक यहोवा के पास जाएगा और उस व्यक्ति के
उन पापों के लिए भुगतान करेगा जिनका वह अपराधी
है, और यहोवा उस व्यक्ति को उन सभी पापों के लिए
क्षमा करेगा जिन्होंने उसे अपराधी बनाया।"

होमबलि

8यहोवा ने मूसा से कहा, 9"हारून और उसके पुत्रों
को यह आदेश दो: यह होमबलि का नियम है। होमबलि
को वेदी के अग्नि कुण्ड में पूरी रात सवेरा होने तक
रखना चाहिए। वेदी की आग को वेदी पर जलती रहनी
चाहिए। 10याजक को सन के उत्तम रेशों के बने वस्त्र
पहनने चाहिए। उसे अपने शरीर से चिपका सन का
अर्न्तवस्त्र पहनना चाहिए। तब याजक को वेदी पर
होमबलि पर जलने के बाद बची हुई राख को उठाना
चाहिए। याजक को वेदी की एक ओर राख को रखना
चाहिए। 11तब याजक को अपने वस्त्रों को उतारना
चाहिए और अन्य वस्त्र पहनने चाहिए। तब उसे डेरे से
बाहर स्वच्छ स्थान पर राख ले जानी चाहिए। 12किन्तु
वेदी की आग वेदी में जलती रहनी चाहिए। इसे बुझने
नहीं देना चाहिए। याजक को हर सुबह वेदी पर लकड़ी
जलानी चाहिए। उसे वेदी पर लकड़ी रखनी चाहिए। उसे
मेलबलि की चर्बी जलानी चाहिए। 13वेदी पर आग लगातार
जलती रहनी चाहिए। यह बुझनी नहीं चाहिए।

अन्नबलि

14"अन्नबलि का यह नियम है कि: हारून के पुत्रों
को वेदी के सामने यहोवा के लिए इसे लाना चाहिए।
15याजक को अन्नबलि में से मुट्ठी भर उत्तम आटा
लेना चाहिए। तेल और लोबान अन्नबलि पर अवश्य
होना चाहिए। याजक को अन्नबलि को वेदी पर जलाना
चाहिए। यह यहोवा को एक सुगन्धित और स्मृति भेंट
होगी।

16"हारून और उसके पुत्रों को बची हुई अन्नबलि
को खाना चाहिए। अन्नबलि एक प्रकार की अख़मीरी
रोटी की भेंट है। याजक को इस रोटी को पवित्र स्थान
में खाना चाहिए। उन्हें मिलापवाले तम्बू के आँगन में
अन्नबलि खानी चाहिए। 17अन्नबलि खमीर के साथ
नहीं पकाई जानी चाहिए। मुझको (यहोवा को) आग
द्वारा दी जाने वाली बलि में से उनके (याजकों के) भाग
के रूप में मैंने इसे दिया है। यह पापबलि तथा दोषबलि
के समान अत्यन्त पवित्र है। 18हारून की सन्तानों में से
हर एक लड़का आग द्वारा यहोवा को चढ़ाई गई भेंट में
से खा सकता है। यह तुम्हारी पीढ़ियों का सदा के
लिए नियम है। इन बलियों का स्पर्श उन व्यक्तियों को
पवित्र करता है।"*

अपने दिए वचन "बन्धक सा सुरक्षा धन" यह ऐसा कुछ है जिसे तुम किसी व्यक्ति को इस बात के प्रमाण के रूप में देते हो कि तुम उससे कुछ अधिक महत्वपूर्ण करोगे।

इन... करता है इसका अनुवाद इस प्रकार भी किया जा सकता है: इन्हें जो कोई छुए उसे पहले पवित्र (शुद्ध) हो लेना चाहिए।

याजकों की अन्नबलि

19यहोवा ने मूसा से कहा, 20"हारून तथा उसके पुत्रों को जो बलि यहोवा को लानी चाहिए, वह यह है। उन्हें यह उस दिन करना चाहिए जिस दिन हारून का अभिषेक हुआ है। उन्हें सदा दो क्वार्ट* उत्तम महीन आटा अन्नबलि के लिए लेना चाहिए। उन्हें इसका आधा प्रात:काल तथा आधा सन्ध्या काल में लाना चाहिए। 21उत्तम महीन आटे में तेल मिलाना चाहिए और उसे कड़ाही में भूनना चाहिए। जब यह भुन जाए तब इसे अन्दर लाना चाहिए। तुम्हें अन्नबलि का चूरमा बना लेना चाहिए। इस की सुगन्ध यहोवा को प्रसन्न करेगी।

22'हारून के वंश में से वह याजक जिसका हारून के स्थान पर अभिषेक हो, यहोवा को यह अन्नबलि चढ़ाए। यह नियम सदा के लिये है। यहोवा के लिए अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। 23याजक की हर एक अन्नबलि पूरी तरह जलाई जानी चाहिए। इसे खाना नहीं चाहिए।"

पापबलि के नियम

24यहोवा ने मूसा से कहा, 25"हारून और उसके पुत्रों से कहो: पापबलि के लिए यह नियम है कि पापबलि को भी वहीं मारा जाना चाहिए जहाँ यहोवा के सामने होमबलि को मारा जाता है। यह अत्यन्त पवित्र है। 26उस याजक को इसे खाना चाहिए, जो पापबलि चढ़ाता है। उसे पवित्र स्थान पर मिलापवाले तम्बू के आँगन में इसे खाना चाहिए। 27पापबलि के माँस का स्पर्श किसी भी व्यक्ति को पवित्र करता है। यदि छिड़का हुआ खून किसी के वस्त्रों पर पड़ता है तो उन वस्त्रों को धो दिया जाना चाहिए। तुम्हें उन वस्त्रों को एक निश्चित, पवित्र स्थान में धोना चाहिए। 28यदि पापबलि किसी मिट्टी के बर्तन में उबाली जाए तो उस बर्तन को फोड़ देना चाहिए। यदि पापबलि को काँसे के बर्तन में उबाला जाय तो बर्तन को माँजा जाए और पानी में धोया जाए।

29"परिवार का प्रत्येक पुरुष सदस्य याजक, पापबलि को खा सकता है। यह अत्यन्त पवित्र है। 30किन्तु यदि पापबलि का खून पवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए मिलापवाले तम्बू में ले जाया गया हो तो पापबलि को आग में जला देना चाहिए। याजक उस पापबलि को नहीं खा सकते।

दोषबलि

7 "दोषबलि के लिए यह नियम है। यह अत्यन्त पवित्र है। 2याजक को दोषबलि को उसी स्थान पर मारना चाहिए जिस पर वह होमबलियों को मारता है। याजक को दोषबलि में से वेदी के चारों ओर खून छिड़कना चाहिए। 3याजक को दोषबलि की सारी चर्बी चढ़ानी चाहिए। उसे चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, 4दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी, पुट्ठो की चर्बी, और कलेजे की चर्बी चढ़ानी चाहिए। 5याजक को वेदी पर उन सभी चीज़ों को जलाना चाहिए। ये यहोवा को आग द्वारा दी गई बलि होगी। यह दोषबलि है।

6"हर एक पुरुष जो याजक है, दोषबलि खा सकता है। यह बहुत पवित्र है। अत: इसे एक निश्चित पवित्र स्थान में खाना चाहिए। 7दोषबलि पापबलि के समान है। दोनों के लिए एक जैसे नियम हैं। वह याजक, जो बलि चढ़ाता है, उसको वह प्राप्त करेगा। 8वह याजक जो बलि चढ़ाता है चमड़ा भी होमबलि से ले सकता है। 9हर एक अन्नबलि चढ़ाने वाले याजक की होती है। याजक उन अन्नबलियों को लेगा जो चूल्हे में पकी हों, या कड़ाही में पकी हों या तवे पर पकी हों। 10अन्नबलि हारून के पुत्रों की होगी। उससे कोई अन्तर नहीं पड़ेगा कि वे सूखी अथवा तेल मिली हैं। हारून के पुत्र याजक समान भागीदार होंगे।

मेलबलि

11"ये मेलबलि के नियम हैं, जिसे कोई व्यक्ति यहोवा को चढ़ाता है: 12कोई व्यक्ति मेलबलि अपनी कृतज्ञता प्रकट करने के लिए ला सकता है। यदि वह कृतज्ञता प्रकट करने के लिए बलि लाता है तो उसे तेल मिले अखमीरी फुलके, अखमीरी चपातियाँ और तेल मिले उत्तम आटे के फुलके भी लाने चाहिए।13उस व्यक्ति को अपनी मेलबलि के लिए खमीरी रोटियों के साथ अपनी बलि लानी चाहिए। यह वह बलि है जिसे कोई व्यक्ति यहोवा के प्रति कृतज्ञता दर्शाने के लिए लाता है। 14उन रोटियों में से एक उस याजक की होगी जो मेलबलि के खून को छिड़कता है। 15इस मेलबलि का माँस उसी दिन खाया जाना चाहिए जिस दिन यह चढ़ाया जाए। कोई व्यक्ति परमेश्वर के प्रति कृतज्ञता प्रकट करने के लिए यह भेंट चढ़ाता है। किन्तु कुछ भी माँस अगले दिन के लिए नहीं बचना चाहिए।

16"कोई व्यक्ति मेलबलि यहोवा को केवल भेंट चढ़ाने की इच्छा से ला सकता है अथवा सम्भवत: उस व्यक्ति ने यहोवा को विशेष वचन दिया हो। यदि यह सत्य है तो बलि उसी दिन खायी जानी चाहिए जिस दिन वह उसे चढ़ाये। यदि कुछ बच जाए तो उसे अगले दिन खा लेना चाहिए। 17किन्तु यदि इस बलि का कुछ माँस फिर भी तीसरे दिन के लिए बच जाए तो उसे आग में जला दिया जाना चाहिए। 18यदि कोई व्यक्ति मेलबलि का माँस तीसरे दिन खाता है तो यहोवा उस व्यक्ति से प्रसन्न नहीं होगा। यहोवा उस बलि को उसके लिए महत्व नहीं देगा। यह बलि घृणित वस्तु बन जाएगी और यदि कोई व्यक्ति

दो क्वार्ट "1/10 एपा।"

उस माँस का कुछ भी खाता है तो वह अपने पाप के
लिए उत्तरदायी होगा।

19"लोगों को ऐसा माँस भी नहीं खाना चाहिए जिसे
कोई अशुद्ध वस्तु छू ले। उन्हें इस माँस को आग में
जला देना चाहिए। वे सभी व्यक्ति जो शुद्ध हों, मेलबलि
का माँस खा सकते हैं। 20किन्तु यदि कोई व्यक्ति अपवित्र
हो और यहोवा के लिए मेलबलि में से कुछ माँस खा ले
तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर देना
चाहिए।

21"सम्भव है कि कोई व्यक्ति कोई ऐसी चीज़ छू ले
जो अशुद्ध है। यह चीज़ लोगों द्वारा या गन्दे जानवर द्वारा
या किसी घृणित गन्दी चीज़ द्वारा अशुद्ध बनाई जा सकती
है। वह व्यक्ति अशुद्ध हो जाएगा और यदि वह यहोवा
के लिए मेलबलि से कुछ माँस खा ले तो उस व्यक्ति को
उसके लोगों से अलग कर देना चाहिए।"

22यहोवा ने मूसा से कहा, 23"इस्राएल के लोगों से
कहो: तुम लोगों को गाय, भेड़ और बकरी की चर्बी
नहीं खानी चाहिए। 24तुम उस जानवर की चर्बी का
प्रयोग कर सकते हो जो स्वत: मरा हो या अन्य जानवरों
द्वारा फाड़ दिया गया हो। किन्तु तुम उस जानवर को
कभी नहीं खाना। 25यदि कोई व्यक्ति उस जानवर की
चर्बी खाता है जो यहोवा को आग द्वारा भेंट चढ़ाया गया
हो तो उस व्यक्ति को उस के लोगों से अलग कर दिया
जाना चाहिए। 26तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हें किसी पक्षी
या जानवर का खून कभी नहीं खाना चाहिए। 27यदि
कोई व्यक्ति कुछ खून खाता है तो उस व्यक्ति को उस
के लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।"

उत्तोलन बलि के नियम

28यहोवा ने मूसा से कहा, 29"इस्राएल के लोगों से
कहो: यदि कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि लाए तो उस
व्यक्ति को उस भेंट का एक भाग यहोवा को देना
चाहिए। 30भेंट का वह भाग आग में जलाया जाएगा। उसे
उस भेंट का वह भाग अपने हाथ में लेकर चलना
चाहिए। उसे जानवर की छाती की चर्बी लेकर चलना
चाहिए और छाती को याजक के पास ले जाना चाहिए।
छाती को यहोवा के सामने ऊपर उठाया जायेगा। यह
उत्तोलन बलि होगी। 31तब याजक को वेदी पर चर्बी
जलानी चाहिए। किन्तु जानवर की छाती हारून और
उसके पुत्रों की होगी। 32मेलबलि से दायीं जांघ हारून
के पुत्रों में से याजक को देनी चाहिये। 33मेलबलि में से
दायीं जांघ उस याजक की होगी जो मेलबलि की चर्बी
और खून चढ़ाता है। 34मैं (यहोवा) उत्तोलन बलि की
छाती तथा मेलबलि की दायीं जांघ इस्राएल के लोगों से
ले रहा हूँ और मैं उन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों
को दे रहा हूँ। इस्राएल के लोगों के लिए यह नियम सदा
के लिए होगा।"

35यहोवा को आग द्वारा दी गई भेंट हारून और
उसके पुत्रों की है, जब कभी हारून और उसके पुत्र
यहोवा के याजक के रूप में सेवा करते हैं तब वे बलि
का वह भाग पाते हैं। 36जिस समय यहोवा ने याजकों
का अभिषेक किया उसी समय उन्होंने इस्राएल के
लोगों को वे भाग याजकों को देने का आदेश दिया। वे
भाग सदा उनकी पीढ़ी याजकों को दिए जाने हैं।

37ये होमबलि, अन्नबलि, पापबलि, दोषबलि, याजकों
की नियुक्ति, और मेलबलि के नियम हैं। 38यहोवा ने
सीनै पर्वत पर ये नियम मूसा को दिए। यहोवा ने ये
नियम उस दिन दिए जिस दिन उसने इस्राएल के लोगों
को सीनै मरुभूमि में यहोवा के लिए अपनी भेंट लाने
का आदेश दिया था।

मूसा हारून और उसके पुत्रों को उपासना के लिए पवित्र करता है

8 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून और उसके साथ
उसके पुत्रों, उनके वस्त्र, अभिषेक का तेल, पापबलि
का बैल, दो भेड़ें और अखमीरी मैदे के फुलके की
टोकरी लो, 3तब मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लोगों को
एक साथ लाओ।"

4मूसा ने वही किया जो यहोवा ने उसे आदेश दिया।
लोग मिलापवाले तम्बू के द्वार पर एक साथ मिले। 5तब
मूसा ने लोगों से कहा, "यह वही है जिसे करने का
आदेश यहोवा ने दिया है।"

6तब मूसा, हारून और उसके पुत्रों को लाया। उसने
उन्हें पानी से नहलाया। 7तब मूसा ने हारून को अन्त:वस्त्र
पहनाया। मूसा ने हारून के चारों ओर एक पेटी बाँधी।
तब मूसा ने हारून को बाहरी लबादा पहनाया। इसके
ऊपर मूसा ने हारून को चोगा पहनाया और उस पर
एपोद पहनाई, फिर उस पर सुन्दर पटुका बाँधा। 8तब
मूसा ने न्याय की थैली की जेब में ऊरीम और तुम्मीम
रखा। 9मूसा ने हारून के सिर पर पगड़ी भी बाँधी। मूसा
ने इस पगड़ी के अगले भाग पर सोने की पट्टी बांधी।
यह सोने की पट्टी पवित्र मुकुट के समान है। मूसा ने
यह यहोवा के आदेश के अनुसार किया।

10तब मूसा ने अभिषेक का तेल लिया और पवित्र
तम्बू तथा इसमें की सभी चीज़ों पर छिड़का। इस प्रकार
मूसा ने उन्हें पवित्र किया। 11मूसा ने अभिषेक का कुछ
तेल वेदी पर सात बार छिड़का। मूसा ने वेदी, उसके
उपकरणों और तश्तरियों का अभिषेक किया। मूसा ने
बड़ी चिलमची और उसके आधार पर भी अभिषेक का
तेल छिड़का। इस प्रकार मूसा ने उन्हें पवित्र किया।
12तब मूसा ने अभिषेक के कुछ तेल को हारून के
सिर पर डाला। इस प्रकार उसने हारून को पवित्र
किया। 13तब मूसा हारून के पुत्रों को लाया और उन्हें
विशेष वस्त्र पहनाए। उसने उन्हें पटुके पेटियाँ बाँधे। तब

उसने उन के सिर पर पगड़ियाँ बाँधी। मूसा ने ये सब वैसे ही किया जैसे यहोवा ने आदेश दिया था।

14तब मूसा पापबलि के बैल को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथों को पापबलि के बैल के सिर पर रखा। 15तब मूसा ने बैल को मारा। मूसा ने उसके खून को लिया। मूसा ने अपनी उँगली का उपयोग किया और कुछ खून वेदी पर के सभी कोनों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने वेदी को बलि के लिए शुद्ध किया। तब मूसा ने वेदी की नींव पर खून को उँडेला। इस प्रकार मूसा ने वेदी को लोगों के पापों के भुगतान के लिए पाप बलियों के लिए तैयार किया। 16मूसा ने बैल के भीतरी भागों से सारी चर्बी ली। मूसा ने दोनों गुर्दे और उनके ऊपर की चर्बी के साथ कलेजे को ढकने वाली चर्बी ली। तब उसने उन्हें वेदी पर जलाया। 17किन्तु मूसा बैल के चमड़े, उसके माँस और शरीर के व्यर्थ भीतरी भाग को डेरे के बाहर ले गया। मूसा ने डेरे के बाहर आग में उन चीज़ों को जलाया। मूसा ने ये सब वैसा ही किया जैसा यहोवा ने आदेश दिया था।

18मूसा होमबलि के मेढ़े को लाया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। 19तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने वेदी के चारों ओर खून छिड़का। 20-21मूसा ने मेढ़े को टुकड़ों में काटा। मूसा ने भीतरी भागों और पैरों को पानी से धोया। तब मूसा ने पूरे मेढ़े को वेदी पर जलाया। मूसा ने उसका सिर, टुकड़े और चर्बी को जलाया। यह आग द्वारा होमबलि थी। यह यहोवा के लिए सुगन्ध थी। मूसा ने यहोवा के आदेश के अनुसार वे सब काम किए।

22तब मूसा दूसरे मेढ़े को लाया। इस मेढ़े का उपयोग हारून और उसके पुत्रों को याजक बनाने के लिए किया गया। हारून और उसके पुत्रों ने अपने हाथ मेढ़े के सिर पर रखे। 23तब मूसा ने मेढ़े को मारा। उसने इसका कुछ खून हारून के कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और हारून के दाएं पैर के अंगूठे पर लगाया। 24तब मूसा हारून के पुत्रों को वेदी के पास लाया। मूसा ने कुछ खून उनके दाएं कान के निचले सिरे पर, दाएं हाथ के अंगूठे पर और उनके दाएं पैर के अंगूठों पर लगाया। तब मूसा ने वेदी के चारों ओर खून डाला। 25मूसा ने चर्बी, चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भाग की सारी चर्बी, कलेजे को ढकने वाली चर्बी, दोनों गुर्दे और उनकी चर्बी और दायीं जाँघ को लिया। 26एक टोकरी अखमीरी मैदे के फुलके हर एक दिन यहोवा के सामने रखी जाती हैं। मूसा ने उन फुलकियों में से एक रोटी, और एक तेल से सनी फुलकी, और एक अखमीरी चपाती ली। मूसा ने उन फुलकियों के टुकड़ों को चर्बी तथा मेढ़े की दायीं जाँघ पर रखा। 27तब मूसा ने उन सभी को हारून और उसके पुत्रों के हाथों में रखा। मूसा ने उन टुकड़ों को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में हाथों में ऊपर उठवाया। 28तब मूसा ने इन चीज़ों को हारून और उसके पुत्रों के हाथों से लिया। मूसा ने उन्हें वेदी पर होमबलि के ऊपर जलाया। इस प्रकार वह बलि हारून और उसके पुत्रों को याजक नियुक्त करने के लिए थी। यह आग द्वारा दी गई बलि थी। यह यहोवा को प्रसन्न करने के लिए सुगन्ध थी। 29तब मूसा ने उस मेढ़े की छाती को लिया और यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए ऊपर उठवाया। याजकों को नियुक्त करने के लिए यह मूसा के हिस्से का मेढ़ा था। यह ठीक वैसा ही था जैसा यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था। 30मूसा ने अभिषेक का कुछ तेल और वेदी पर का कुछ खून लिया। मूसा ने उस में से थोड़ा हारून और उसके वस्त्रों पर छिड़का और कुछ हारून के उन पुत्रों पर जो उसके साथ थे और कुछ उनके वस्त्रों पर छिड़का। इस प्रकार मूसा ने हारून, उसके वस्त्रों, उसके पुत्रों और उनके वस्त्रों को पवित्र बनाया।

31तब मूसा ने हारून और उसके पुत्रों से कहा, "क्या तुम्हें मेरा आदेश* याद है? मैंने कहा, 'हारून और उसके पुत्र इन चीज़ों को खाएंगे।' अत: याजक नियुक्ति संस्कार से रोटी की टोकरी और माँस लो। मिलापवाले तम्बू के द्वार पर उस माँस को उबालो। तुम उस माँस और उस रोटी को उसी स्थान पर खाओगे। 32यदि कुछ माँस या रोटी बच जाए तो उसे जला देना। 33याजक नियुक्ति संस्कार सात दिन तक चलेगा। तुम मिलापवाले तम्बू से तब तक नहीं जाओगे जब तक तुम्हारा याजक नियुक्ति संस्कार का समय पूरा नहीं हो जाता। 34यहोवा ने उन कामों को करने का आदेश दिया था जो आज किए गए उन्होंने तुम्हारे पापों के भुगतान के लिए यह आदेश दिया था। 35तुम्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर सात दिन तक, पूरे दिन रात रहना चाहिए। यदि तुम यहोवा का आदेश नहीं मानते हो तो तुम मर जाओगे। यहोवा ने मुझे ये आदेश दिया था।" 36इसलिए हारून और उसके पुत्रों ने वह सब कुछ किया जिसे करने का आदेश यहोवा ने मूसा को दिया था।

परमेश्वर द्वारा याजकों को स्वीकृति

9 आठवें दिन, मूसा ने हारून और उसके पुत्रों को बुलाया। उस ने इस्राएल के बुजुर्गों (नेताओं) को भी बुलाया। 2मूसा ने हारून से कहा, "अपने पशुओं में से एक बछड़ा और एक मेढ़ा लो। इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। बछड़ा पापबलि होगा और मेढ़ा होमबलि होगा। इन जानवरों को यहोवा को भेंट करो।

मेरा आदेश यहाँ मेरा आदेश से अभिप्राय है मेरे द्वारा दिया गया यहोवा का आदेश मूसा का वचन, यहोवा का वचन है क्योंकि वह यहोवा का प्रवक्ता है। इसलिए यहाँ मूसा ने यहोवा के आदेश को मेरा आदेश कहा है।

3इस्राएल के लोगों से कहो, 'पापबलि हेतु एक बकरा
लो। एक बछड़ा और एक मेमना होमबलि के लिए लो।
बछड़ा और मेमना दोनों एक वर्ष के होने चाहिए। इन
जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। 4एक साँड़ और
एक मेढ़ा मेलबलि के लिए लो। उन जानवरों को और
तेल मिली अन्नबलि लो और उन्हें यहोवा को भेंट
चढ़ाओ। क्यों? क्योंकि आज यहोवा की महिमा तुम्हारे
सामने प्रकट होगी।'"

5इसलिए सभी लोग मिलापवाले तम्बू में आए और वे
सभी उन चीज़ों को लाए जिनके लिए मूसा ने आदेश
दिया था। सभी लोग यहोवा के सामने खड़े हुए। 6मूसा
ने कहा, "तुमने वही किया है जो यहोवा ने आदेश
दिया। तुम लोग यहोवा की महिमा देखोगे।"

7तब मूसा ने हारून से ये बातें कहीं, "जाओ और वह
करो जिसके लिए यहोवा ने आदेश दिया था। वेदी के
पास जाओ और पापबलि तथा होमबलि चढ़ाओ। यह
सब अपने और लोगों के पापों के भुगतान के लिए
करो। तुम लोगों की लायी हुई बलि को लो और उसे
यहोवा को अर्पित करो। यह उनके पापों का भुगतान
होगा।"

8इसलिए हारून वेदी के पास गया। उसने बछड़े को
पापबलि हेतु मारा। यह पापबलि स्वयं उसके अपने लिए
थी। 9तब हारून के पुत्र हारून के पास खून लाए।
हारून ने अपनी उँगली ख़ून में डाली और वेदी के सिरों
पर इसे लगाया। तब हारून ने वेदी की नींव पर खून
उँडेला। 10हारून ने पापबलि से चर्बी, गुर्दे और कलेजे
की चर्बी को लिया। उस ने उन्हें वेदी पर जलाया। उसने
उसी प्रकार किया जिस प्रकार यहोवा ने मूसा को
आदेश दिया था। 11तब हारून ने डेरे के बाहर माँस
और चमड़े को जलाया। 12इसके बाद, हारून ने होमबलि
के लिए उस जानवर को मारा। जानवर को टुकड़ों में
काटा गया। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए
और हारून ने वेदी के चारों ओर खून डाला। 13हारून
के पुत्रों ने उन टुकड़ों और होमबलि का सिर हारून
को दिया। तब हारून ने उन्हें वेदी पर जलाया। 14हारून
ने होमबलि के भीतरी भागों और पैरों को धोया और
उसने उन्हें वेदी पर जलाया।

15तब हारून लोगों की बलि लाया। उसने लोगों के
लिए पापबलि वाले बकरे को मारा। उसने बकरे को
पहले की तरह पापबलि के लिए चढ़ाया। 16हारून होमबलि
को लाया और उसने वह बलि चढ़ाई। वैसे ही जैसे
यहोवा ने आदेश दिया था। 17हारून अन्नबलि को वेदी
के पास लाया। उसने मुट्ठी भर अन्न लिया और प्रात:
काल की नित्य बलि के साथ उसे वेदी पर रखा।
18हारून ने लोगों के लिए मेलबलि के साँड़ और मेढ़े
को मारा। हारून के पुत्र खून को हारून के पास लाए।
हारून ने इस खून को वेदी के चारों ओर उँडेला।
19हारून के पुत्र साँड़ और मेढ़े की चर्बी भी लाए। वे
चर्बी भरी पूँछ, भीतरी भागों को ढकने वाली चर्बी, गुर्दे
और कलेजे को ढकने वाली चर्बी भी लाए। 20हारून के
पुत्रों ने चर्बी के इन भागों को साँड़ और मेढ़े की
छातियों पर रखा। हारून ने चर्बी के भागों को लेकर
उसे वेदी पर जलाया। 21मूसा के आदेश के अनुसार
हारून ने छातियों और दायीं जाँघ को उत्तोलन भेंट के
लिए यहोवा के सामने हाथों में ऊपर उठाया।

22तब हारून ने अपने हाथ लोगों की ओर उठाए
और उन्हें आशीर्वाद दिया। हारून पापबलि, होमबलि
और मेलबलि को चढ़ाने के बाद वेदी से नीचे उतर
आया। 23मूसा और हारून मिलापवाले तम्बू में गए और
फिर बाहर आकर उन्होंने लोगों को आशीर्वाद दिया।
यहोवा की उपस्थिति से सभी लोगों के सामने तेज प्रकट
हुआ। 24यहोवा से अग्नि प्रकट हुई और उसने वेदी पर
होमबलि और चर्बी को जलाया। सभी लोगों ने जब यह
देखा तो वे चिल्लाए और उन्होंने धरती पर गिरकर
प्रणाम किया।

परमेश्वर की ज्वाला द्वारा विनाश

10 फिर तभी हारून के पुत्रों नादाब और अबीहू ने
पाप किया। दोनों पुत्रों ने लोबान जलाने के लिए
तश्तरी ली। उन्होंने एक अलग ही आग का प्रयोग
किया और लोबान को जलाया। उन्होंने उस आग का
उपयोग नहीं किया जिसके उपयोग का आदेश मूसा ने
उन्हें दिया था। 2इसलिए यहोवा से ज्वाला प्रकट हुई
और उसने नादाब और अबीहू को नष्ट कर दिया। वे
यहोवा के सामने मरे।

3तब मूसा ने हारून से कहा, "यहोवा कहता है, 'जो
याजक मेरे पास आए, उन्हें मेरा सम्मान करना चाहिए!
मै उन के लिये और सब ही के लिये पवित्र माना जाऊँ।'"
इसलिए हारून अपने मरे हुए पुत्रों के लिए खामोश रहा।

4हारून के चाचा उज्जीएल के दो पुत्र थे। वे मीशाएल
और एलसाफान थे। मूसा ने उन पुत्रों से कहा, "पवित्र
स्थान के सामने के भाग में जाओ। अपने चचेरे भाइयों
के शवों को उठाओ और उन्हें डेरे के बाहर ले जाओ।"
5इसलिए मीशाएल और एलसाफान ने मूसा का आदेश
माना। वे नादाब और अबीहू के शवों को बाहर लाए।
नादाब और अबीहू तब तक अपने विशेष अन्त:वस्त्र
पहने थे।

6तब मूसा ने हारून और उसके अन्य पुत्रों एलीआज़ार
और ईतामार से बात की। मूसा ने उनसे कहा, "कोई
शोक प्रकट न करो! अपने वस्त्र न फाड़ो या अपने
बालों को न बिखेरो! शोक प्रकट न करो, तुम मरोगे
नहीं और यहोवा तुम सभी लोगों से अप्रसन्न नहीं होगा।
इस्राएल का पूरा राष्ट्र तुम लोगों का सम्बन्धी है। वे
यहोवा द्वारा नादाब और अबीहू के जलाने के विषय में

रो पीट सकते हैं। 7किन्तु तुम लोगों को मिलापवाला
तम्बू भी नहीं छोड़ना चाहिए। यदि तुम लोग उस द्वार से
बाहर जाओगे तो मर जाओगे। क्यों? क्योंकि यहोवा के
अभिषेक का तेल तुम ने लगा रखा है।" सो हारून,
एलीआज़ार और ईतामार ने मूसा की आज्ञा मानी।

8तब यहोवा ने हारून से कहा, 9"तुम्हें और तुम्हारे
पुत्रों को दाखमधु या मद्य उस समय नहीं पीनी चाहिए
जब तुम लोग मिलापवाले तम्बू में आओ। यदि तुम ऐसा
करोगे तो मर जाओगे! यह नियम तुम्हारी पीढ़ियों में
सदा चलता रहेगा। 10तुम्हें, जो चीज़ें पवित्र हैं तथा जो
पवित्र नहीं हैं, जो शुद्ध हैं और जो शुद्ध नहीं हैं उनमें
अन्तर करना चाहिए। 11यहोवा ने मूसा को अपने नियम
दिए और मूसा ने उन नियमों को लोगों को दिया।
"हारून, तुम्हें उन सभी नियमों की शिक्षा लोगों को देनी
चाहिए।"

12अभी तक हारून के दो पुत्र एलीआज़ार और ईतामार
जीवित थे। मूसा ने हारून और उसके दोनों पुत्रों से बात
की। मूसा ने कहा, "कुछ अन्नबलि उन बलियों में से
बची है जो आग में जलाई गई थी। तुम लोग अन्नबलि
का वह भाग खाओगे। किन्तु तुम लोगों को इसे बिना
ख़मीर मिलाए खाना चाहिये। इसे वेदी के पास खाओ।
क्यों? क्योंकि वह भेंट बहुत पवित्र है। 13वह उस भेंट
का भाग है, जो यहोवा के लिए आग में जलाई गई थी
और जो नियम मैंने तुमको बताया, वह सिखाता है कि
वह भाग तुम्हारा और तुम्हारे पुत्रों का है। किन्तु तुम्हें
इसे पवित्र स्थान पर ही खाना चाहिए।

14"तुम, तुम्हारे पुत्र और तुम्हारी पुत्रियाँ भी उत्तोलन
बलि से छाती को और मेलबलि से जाँघ को खा सकेंगे।
इन्हें तुम्हें किसी पवित्र स्थान पर नहीं खाना है। बल्कि
तुम्हें इन्हें किसी शुद्ध स्थान पर खाना चाहिए। क्यों?
क्योंकि ये मेलबलियों में से मिली है। इस्राएल के लोग ये
बलि यहोवा को देते हैं। उन जानवरों के कुछ भाग को
लोग खाते हैं किन्तु छाती और जाँघ तुम्हारा भाग है।
15लोगों को अपने जानवरों की चर्बी आग में जलाई
जाने वाली बलि के रूप में लानी चाहिए। उन्हें मेलबलि
की जाँघ और उत्तोलन बलि की छाती भी लानी चाहिए।
उसे यहोवा के सामने उत्तोलित करना होगा और यह
बलि तुम्हारा भाग होगा। यह तुम्हारा और तुम्हारे बच्चों
का होगा। यहोवा के आदेश के अनुसार बलि का वह
भाग सदा तुम्हारा होगा।"

16मूसा ने पापबलि के बकरे के बारे में पूछा। किन्तु
उसे पहले ही जला दिया गया था। मूसा हारून के शेष
पुत्रों एलीआज़ार और ईतामार पर बहुत क्रोधित हुआ।
मूसा ने कहा, 17"तुम लोगों को यह बकरा पवित्र स्थान
पर खाना था। यह बहुत पवित्र है! तुम लोगों ने इसे
यहोवा के सामने क्यों नहीं खाया? यहोवा ने उसे तुम
लोगों के अपराधों को दूर करने के लिए दिया। वह
बकरा लोगों के पापों के भुगतान के लिए था। 18देखो!
तुम उस बकरे का खून पवित्र स्थान के भीतर नहीं
लाए। तुम्हें इस बकरे को पवित्र स्थान पर खाना था
जैसा कि मैंने आदेश दिया है।"

19किन्तु हारून ने मूसा से कहा, "सुनों, आज वे
अपनी पापबलि और होमबलि यहोवा के सामने लाए।
किन्तु तुम जानते हो कि आज मेरे साथ क्या हुआ! क्या
तुम यह समझते हो कि यदि मैं पापबलि को आज
खाऊँगा तो यहोवा प्रसन्न होगा? नहीं!"* 20जब मूसा ने
यह सुना तो वह सहमत हो गया।

माँस भोजन के नियम

11 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"इस्राएल
के लोगों से कहो: ये जानवर हैं जिन्हें तुम खा
सकते हो: 3यदि जानवर के खुर दो भागों में बँटे हों
और वह जानवर जुगाली भी करता हो तो तुम उस
जानवर का माँस खा सकते हो।

ऐसे जानवर जिनका माँस नहीं खाना चाहिए

4-6"कुछ जानवर जुगाली करते हैं, किन्तु उनके खुर
फटे नहीं होते। तो ऐसे जानवरों को मत खाओ-ऊँट,
शापान और खरगोश वैसे हैं, इसलिए वे तुम्हारे लिए
अपवित्र हैं। 7अन्य जानवर दो भागों में बँटी खुरों वाले
हैं, किन्तु वे जुगाली नही करते। उन जानवरों को मत
खाओ। सुअर वैसे ही हैं, अत: वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।
8उन जानवरों का माँस मत खाओ! उनके शव को
छूना भी मत! वे तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं!

समुद्री भोजन के नियम

9"यदि कोई जानवर समुद्र या नदी में रहता है और
उसके पंख और परतें हैं तो तुम उस जानवर को खा
सकते हो। 10-11किन्तु यदि जानवर समुद्र या नदी में
रहता है और उसके पंख और परतें नहीं होतीं तो उस
जानवर को तुम्हें नहीं खाना चाहिए। वह गन्दे जानवरों
में से एक हैं। उस जानवर का माँस मत खाओ। उसके
शव को छूना भी मत! 12तुम्हें पानी के हर एक जानवर
को, जिसके पंख और परतें नहीं होतीं, उसे घिनौने
जानवरों में समझना चाहिए।

अभोज्य पक्षी

13"तुम्हें निम्न पक्षियों को भी घिनौने पक्षी समझना
चाहिए। इन पक्षियों में से किसी को मत खाओ : उकाब,
गिद्ध, शिकारी पक्षी, 14चील, सभी प्रकार के बाज नामक
पक्षी, 15सभी प्रकार के काले पक्षी, 16शुतुर्मुर्ग, सींग

क्या ... नहीं हारून अपने दो पुत्रों की मृत्यु के कारण इतना अधिक परेशान था कि पापबलि को नहीं खा सका था।

वाला उल्लू, समुद्री जलमुर्ग, सभी प्रकार के बाज, 17उल्लू, समुद्री काग, बड़ा उल्लू, 18जलमुर्ग, मछली खाने वाले पेलिकन नामक खेत जलपक्षी, समुद्री गिद्ध, 19हंस, सभी प्रकार के सारस, कठफोड़वा और चमगादड़।

कीटपतंगों को खाने के नियम

20"और सभी ऐसे कीट पतंगे जिनके पंख होते हैं तथा जो रेंग कर चलते भी हैं। ये घिनौने कीट पतंगे हैं! 21किन्तु यदि पतंगों के पंख हैं और वह रेंग कर चलता भी है तथा उसके पैरों के ऊपर टांगों में ऐसे जोड़ हैं कि वह उछल सके तो तुम उन पतंगों को खा सकते हो। 22ये पतंगे हैं जिन्हें तुम खा सकते हो: हर प्रकार की टिड्डियाँ, हर प्रकार की सपंख टिड्डियाँ, हर प्रकार के झींगुर, हर प्रकार के टिड्डे।

23"किन्तु अन्य सभी वे कीट पतंगे जिनके पंख हैं और जो रेंग भी सकते हैं, तुम्हारे लिये घिनौने प्राणी हैं। 24वे कीट पतंगे तुमको अशुद्ध करेंगे। कोई व्यक्ति जो मरे कीट पतंगे को छु एगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 25यदि कोई मरे कीट पतंगों में से किसी को उठाता है तो उस व्यक्ति को अपने कपड़े धो लेने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

घिनौने जानवरों के विषय में अन्य नियम

26-27"कुछ जानवरों के खुर फटे होते हैं किन्तु खुर के ठीक-ठीक दो भाग नहीं होते। कुछ जानवर जुगाली नहीं करते। कुछ जानवरों के खुर नहीं होते, वे अपने पंजों* पर चलते हैं ऐसे सभी जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं। कोई व्यक्ति, जो उन्हें छुयेगा अशुद्ध हो जाएगा। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 28यदि कोई व्यक्ति उनके मरे शरीर को उठाता है तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। वे जानवर तुम्हारे लिए अशुद्ध है।

रेंगने वाले जानवरों के बारे में नियम

29"ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं: छछून्दर, चूहा, सभी प्रकार के बड़े गिरगिट, 30छिपकली, मगरमच्छ, गिरगिट, रेगिस्तानी गोहेर, और रंग बदलता गिरगिट। 31ये रेंगने वाले जानवर तुम्हारे लिए घिनौने हैं। कोई व्यक्ति जो उन मरे हुओं को छुएगा सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

घिनौने जानवरों के बारे में नियम

32"यदि किसी घिनौने जानवरों में से कोई मरा हुआ जानवर किसी चीज़ पर गिरे तो वह चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। यह लकड़ी, चमड़ा, कपड़ा, शोक वस्त्र या कोई भी औज़ार हो सकता है। जो कुछ भी वह हो उसे पानी से धोना चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। तब यह फिर शुद्ध हो जाएगा। 33यदि उन गन्दे जानवरों में से कोई मरा हुआ मिट्टी के कटोरे में गिरे तो कटोरे की कोई भी चीज़ अशुद्ध हो जाएगी। तुम्हें कटोरा अवश्य तोड़ देना चाहिए। 34यदि अशुद्ध मिट्टी के कटोरे का पानी किसी भोजन पर पड़े तो भोजन अशुद्ध हो जाएगा। अपवित्र कटोरे में कोई भी दाखमधु अशुद्ध हो जाएगी। 35यदि किसी मरे हुए घिनौने जानवर का कोई भाग किसी चीज़ पर आ पड़े तो वह चीज़ शुद्ध नहीं रहेगी। इसे टुकड़े-टुकड़े कर देना चाहिए। चाहे वह चूल्हा हो चाहे कड़ाही। वे तुम्हारे लिए सदा अशुद्ध रहेगी।

36"कोई सोता या कुआँ, जिसमें पानी रहता है, शुद्ध बना रहेगा किन्तु कोई व्यक्ति जो किसी मरे घिनौने जानवर को छुयेगा, अशुद्ध हो जाएगा। 37यदि उन घिनौने मरे जानवरों का कोई भाग बोए जाने वाले बीज पर आ पड़े तो भी वह शुद्ध ही रहेगा। 38किन्तु भिगोने के लिए यदि तुम कुछ बीजों पर पानी डालते हो और तब यदि मरे घिनौने जानवर का कोई भाग उन बीजों पर आ पड़े तो वे बीज तुम्हारे लिए अशुद्ध हैं।

39"और भी, यदि भोजन के लिए उपयुक्त कोई जानवर अपने आप मर जाए तो जो व्यक्ति उसके मरे शरीर को छुयेगा, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा 40और उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। जो उस मृत जानवर के शरीर का माँस खाए। वह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति मरे जानवर के शरीर को उठाए उसे भी अपने वस्त्रों को धोना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

41"हर एक ऐसा जानवर जो धरती पर रेंगता है, वो उन जानवरों में से एक है, जिसे यहोवा ने खाने को मना किया है। 42तुम्हें ऐसे किसी भी रेंगने वाले जानवर को नहीं खाना चाहिए जो पेट के बल रेंगता है या चारों पैरों पर चलता है, या जिसके बहुत से पैर हैं। ये तुम्हारे लिए घिनौने जानवर हैं! 43उन घिनौने जानवरों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। तुम्हें उनके साथ अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए! 44क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ! मैं पवित्र हूँ इसलिए तुम्हें अपने को पवित्र रखना चाहिए! उन घिनौने रेंगने वाले जानवरों से अपने को घिनौना न बनाओ! 45मैं तुम लोगों को मिस्र से लाया। मैंने यह इसलिए किया कि तुम लोग मेरे विशेष जन बने रह सको। मैंने यह इसलिए किया कि मैं तुम्हारा परमेश्वर बन सकूँ। मैं पवित्र हूँ, अत: तुम्हें भी पवित्र रहना है!"

46वे नियम सभी मवेशियों, पक्षियों और धरती के अन्य जानवरों के लिए हैं। वे नियम समुद्र में रहने वाले सभी जानवरों और धरती पर रेंगने वाले सभी जानवरों के लिए हैं। 47वे उपदेश इसलिए हैं कि लोग शुद्ध

पंजे जानवरों के पैर। पंजों के तले में नाख़ून और नरम गद्दी होती है खुर की तरह कठोर भाग नहीं होता।

जानवरों और घिनौने जानवरों में अन्तर कर सकें। इस प्रकार लोग जानेंगे कि कौन सा जानवर खाने योग्य है और कौन सा खाने योग्य नहीं है।

नयी माताओं के लिए नियम

12 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो: यदि कोई स्त्री एक लड़के को जन्म देती है तो वह स्त्री सात दिन तक अशुद्ध रहेगी। यह उसके रक्त-स्राव के मासिकधर्म के समय अशुद्ध होने की तरह होगा। 3आठवें दिन लड़के का खतना होना चाहिए। 4खून की हानि से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध होने के तैंतीस दिन बाद तक यह होगा। उस स्त्री को वह कुछ नहीं छूना चाहिए जो पवित्र है। उसे पवित्र स्थान में तब तक नहीं जाना चाहिए जब तक उसके पवित्र होने का समय पूरा न हो जाए। 5किन्तु यदि स्त्री लड़की को जन्म देती है तो माँ रक्त स्राव के मासिक धर्म के समय की तरह दो सप्ताह तक शुद्ध नहीं होगी। वह अपने खून की हानि के छियासठ दिन बाद शुद्ध हो जाती है।

6"नई माँ जिसने अभी लड़की या लड़के को जन्म दिया है, ऐसी माँ के शुद्ध होने का विशेष समय पूरा होने पर उसे मिलापवाले तम्बू में विशेष भेंटें लानी चाहिए। उसे उन भेंटों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक को देना चाहिए। उसे एक वर्ष का मेमना होमबलि के लिए और पापबलि के हेतु एक फ़ाख्ता या कबूतर का बच्चा लाना चाहिए।

7-8"यदि स्त्री मेमना लाने में असमर्थ हो तो वह दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे ला सकती है। एक पक्षी होमबलि के लिए होगा तथा एक पापबलि के लिये। याजक यहोवा के सामने उन्हें अर्पित करेगा। इस प्रकार वह उसके लिए उसके पापों का भुगतान करेगा। तब वह अपने खून की हानि की अशुद्धि से शुद्ध होगी। ये नियम उन स्त्रियों के लिए है जो एक लड़का या लड़की को जन्म देती हैं।"

गंभीर चर्मरोगों के बारे में नियम

13 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई भयंकर सूजन हो सकती है, या खुजली अथवा सफेद दाग हो सकते हैं। यदि घाव चर्मरोग की तरह दिखाई पड़े तो व्यक्ति को याजक हारून या उसके किसी एक याजक पुत्र के पास लाया जाना चाहिए। 3याजकों को व्यक्ति के चर्म के घाव को देखना चाहिए। यदि घाव के बाल सफेद हो गए हों और घाव व्यक्ति के चर्म से अधिक गहरा मालूम हो तो यह भयंकर चर्म रोग है। जब याजक व्यक्ति की जाँच खत्म करे तो उसे घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है।

4"कभी-कभी किसी व्यक्ति के चर्म पर कोई सफेद दाग हो जाता है किन्तु दाग़ चर्म से गहरा नहीं मालूम होता। यदि वह सत्य हो तो याजक उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अन्य लोगों से अलग करे। 5सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति की जाँच करनी चाहिए। यदि याजक देखे कि घाव में परिवर्तन नहीं हुआ है और वह चर्म पर और अधिक फैला नहीं है तो याजक को और सात दिन के लिए उसे अलग करना चाहिए। 6सात दिन बाद याजक को उस व्यक्ति की फिर जाँच करनी चाहिए। यदि घाव सूख गया हो और चर्म पर फैला न हो, तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। वह केवल एक खुरंड है। तब रोगी को अपने वस्त्र धोने चाहिए और फिर से शुद्ध होना चाहिए।

7"किन्तु यदि व्यक्ति ने याजक को फिर अपने आपको शुद्ध बनाने के लिए दिखा लिया हो और उसके बाद चर्मरोग त्वचा पर अधिक फैलने लगे तो उस व्यक्ति को फिर याजक के पास आना चाहिए। 8याजक को जाँच करके देखना चाहिए। यदि घाव चर्म पर फैला हो तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति अशुद्ध है अर्थात् उसे कोई भयानक चर्मरोग है।

9"यदि व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हुआ हो तो उसे याजक के पास लाया जाना चाहिए। 10याजक को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि चर्म पर सफ़ेद दाग़ हो और उसमे सूजन हो, उस स्थान के बाल सफ़ेद हों गए हो और यदि वहाँ घाव कच्चा हो 11तो यह कोई भयानक चर्मरोग है जो उस व्यक्ति को बहुत समय से है। अत: याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित कर देना चाहिए। याजक उस व्यक्ति को केवल थोड़े से समय के लिए ही अन्य लोगों से अलग नहीं करेगा। क्यों? क्योंकि वह जानता है कि वह व्यक्ति अशुद्ध है।

12"यदि कभी चर्मरोग व्यक्ति के सारे शरीर पर फैल जाए, वह चर्मरोग उस व्यक्ति के चर्म को सिर से पाँव तक ढक ले, 13और याजक देखे कि चर्मरोग पूरे शरीर को इस प्रकार ढके है कि उस व्यक्ति का पूरा शरीर ही सफेद हो गया है तो याजक को उसे शुद्ध घोषित कर देना चाहिए। 14किन्तु यदि व्यक्ति का चर्म घाव जैसा कच्चा हो तो वह शुद्ध नहीं है। 15जब याजक कच्चा चर्म देखे, तब उसे घोषित करना चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। कच्चा चर्म शुद्ध नहीं है। यह भयानक चर्मरोग है।

16"यदि चर्म फिर कच्चा पड़ जाये और सफेद हो जाये तो व्यक्ति को याजक के पास आना चाहिए। 17याजक को उस व्यक्ति की जाँच करके देखना चाहिए। यदि रोग ग्रस्त अंग सफेद हो गया हो तो याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति जिसे छूत रोग है, वह अंग शुद्ध है। सो वह व्यक्ति शुद्ध है।

18"हो सकता है कि शरीर के चर्म पर कोई फोड़ा हो। और फोड़ा ठीक हो जाय। 19किन्तु फोड़े की जगह पर सफेद सूजन, या गहरी लाली लिए सफेद और चमकीला

दाग रह जाय तब चर्म का यह स्थान याजक को दिखाना चाहिए। 20याजक को उसे देखना चाहिए। यदि सूजन चर्म से गहरा है और इस पर के बाल सफेद हो गये हैं तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति अशुद्ध है। वह दाग भयानक चर्मरोग है। यह फोड़े के भीतर से फूट पड़ा है। 21किन्तु यदि याजक उस स्थान को देखता है और उस पर सफेद बाल नहीं हैं और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि धुंधला है तो याजक को उस व्यक्ति को सात दिन के लिए अलग करना चाहिए। 22यदि दाग का अधिक भाग चर्म पर फैलता है तब याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह छूत रोग है। 23किन्तु यदि सफेद दाग अपनी जगह बना रहता है, फैलता नहीं तो वह पुराने फोड़े का केवल घाव है। याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

24-25"किसी व्यक्ति का चर्म जल सकता है। यदि कच्चा चर्म सफेद या लालीयुक्त दाग होता है तो याजक को इसे देखना चाहिए। यदि वह दाग चर्म से गहरा मालूम हो और उस स्थान के बाल सफेद हो तो यह भयंकर चर्म रोग है। जो जले में से फूट पड़ा है। तब याजक को उस व्यक्ति को अशुद्ध घोषित करना चाहिए। यह भयंकर चर्म रोग है। 26किन्तु याजक यदि उस स्थान को देखता है और सफेद दाग में सफेद बाल नहीं है और दाग चर्म से गहरा नहीं है, बल्कि हल्का है तो याजक को उसे सात दिन के लिए ही अलग करना चाहिए। 27सातवें दिन याजक को उस व्यक्ति को फिर देखना चाहिए। यदि दाग चर्म पर फैले तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह भयंकर चर्म रोग है।

28किन्तु यदि सफेद दाग चर्म पर न फैले, अपितु धुंधला हो तो यह जलने से पैदा हुई सूजन है। याजक को उस व्यक्ति को शुद्ध घोषित करना चाहिए। यह केवल जले का निशान है। 29किसी व्यक्ति के सिर की खाल पर या दाढ़ी में कोई छूत रोग हो सकता है। 30याजक को छूत के रोग को देखना चाहिए। यदि छूत का रोग चर्म से गहरा मालूम हो और इसके चारों ओर के बाल बारीक और पीले हों तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति अशुद्ध है। यह बुरा चर्मरोग है। 31यदि रोग चर्म से गहरा न मालूम हो, और इसमें कोई काला बाल न हो तो याजक को उसे सात दिन के लिए अलग कर देना चाहिए। 32सातवें दिन याजक को छूत के रोगी को देखना चाहिए। यदि रोग फैला नहीं है या इसमें पीले बाल नहीं उग रहे है और रोग चर्म से गहरा नहीं है, 33तो व्यक्ति को बाल काट लेने चाहिए। किन्तु उसे रोग वाले स्थान के बाल नहीं काटने चाहिए। याजक को उस व्यक्ति को और सात दिन के लिए अलग करना चाहिए। 34सातवें दिन याजक को रोगी को देखना चाहिए। यदि रोग चर्म में नहीं फैला है और यह चर्म से गहरा नहीं मालूम होता है तो याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है। व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए तथा शुद्ध हो जाना चाहिए। 35किन्तु यदि व्यक्ति के शुद्ध हो जाने के बाद चर्म में रोग फैलता है 36तो याजक को फिर व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि रोग चर्म में फैला है तो याजक को पीले बालों को देखने की आवश्यकता नहीं है, व्यक्ति अशुद्ध है। 37किन्तु यदि याजक यह समझता है कि रोग का बढ़ना रुक गया है और इसमें काले बाल उग रहे हैं तो रोग अच्छा हो गया है। व्यक्ति शुद्ध है। याजक को घोषणा करनी चाहिए कि व्यक्ति शुद्ध है।

38"जब व्यक्ति के चर्म पर सफेद दाग हों, 39तो याजक को उन दागों को देखना चाहिए। यदि व्यक्ति के चर्म के दाग धुंधले सफेद हैं, तो रोग केवल अहानिकारक फुंसियाँ है। वह व्यक्ति शुद्ध है।

40"किसी व्यक्ति के सिर के बाल झड़ सकते है। वह शुद्ध है। यह केवल गंजापन है। 41किसी आदमी के सिर के माथे के बाल झड़ सकते हैं। वह शुद्ध है। यह दूसरे प्रकार का गंजापन है। 42किन्तु यदि उसके सिर की चमड़ी पर लाल सफेद फुंसियाँ हैं तो यह भयानक चर्म रोग है। 43याजक को ऐसे व्यक्ति को देखना चाहिए। यदि छूत ग्रस्त त्वचा की सूजन लाली युक्त सफेद है और कुष्ठ की तरह शरीर के अन्य भागों पर दिखाई पड़ रही है 44तो उस व्यक्ति के सिर की चमड़ी पर भयानक चर्मरोग है। व्यक्ति अशुद्ध है, याजक को घोषणा करनी चाहिए। 45यदि किसी व्यक्ति को भयानक चर्मरोग हो तो उस व्यक्ति को अन्य लोगों को सावधान करना चाहिए। उस व्यक्ति को जोर से 'अशुद्ध! अशुद्ध!' कहना चाहिए, उस व्यक्ति के वस्त्रों को, सिलाई से फाड़ देना चाहिए। उस व्यक्ति को अपने बालों को सँवारना नहीं चाहिए और उस व्यक्ति को अपना मुख ढकना चाहिए। 46जो व्यक्ति अशुद्ध होगा उसमें छूत का रोग सदा रहेगा। वह व्यक्ति अशुद्ध है। उसे अकेले रहना चाहिए। उनका निवास डेरे से बाहर होना चाहिए।

47-48"कुछ वस्त्रों पर फफूँदी लग सकती हैं। वस्त्र सन का या ऊनी हो सकता है। वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ हो सकता है। फफूँदी किसी चमड़े या चमड़े से बनी किसी चीज पर हो सकती है। 49यदि फफूँदी हरी या लाल हो तो उसे याजक को दिखाना चाहिए। 50याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। उसे उस चीज को सात दिन तक अलग स्थान पर रखना चाहिए। 51-52सातवें दिन, याजक को फफूँदी देखनी चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि फफूँदी चमड़े या कपड़े पर है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि वस्त्र बुना हुआ या कढ़ा हुआ है। यह महत्वपूर्ण नहीं कि चमड़े का उपयोग किस लिए किया गया था। यदि फफूँदी फैलती है तो वह कपड़ा या चमड़ा अशुद्ध

है। वह फफूँदी अशुद्ध है। याजक को उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

53“यदि याजक देखे कि फफूँदी फैली नहीं तो वह कपड़ा या चमड़ा धोया जाना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि यह चमड़ा है या कपड़ा, अथवा कपड़ा बुना हुआ है या कढ़ा हुआ, इसे धोना चाहिए। **54**याजक को लोगों को यह आदेश देना चाहिए कि वे चमड़े या कपड़े के टुकड़ों को धोएं, तब याजक वस्त्रों को और सात दिनों के लिए अलग करे। **55**उस समय के बाद याजक को फिर देखना चाहिए। यदि फफूँदी ठीक वैसी ही दिखाई देती है तो वह वस्तु अशुद्ध है। यह महत्वपूर्ण नहीं है कि छूत फैली नहीं है। तुम्हें उस कपड़े या चमड़े को जला देना चाहिए।

56 “किन्तु यदि याजक उस चमड़े या कपड़े को देखता है कि फफूँदी मुरझा गई है तो याजक को चमड़े या कपड़े के फफूँदी युक्त दाग को चमड़े या कपड़े से फाड़ देना चाहिए। यह महत्वपूर्ण नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ है या बारीक बुना हुआ है। **57**किन्तु फफूँदी उस चमड़े या कपड़े पर लौट सकती है। यदि ऐसा होता है तो फफूँदी बढ़ रही है। उस चमड़े या कपड़े को जला देना चाहिए। **58**किन्तु यदि धोने के बाद फफूँदी न लौटे, तो वह चमड़ा या कपड़ा शुद्ध है। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ या बुना हुआ था। वह कपड़ा शुद्ध है।” **59**चमड़े या कपड़े पर की फफूँदी के विषय में ये नियम हैं। इसका कोई महत्व नहीं कि कपड़ा कढ़ा हुआ है या बुना हुआ है।

भयानक चर्म रोगी को शुद्ध करने के नियम

14 यहोवा ने मूसा से कहा, **2**“ये उन लोगों के लिए नियम हैं जिन्हें भयानक चर्म रोग था और जो स्वस्थ हो गए। ये नियम उस व्यक्ति को शुद्ध बनाने के लिए है।

“याजक को उस व्यक्ति को देखना चाहिए जिसे भयानक चर्म रोग है। **3**याजक को उस व्यक्ति के पास डेरे के बाहर जाना चाहिए। याजक को यह देखने का प्रयत्न करना चाहिए कि वह चर्म रोग अच्छा हो गया है। **4**यदि व्यक्ति स्वस्थ है तो याजक उसे यह करने को कहेगा: उसे दो जीवित शुद्ध पक्षी, एक देवदारू की लकड़ी, लाल कपड़े का एक टुकड़ा और एक जूफा का पौधा लाना चाहिए। **5**याजक को बहते हुए पानी के ऊपर मिट्टी के एक कटोरे में एक पक्षी को मारने का आदेश देना चाहिए। **6**तब याजक दूसरे पक्षी को ले, जो अभी जीवित है और देवदारू की लकड़ी, लाल कपड़े के टुकड़े और जूफा का पौधा ले। याजक को जीवित पक्षी और अन्य चीज़ों को बहते हुए पानी के ऊपर मारे गए पक्षी के खून में डुबाना चाहिए। **7**याजक उस व्यक्ति पर सात बार खून छिड़केगा जिसे भयानक चर्म रोग है। तब याजक को घोषित करना चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। तब याजक को खुले मैदान में जाना चाहिए और जीवित पक्षी को उड़ा देना चाहिए।

8“इसके बाद उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए। उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। तब वह व्यक्ति डेरे में जा सकेगा। किन्तु उसे अपने खेमे के बाहर सात दिन तक रहना चाहिए। **9**सातवें दिन उसे अपने सारे बाल काट डालने चाहिए। उसे अपने सिर, दाढ़ी, भौंहों के सभी बाल कटवा लेने चाहिए। तब उसे अपने कपड़े धोने चाहिए और पानी से नहाना चाहिए। तब वह व्यक्ति शुद्ध होगा।

10“आठवें दिन उस व्यक्ति को दो नर मेमने लेने चाहिए जिनमें कोई दोष न हो। उसे एक वर्ष की एक मादा मेमना भी लेनी चाहिए जिसमें कोई दोष न हो। उसे छः क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के लिए है। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट* जैतून का तेल लेना चाहिए। **11**याजक को घोषणा करनी चाहिए कि वह व्यक्ति शुद्ध है। याजक को उस व्यक्ति और उसकी बलि को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाना चाहिए। **12**याजक नर मेमनों में से एक को दोषबलि के रूप में चढ़ाएगा। वह उस मेमनों और उस तेल को यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के रूप में चढ़ाएगा। **13**तब याजक नर मेमने को उसी पवित्र स्थान पर मारेगा जहाँ वे पापबलि और होमबलि को मारते हैं। दोषबलि, पापबलि के समान है। यह याजक की है। यह अत्यन्त पवित्र है।

14“याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा और फिर याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक कुछ खून उस व्यक्ति के हाथ के दाएँ अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। **15**याजक कुछ तेल भी लेगा और अपनी बाँयी हथेली पर डालेगा। **16**तब याजक अपने दाएँ हाथ की उँगलियाँ अपने बाएँ हाथ की हथेली में रखे हुये तेल में डुबाएगा। वह अपनी उँगली का उपयोग कुछ तेल यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। **17**याजक अपनी हथेली का कुछ तेल शुद्ध किये जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल उस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक कुछ तेल दोषबलि के खून पर लगाएगा।* **18**याजक अपनी हथेली में बचा हुआ तेल शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर

छः क्वार्ट 3/10 एपा।

दो तिहाई पिन्ट “एक लोज।”

याजक … लगाएगा अर्थात् तेल उस खून के ऊपर लगाया जाता है जो व्यक्ति के कान, अंगूठे और पैर के अंगूठे पर लगा था।

पर लगाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पाप का यहोवा के सामने भुगतान करेगा।

19"उसके बाद याजक पापबलि चढ़ाएगा और व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा जिससे वह शुद्ध हो जाएगा। इसके पश्चात याजक होमबलि के लिए जानवर को मारेगा। 20तब याजक होमबलि और अन्नबलि को वेदी पर चढ़ाएगा। इस प्रकार याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जायेगा।

21"किन्तु यदि व्यक्ति गरीब है और उन बलियों को देने में असमर्थ है तो उसे एक मेमना दोषबलि के रूप में लेना चाहिए। यह उत्तोलनबलि होगी जिससे याजक उसके पापों के भुगतान के लिए देगा। उसे दो क्वार्ट* तेल मिला उत्तम महीन आटा लेना चाहिए। यह आटा अन्नबलि के रूप में उपयोग में आएगा। व्यक्ति को दो तिहाई पिन्ट जैतून का तेल 22और दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। इन चीज़ों को देने में गरीब लोग भी समर्थ होंगे। एक पक्षी पापबलि के लिए होगा और दूसरा होमबलि का होगा

23"आठवें दिन, वह व्यक्ति उन चीज़ों को याजक के पास मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। वे चीज़ें यहोवा के सामने बलि चढ़ाई जाएंगी जिससे व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा। 24याजक, दोषबलि के रूप में तेल और मेमने को लेगा तथा यहोवा के सामने उत्तोलनबलि के रूप में चढ़ाएगा। 25तब याजक दोषबलि के मेमने को मारेगा। याजक दोषबलि का कुछ खून लेगा। याजक इसमें से कुछ खून शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के निचले सिरे पर लगाएगा। याजक इसमें से कुछ खून इस व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। 26याजक इस तेल में से कुछ अपनी बायीं हथेली में भी डालेगा। 27याजक अपने दाएँ हाथ की उँगली का उपयोग अपनी हथेली के तेल को यहोवा के सामने सात बार छिड़कने के लिए करेगा। 28तब याजक अपनी हथेली के कुछ तेल को शुद्ध बनाए जाने वाले व्यक्ति के दाएँ कान के सिरे पर लगाएगा। याजक इस तेल में से कुछ तेल व्यक्ति के दाएँ हाथ के अंगूठे और उसके दाएँ पैर के अंगूठे पर लगाएगा। याजक दोषबलि के खून लगे स्थान पर इसमें से कुछ तेल लगाएगा। 29याजक को अपनी हथेली के बचे हुये तेल को शुद्ध किए जाने वाले व्यक्ति के सिर पर डालना चाहिए। इस प्रकार यहोवा के सामने याजक उस व्यक्ति के पापों का भुगतान करेगा।

30"तब व्यक्ति फ़ाख्तों में से एक या कबूतर के बच्चों में से एक की बलि चढ़ाएगा। गरीब लोग भी इन पक्षियों को भेंट करने में समर्थ होंगे। 31व्यक्ति को अपनी सामर्थ्य के अनुसार बलि चढ़ानी चाहिए। उसे पक्षियों में से एक को पापबलि के रूप में चढ़ाना चाहिए और दूसरे पक्षी को होमबलि के रूप में उसे उनको अन्नबलि के साथ भेंट चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार याजक यहोवा के सामने उस व्यक्ति के पाप का भुगतान करेगा और वह व्यक्ति शुद्ध हो जाएगा।"

32ये भयानक चर्मरोग के ठीक होने के बाद किसी एक व्यक्ति को शुद्ध करने के नियम हैं। ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो शुद्ध होने के लिए सामान्य बलियों का व्यय नहीं उठा सकते।

घर में लगी फफूँदी के लिए नियम

33यहोवा ने मूसा और हारून से यह भी कहा, 34"मैं तुम्हारे लोगों को कनान देश दे रहा हूँ। तुम्हारे लोग इस भूमि पर जाएंगे। उस समय मैं हो सकता है, कुछ लोगों के घरों में फफूँदी लगा दूँ। 35तो उस घर के मालिक को याजक के पास आकर कहना चाहिए, 'मैंने अपने घर में फफूँदी जैसी कोई चीज़ देखी है।'

36"तब याजक को आदेश देना चाहिए कि घर को खाली कर दिया जाय। लोगों को याजक के फफूँदी देखने जाने से पहले ही यह करना चाहिए। इस तरह घर की सभी चीज़ों को याजक को अशुद्ध नहीं कहना पड़ेगा। लोगों द्वारा घर खाली कर दिए जाने पर याजक घर में देखने जाएगा। 37याजक फफूँदी को देखेगा। यदि फफूँदी ने घर की दीवारों पर हरे या लाल रंग के चकत्ते बना दिए हैं और फफूँदी दीवार की सतह पर बढ़ रही है, 38तो याजक को घर से बाहर निकल आना चाहिए और सात दिन तक घर बन्द कर देना चाहिए।

39"सातवें दिन, याजक को वहाँ लौटना चाहिए और घर की जाँच करनी चाहिए। यदि घर की दीवारों पर फफूँदी फैल गई हो 40तो याजक को लोगों को आदेश देना चाहिए कि वे फफूँदी सहित पत्थरों को उखाड़ें और उन्हें दूर फेंक दें। उन्हें उन पत्थरों को नगर से बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर फेंकना चाहिए। 41तब याजक को पूरे घर को अन्दर से खुरचवा डालना चाहिए। लोगों को उस लेप को जिसे उन्होंने खुरचा है, फेंक देना चाहिए। उन्हें उस लेप को नगर के बाहर विशेष अशुद्ध स्थान पर डालना चाहिए। 42तब उस व्यक्ति को नए पत्थर दीवारों में लगाने चाहिए और उसे उन दीवारों को नए लेप से ढक देना चाहिए।

43"सम्भव है कोई व्यक्ति पुराने पत्थरों और लेप को निकाल कर नये पत्थरों और लेप को लगाए और सम्भव है वह फफूँदी उस घर में फिर प्रकट हो। 44तब याजक को आकर उस घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में फैल गई है तो यह रोग है जो दूसरी जगहों में जल्दी से फैलता है। अत: घर अशुद्ध है। 45उस व्यक्ति को वह घर गिरा देना चाहिए। उन्हें सारे पत्थर, लेप तथा अन्य लकड़ी के टुकड़ों को नगर से बाहर

दो क्वार्ट "1/10 एपा।"

अशुद्ध स्थान पर ले जाना चाहिए 46और कोई व्यक्ति
जो उसमें जाता है, सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 47यदि
कोई व्यक्ति उसमें भोजन करता है या उसमें सोता है तो
उस व्यक्ति को अपने वस्त्र धोने चाहिए।

48"घर में नये पत्थर और लेप लगाने के बाद याजक
को घर की जाँच करनी चाहिए। यदि फफूँदी घर में
नहीं फैली है तो याजक घोषणा करेगा कि घर शुद्ध है।
क्यों? क्योंकि फफूँदी समाप्त हो गई है!

49"तब, घर को शुद्ध करने के लिए याजक को दो
पक्षी, एक देवदारू की लकड़ी, एक लाल कपड़े का
टुकड़ा और जूफा का पौधा लेना चाहिए। 50याजक
बहते पानी के ऊपर मिट्टी के कटोरे में एक पक्षी को
मारेगा। 51तब याजक देवदारू की लकड़ी, जूफा का
पौधा, लाल कपड़े का टुकड़ा और जीवित पक्षी को
लेगा। याजक बहते जल के ऊपर मारे गए पक्षी के खून
में उन चीज़ों को डुबाएगा। तब याजक उस खून को उस
घर पर सात बार छिड़केगा। 52इस प्रकार याजक उन
चीज़ों का उपयोग घर को शुद्ध करने के लिए करेगा।
53याजक खुले मैदान में नगर के बाहर जाएगा और
पक्षी को उड़ा देगा। इस प्रकार याजक घर को शुद्ध
करेगा। घर शुद्ध हो जाएगा।"

54वे नियम भयानक चर्मरोग के, 55घर या कपड़े के
टुकड़ों पर की फफूँदी के बारे में है। 56वे नियम सूजन,
फुंसियों या चर्मरोग पर सफेद दाग से सम्बन्धित हैं। 57वे
नियम सिखाते हैं कि चीज़े कब अशुद्ध हैं तथा कब शुद्ध
हैं। वे नियम उस प्रकार की बिमारियों से सम्बन्धित हैं।

शरीर से बहने वाले स्रावों के नियम

15 यहोवा ने मूसा और हारून से कहा, 2"इस्राएल
के लोगों से कहो: जब किसी व्यक्ति के शरीर
से धात का स्राव होता है तब वह व्यक्ति अशुद्ध होता है।
3वह धात शरीर से खुला बहता है या शरीर उसे बहने
से रोक देता है इसका कोई महत्व नहीं।

4"यदि धात त्याग करने वाला बिस्तर पर सोया रहता
है तो वह बिस्तर अशुद्ध हो जाता है। जिस चीज़ पर भी
वह बैठता है वह अशुद्ध हो जाती है। 5यदि कोई व्यक्ति
उसके बिस्तर को छूता भी है तो उसे अपने वस्त्रों को
धोना और पानी से नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेगा। 6यदि कोई व्यक्ति उस चीज पर बैठता है
जिस पर धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो उसे
अपने वस्त्र धोना और बहते पानी में नहाना चाहिए। वह
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 7यदि कोई व्यक्ति उस व्यक्ति
को छूता है जिसने धात त्याग किया है तो उसे अपने
वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए।
वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

8"यदि धात त्याग करने वाला व्यक्ति किसी शुद्ध
व्यक्ति पर थूकता है तो शुद्ध व्यक्ति को अपने वस्त्र
धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। यह व्यक्ति सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेगा। 9पशु पर बैठने की कोई काठी जिस पर
धात त्याग करने वाला व्यक्ति बैठा हो तो वह अशुद्ध हो
जाएगी। 10इसलिए कोई व्यक्ति जो धात त्याग करने वाले
व्यक्ति के नीचे रहने वाली किसी चीज़ को छूता है,
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। जो व्यक्ति धात त्याग करने
वाले व्यक्ति के नीचे की चीज़ें ले जाता है उसे अपने
वस्त्रों को धोना चाहिए तथा बहते पानी में नहाना चाहिए।
वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

11"यह सम्भव है कि धात त्याग करने वाला व्यक्ति
पानी में हाथ धोए बिना किसी अन्य व्यक्ति को छूए।
तब दूसरा व्यक्ति अपने वस्त्रों को धोए और बहते पानी
में नहाए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।

12"धात त्याग करने वाला व्यक्ति यदि मिट्टी का
कटोरा छूए तो वह कटोरा फोड़ देना चाहिए। यदि धात
त्याग करने वाला व्यक्ति कोई लकड़ी का कटोरा छूए
तो उस कटोरे को बहते पानी में अच्छी तरह धोना
चाहिए। 13जब धात त्याग करने वाला कोई व्यक्ति अपने
धात त्याग से शुद्ध किया जाता है तो उसे अपनी शुद्धि
के लिए उस दिन से सात दिन गिनने चाहिए। तब उसे
अपने वस्त्र धोने चाहिए और बहते पानी में नहाना
चाहिए। वह शुद्ध हो जाएगा। 14आठवें दिन उस व्यक्ति
को दो फ़ाख्ते या दो कबूतर के बच्चे लेने चाहिए। उसे
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने आना
चाहिए। वह व्यक्ति दो पक्षी याजक को देगा। 15याजक
पक्षियों की बलि चढ़ाएगा। एक को पापबलि के लिए
तथा दूसरे को होमबलि के लिये। इस प्रकार याजक इस
व्यक्ति को यहोवा के सामने उस के धात त्याग से हुई
अशुद्धता से शुद्ध करेगा।

पुरुषों के लिये नियम

16"यदि व्यक्ति का वीर्य निकल जाता है तो उसे
सम्पूर्ण शरीर से बहते पानी में नहाना चाहिए। वह
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 17यदि वीर्य किसी वस्त्र या
चमड़े पर गिरे तो वह वस्त्र या चमड़ा पानी में धोना
चाहिए। यह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 18यदि कोई
व्यक्ति किसी स्त्री के साथ सोता है और वीर्य निकलता
है तो स्त्री पुरुष दोनों को बहते पानी में नहाना चाहिए।
वे सन्ध्या तक अशुद्ध रहेंगे।

स्त्रियों के लिये नियम

19"यदि कोई स्त्री मासिक रक्त स्राव के समय
मासिकधर्म से है तो वह सात दिन तक अशुद्ध रहेगी।
यदि कोई व्यक्ति उसे छूता है तो वह व्यक्ति सन्ध्या तक
अशुद्ध रहेगा। 20अपने मासिकधर्म के समय स्त्री जिस
किसी चीज़ पर लेटेगी, वह भी अशुद्ध होगी और उस
समय में जिस चीज़ पर वह बैठेगी, वह भी अशुद्ध होगी।

21यदि कोई व्यक्ति उस स्त्री के बिस्तर को छूता है तो
उसे अपने वस्त्रों को बहते पानी में धोना और नहाना
चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 22यदि कोई
व्यक्ति उस चीज़ को छूता है जिस पर वह स्त्री बैठी हो
तो उस व्यक्ति को अपने वस्त्र बहते पानी में धोने चाहिए
और नहाना चाहिए। वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
23वह व्यक्ति स्त्री के बिस्तर को छूता है या उस चीज़
को छूता है जिस पर वह बैठी हो, तो वह व्यक्ति सन्ध्या
तक अशुद्ध रहेगा। 24यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के
साथ मासिक धर्म के समय यौन सम्बन्ध करता है तो
वह व्यक्ति सात दिन तक अशुद्ध रहेगा। हर एक बिस्तर
जिस पर वह सोता है, अशुद्ध होगा।

25"यदि किसी स्त्री को कई दिन तक रक्त स्राव रहता
है जो उसके मासिकधर्म के समय नहीं होता, या निश्चित
समय के बाद मासिकधर्म होता है तो वह उसी प्रकार
अशुद्ध होगी जिस प्रकार मासिकधर्म के समय और तब
तक अशुद्ध रहेगी जब तक रहेगा। 26पूरे रक्त स्राव के
समय वह स्त्री जिस बिस्तर पर लेटेगी, वह वैसा ही होगा
जैसा मासिकधर्म के समय। जिस किसी चीज़ पर वह
स्त्री बैठेगी, वह वैसे ही अशुद्ध होगी जैसे वह मासिकधर्म
से अशुद्ध होती है। 27यदि कोई व्यक्ति उन चीज़ों को
छूता है तो वह अशुद्ध होगा। इस व्यक्ति को बहते पानी
से अपने कपड़े धोने चाहिए तथा नहाना चाहिए। वह
सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। 28उसके बाद जब स्त्री अपने
मासिकधर्म से अशुद्ध हो जाती है तब से उसे सात दिन
गिनने चाहिए। इसके बाद वह शुद्ध होगी। 29फिर आठवें
दिन उसे दो फ़ाख्ते और दो कबूतर के बच्चे लेने
चाहिए। उसे उन्हें मिलापवाले तम्बू के द्वार पर याजक
के पास लाना चाहिए। 30तब याजक को एक पक्षी
पापबलि के रूप में तथा दूसरे को होमबलि के रूप में
चढ़ाना चाहिए। इस प्रकार वह याजक उसे यहोवा के
सामने उसके स्राव से उत्पन्न अशुद्धि से शुद्ध करेगा।

31"इसलिए तुम इस्राएल के लोगों को अशुद्ध होने
और उनको अशुद्धि से दूर रहने के बारे में सावधान
करना। यदि तुम लोगों को सावधान नहीं करते तो वे
मेरे पवित्र तम्बू को अशुद्ध कर सकते हैं और तब उन्हें
मरना होगा!"

32ये नियम धात त्याग करने वाले लोगों के लिए हैं।
ये नियम उन व्यक्तियों के लिए हैं जो वीर्य के शरीर से
बाहर निकलने से अशुद्ध होते हैं 33और ये नियम उन
स्त्रियों के लिए हैं जो अपने मासिकधर्म के रक्त स्राव के
समय अशुद्ध होती हैं और वे नियम उन पुरुषों के लिए
हैं जो अशुद्ध स्त्रियों के साथ सोने से अशुद्ध होते हैं।

पाप से निस्तार का दिन

16 हारून के दो पुत्र यहोवा को सुगन्ध भेंट चढ़ाते
समय मर गए थे। फिर यहोवा ने मूसा से कहा,
2"अपने भाई हारून से बात करो कि वह जब चाहे तब
पर्दे के पीछे महापवित्र स्थान में नहीं जा सकता है। उस
पर्दे के पीछे जो कमरा है उसमें पवित्र सन्दूक रखा है।
उस पवित्र सन्दूक के ऊपर उसका विशेष ढक्कन लगा
है। उस विशेष ढक्कन के ऊपर एक बादल में मैं प्रकट
होता हूँ। यदि हारून उस कमरे में जाता है तो वह मर
जायेगा!

3"पाप से निस्तार के दिन पवित्र स्थान में जाने के
पहले हारून को पापबलि के रूप में एक बछड़ा और
होमबलि के लिए एक मेढ़ा भेंट करना चाहिए। 4हारून
अपने पूरे शरीर को पानी डालकर धोएगा। तब हारून
इन वस्त्रों को पहनेगा: हारून पवित्र सन के वस्त्र
पहनेगा। सन के निचले वस्त्र शरीर से सटे होगें। उसकी
पेटी सन का पटुका होगी। हारून सन की पगड़ी बांधेगा।
ये पवित्र वस्त्र है।

5"हारून को इस्राएल के लोगों से दो बकरे पापबलि
के रूप में और एक मेढ़ा होमबलि के लिए लेना चाहिए।
6तब हारून बैल की पापबलि चढ़ाएगा। यह पापबलि
उसके अपने लिए और उसके परिवार के लिए है। तब
हारून वह उपासना करेगा जिसमें वह और उसका
परिवार शुद्ध होंगे।

7"इसके बाद हारून दो बकरे लेगा और मिलापवाले
तम्बू के द्वार पर यहोवा के सामने लाएगा। 8हारून दोनों
बकरों के लिए चिठ्ठी डालेगा। एक चिठ्ठी यहोवा के
लिए होगी। दूसरी चिठ्ठी अजाजेल के लिए होगी। 9"तब
हारून चिठ्ठी डालकर यहोवा के लिए चुने गए बकरे
की भेंट चढ़ाएगा। हारून को इस बकरे को पापबलि के
लिये चढ़ाना चाहिए। 10किन्तु चिठ्ठी डालकर अजाजेल
के लिए चुना गया बकरा यहोवा के सामने जीवित लाया
जाना चाहिए। याजक उसे शुद्ध बनाने के लिये उपासना
करेगा। तब यह बकरा मरुभूमि में अजाजेल के पास
भेजा जाएगा।

11"तब हारून अपने लिए बैल को पापबलि के रूप में
चढ़ाएगा। हारून अपने आप को और अपने परिवार
को शुद्ध करेगा। हारून बैल को अपने लिए पापबलि
के रूप में मारेगा। 12तब उसे आग के लिए एक तसला
वेदी के अंगारों से भरा हुआ यहोवा के सामने लाना
चाहिए। हारून दो मुट्ठी वह मधुर सुगन्धित धूप लेगा
जो बारीक पीसी गई है। हारून को पर्दे के पीछे कमरे में
उस सुगन्धि को लाना चाहिए। 13हारून को यहोवा के
सामने सुगन्धि को आग में डालना चाहिए। तब सुगन्धित
धूप के धुएँ का बादल साक्षीपत्र के ऊपर के विशेष
ढक्कन को ढक लेगा। इस प्रकार हारून नहीं मरेगा।
14साथ ही साथ हारून को बैल का कुछ खून लेना
चाहिए और उसे अपनी उँगली से उस विशेष ढक्कन
के पूर्व की ओर छिड़कना चाहिए। इस के सामने वह
अपनी उँगली से सात बार खून छिड़केगा।

15“तब हारून को लोगों के लिए पापबलि स्वरूप
बकरे को मारना चाहिए। हारून को बकरे का खून पर्दे
के पीछे कमरे में लाना चाहिए। हारून को बकरे के
खून से वैसा ही करना चाहिए जैसा बैल के खून से
उसने किया। हारून को उस ढक्कन पर और ढक्कन
के सामने बकरे का खून छिड़कना चाहिए। 16ऐसा
अनेक बार हुआ जब इस्राएल के लोग अशुद्ध हुए।
इसलिए हारून इस्राएल के लोगों के अपराध और पाप
से महापवित्र स्थान को शुद्ध करने के लिए उपासना
करेगा। हारून को ये काम क्यों करना चाहिए? क्योंकि
मिलापवाला तम्बू अशुद्ध लोगों के बीच में स्थित है।
17जिस समय हारून महापवित्र स्थान को शुद्ध करे,
उस समय कोई व्यक्ति मिलापवाले तम्बू में नहीं होना
चाहिए। किसी व्यक्ति को उसके भीतर तब तक नहीं
जाना चाहिए जब तक हारून बाहर न आ जाय। इस
प्रकार, हारून अपने को और अपने परिवार को शुद्ध
करेगा और तब इस्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करेगा।
18तब हारून उस वेदी पर जाएगा जो यहोवा के सामने
है। हारून वेदी को शुद्ध करेगा। हारून बैल का कुछ
खून और कुछ बकरे का खून लेकर वेदी के कोनों
पर चारों ओर लगाएगा। 19तब हारून कुछ खून अपनी
उँगली से वेदी पर सात बार छिड़केगा। इस प्रकार हारून
इस्राएल के लोगों के सभी पापों से वेदी को शुद्ध और
पवित्र करेगा।

20“हारून महापवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू तथा
वेदी को पवित्र बनाएगा। इन कामों के बाद हारून
यहोवा के पास बकरे को जीवित लाएगा। 21हारून
अपने दोनों हाथों को जीवित बकरे के सिर पर रखेगा।
तब हारून बकरे के ऊपर इस्राएल के लोगों के
अपराध और पाप को कबूल करेगा। इस प्रकार हारून
लोगों के पापों को बकरे के सिर पर डालेगा। तब वह
बकरे को दूर मरुभूमि में भेजेगा। एक व्यक्ति बगल में
बकरे को ले जाने के लिए खड़ा रहेगा। 22इस प्रकार
बकरा सभी लोगों के पाप अपने ऊपर सूनी मरुभूमि में
ले जाएगा। जो व्यक्ति बकरे को ले जाएगा वह मरुभूमि
में उसे खुला छोड़ देगा।

23“तब हारून मिलापवाले तम्बू में जाएगा। वह सन
के उन वस्त्रों को उतारेगा जिन्हें उसने महापवित्र
स्थान में जाते समय पहना था। उसे उन वस्त्रों को
वहीं छोड़ना चाहिए। 24वह अपने पूरे शरीर को पवित्र
स्थान में पानी डालकर धोएगा। तब वह अपने अन्य
विशेष वस्त्रों को पहनेगा। वह बाहर आएगा और अपने
लिये होमबलि और लोगों के लिये होमबलि चढ़ाएगा।
वह अपने को तथा लोगों को पापों से मुक्त
करेगा। 25तब वह वेदी पर पापबलि की चर्बी को
जलाएगा। 26जो व्यक्ति बकरे को अजाजेल के पास ले
जाए, उसे अपने वस्त्र तथा अपने पूरे शरीर को पानी
डालकर धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ
सकता है।

27“पापबलि के बैल और बकरे को डेरे के बाहर ले
जाना चाहिए। उन जानवरों का खून पवित्र स्थान में
पवित्र चीज़ों को शुद्ध करने के लिए लाया गया था।
याजक उन जानवरों का चमड़ा, शरीर और शरीर मल
आग में जलाएगा। 28तब उन चीज़ों को जलाने वाले
व्यक्ति को अपने वस्त्र और पूरे शरीर को पानी डालकर
धोना चाहिए। उसके बाद वह व्यक्ति डेरे में आ सकता
है।

29यह नियम तुम्हारे लिए सदैव रहेगा: सातवें महीने
के दसवें दिन तुम्हें उपवास करना चाहिए। तुम्हें कोई
काम नहीं करना चाहिए। तुम्हारे साथ रहने वाले यात्री
या विदेशी भी कोई काम नहीं कर सकेंगे। 30क्यों?
क्योंकि इस दिन याजक तुम्हें शुद्ध करता है और
तुम्हारे पापों को धोता है। तब तुम यहोवा के लिए शुद्ध
होंगे। 31यह दिन तुम्हारे लिए आराम करने का विशेष
दिन है। तुम्हें इस दिन उपवास करना चाहिए। यह
नियम सदैव के लिए होगा।

32“सो वह पुरुष जो महायाजक बनने के लिए अभिषिक्त
है, वस्तुओं को शुद्ध करने की उपासना को सम्पन्न
करेगा। यह वही पुरुष है जिसे उसके पिता की मृत्यु के
बाद महायाजक के रूप में सेवा के लिए नियुक्त किया
गया है। उस याजक को सन के पवित्र वस्त्र धारण
करने चाहिए। 33उसे पवित्र स्थान, मिलापवाले तम्बू
और वेदी को शुद्ध करना चाहिए और उसे याजक और
इस्राएल के सभी लोगों को शुद्ध करना चाहिए। 34इस्राएल
के लोगों को शुद्ध करने का यह नियम सदैव रहेगा।
इस्राएल के लोगों के पाप के निस्तार के लिए तुम उन
क्रियाओं को वर्ष में एक बार करोगे।”

इसलिए उन्होंने वही किया जो यहोवा ने मूसा को
आदेश दिया था।

जानवरों को मारने और खाने के नियम

17 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“हारून, उसके पुत्रों
और इस्राएल के सभी लोगों से कहो। उनको
कहो कि यहोवा ने यह आदेश दिया है: 3कोई इस्राएली
व्यक्ति किसी बैल या मेमने या बकरे को डेरे में या डेरे
के बाहर मार सकता है। 4वह व्यक्ति उस जानवर को
मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाएगा। उसे उस जानवर
का एक भाग यहोवा को भेंट के रूप में देना चाहिए।
उस व्यक्ति ने खून बहाया है, मारा है इसलिए उसे
यहोवा के पवित्र तम्बू में भेंट ले जानी चाहिए। यदि वह
जानवर के भाग को भेंट के रूप में यहोवा को नहीं ले
जाता तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।
5यह नियम इसलिए है कि लोग मेलबलि यहोवा को
अर्पित करें। इस्राएल के लोगों को उन जानवरों को

लाना चाहिए जिन्हें वे मैदानों में मारते हैं। उन्हें उन
जानवरों को मिलापवाले तम्बू के द्वार पर लाना चाहिए।
उन्हें उन जानवरों को याजक के पास लाना चाहिए।
6तब याजक उन जानवरों का खून मिलापवाले तम्बू के
द्वार के समीप यहोवा की वेदी तक फेंकेगा और याजक
उन जानवरों की चर्बी को वेदी पर जलाएगा। यह यहोवा
के लिए मधुर सुगन्ध होगी। 7उन्हें आगे अब कोई भी
भेंट ‘बकरे की मूर्तियों’ को नहीं चढ़ानी चाहिए। ये लोग
उन अन्य देवताओं के पीछे लग चुके हैं। इस प्रकार
उन्होंने वेश्याओं जैसा काम किया है। ये नियम सदैव ही
रहेंगे!

8“लोगों से कहो: इस्राएल का कोई नागरिक, या
कोई यात्री, या कोई विदेशी जो तुम लोगों के बीच
रहता है, होमबलि या बलि चढ़ा सकता है। 9उस
व्यक्ति को वह बलि मिलापवाले तम्बू के द्वार पर ले
जानी चाहिए और उसे यहोवा को चढ़ानी चाहिए। यदि
वह व्यक्ति ऐसा नहीं करता तो उसे अपने लोगों से
अलग कर देना चाहिए।

10“मैं (परमेश्वर) हर ऐसे व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा
जो खून खाता है। चाहे वह इस्राएल का नागरिक हो या
वह तुम्हारे बीच रहने वाला कोई विदेशी हो। मैं उसे
उसके लोगों से अलग करूँगा। 11क्यों? क्योंकि प्राणी
का जीवन खून में है। मैंने तुम्हें उस खून को वेदी पर
डालने का नियम दिया है। तुम्हें अपने को शुद्ध करने
के लिए यह करना चाहिए। तुम्हें वह खून उस जीवन
के बदले में मुझे देना होगा जो तुम लेते हो। 12इसलिए मैं
इस्राएल के लोगों से कहता हूँ: तुममें से कोई खून नहीं
खा सकता और न ही तुम्हारे बीच रहने वाला कोई
विदेशी खून खा सकता है। 13यदि कोई व्यक्ति किसी
जंगली जानवर या पक्षी को पकड़ता है जिसे खाया जा
सके तो उस व्यक्ति को खून जमीन पर बहा देना चाहिए
और मिट्टी से उसे ढक देना चाहिए। चाहे वह व्यक्ति
इस्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच रहनेवाला
विदेशी। 14तुम्हें यह क्यों करना चाहिए? क्योंकि यदि
खून तब भी माँस में है तो उस जानवर का प्राण भी माँस
में है। इसलिए मैं इस्राएल के लोगों को आदेश देता हूँ:
उस माँस को मत खाओ जिसमें खून हो! कोई भी
व्यक्ति जो खून खाता है अपने लोगों से अलग कर दिया
जाए।

15यदि कोई व्यक्ति अपने आप मरे जानवर या किसी
दूसरे जानवर द्वारा मारे गए जानवर को खाता है तो वह
व्यक्ति सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा। उस व्यक्ति को अपने
वस्त्र और अपना पूरा शरीर पानी से धोना चाहिए। चाहे
वह व्यक्ति इस्राएल का नागरिक हो या तुम्हारे बीच
रहने वाला कोई विदेशी। 16यदि वह व्यक्ति अपने वस्त्रों
को नहीं धोता और न ही नहाता है तो वह पाप करने
का अपराधी होगा।”

यौन सम्बन्धों के बारे में नियम

18 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“इस्राएल के लोगों से
कहो: मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 3यहाँ
आने के पहले तुम लोग मिस्र में थे। तुम्हें वह नहीं
करना चाहिए जो वहाँ हुआ करता था! मैं तुम लोगों को
कनान ले जा रहा हूँ। तुम लोगों को वह नहीं करना है
जो उस देश में किया जाता है! 4तुम्हें मेरे नियमों का
पालन करना चाहिए और मेरे नियमों के अनुसार
चलना चाहिए। उन नियमों के पालन में सावधान रहो!
क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।

5इसलिए तुम्हें मेरे नियमों और निर्णयों का पालन
करना चाहिए। यदि कोई व्यक्ति मेरे विधियों और नियमों
का पालन करता है तो वह जीवित रहेगा! मैं यहोवा हूँ!

6“तुम्हें अपने निकट सम्बन्धियों से कभी यौन सम्बन्ध
नहीं करना चाहिए! मैं यहोवा हूँ!

7“तुम्हें अपने पिता का अपमान नहीं करना चाहिए
अर्थात् तुम्हें अपनी माता के साथ यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। 8तुम्हें अपनी विमाता से भी यौन सम्बन्ध
नहीं करना चाहिए। पिता की पत्नी से यौन सम्बन्ध
केवल तुम्हारे पिता के लिए है।

9“तुम्हें अपने पिता या माँ की पुत्री अर्थात् अपनी
बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। इससे अन्तर
नहीं पड़ता कि तुम्हारी उस बहन का पालन पोषण
तुम्हारे घर हुआ या किसी अन्य जगह।

10“तुम्हें अपने नाती पोतियों से यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। वे बच्चे तुम्हारे अंग हैं!*

11“यदि तुम्हारे पिता और उनकी पत्नी की कोई पुत्री
है* तो वह तुम्हारी बहन है। तुम्हें उसके साथ यौन
सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

12“अपने पिता की बहन के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध
नहीं होना चाहिए। वह तुम्हारे पिता के गोत्र की है।
13तुम्हें अपनी माँ की बहन के साथ यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। वह तुम्हारी माँ के गोत्र की है।

14तुम्हें अपने पिता के भाई का अपमान नहीं करना
चाहिये अर्थात् उसकी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध के
लिए नहीं जाना चाहिए।

15“तुम्हें अपनी पुत्रवधू के साथ यौन सम्बन्ध नहीं
करना चाहिए। वह तुम्हारे पुत्र की पत्नी है। तुम्हें उसके
साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

16“तुम्हें अपने भाई की वधू के साथ यौन सम्बन्ध
नहीं करना चाहिये। यह अपने भाई के साथ यौन

वे बच्चे तुम्हारे अंग है शाब्दिक “उनकी नग्नता तुम्हारी नग्नता है।”

यदि ... पुत्री है इसका तात्पर्य यह है कि यह आवश्यक नहीं कि पिता की पत्नी आवश्यक रूप से व्यक्ति की माँ हो, किन्तु वह व्यक्ति और पिता की पुत्री भाई बहन हैं।

सम्बन्ध रखने जैसा होगा। केवल तुम्हारा भाई अपनी पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध रख सकता है।*

17"तुम्हें किसी स्त्री और उसकी पुत्री के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए और तुम्हें इस स्त्री की पोती से यौन सम्बन्ध नहीं रखना चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह पोती उस स्त्री के पुत्र की या पुत्री की बेटी है। उसकी पोतियाँ उसके गोत्र की हैं। उनके साथ यौन सम्बन्ध करना अनुचित है।

18"जब तक तुम्हारी पत्नी जीवित है, तुम्हें उसकी बहन को दूसरी पत्नी नहीं बनाना चाहिए। यह बहनों को परस्पर शत्रु बना देगा। तुम्हें अपनी पत्नी की बहन से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए।

19"तुम्हें किसी स्त्री के पास उसके मासिकधर्म के समय यौन सम्बन्ध के लिए नही जाना चाहिए। वह इस समय अशुद्ध है।

20"तुम्हें अपने पड़ोसी की पत्नी से यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह तुम्हें केवल अशुद्ध बनाएगा!

21"तुम्हें अपने किसी बच्चे को आग द्वारा मोलेक को भेंट नहीं चढ़ाना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यही दिखाते हो कि तुम अपने यहोवा के नाम का सम्मान नहीं करते! मैं यहोवा हूँ।

22"तुम्हें किसी पुरुष के साथ वैसा ही यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए जैसा किसी स्त्री के साथ किया जाता है। यह भयंकर पाप है!

23"किसी जानवर के साथ तुम्हारा यौन सम्बन्ध नहीं होना चाहिए। यह केवल तुम्हें घिनौना बना देगा! स्त्री को भी किसी जानवर के साथ यौन सम्बन्ध नहीं करना चाहिए। यह प्रकृति के विरुद्ध है!

24"इन अनुचित कामों में से किसी से अपने को अशुद्ध न करो! मैं उन जातियों को उनके देश से बाहर कर रहा हूँ और मैं उनकी धरती तुम को दे रहा हूँ! क्यों? क्योंकि वे लोग वैसे भयंकर पाप करते हैं! 25इसलिए वह देश अशुद्ध हो गया है! वह देश अब उन कामों से ऊब गया है और वह देश उसमें रहने वालों को बाहर निकाल फेंक रहा है!*

26"इसलिए तुम मेरे नियमों और निर्णयों का पालन करोगे। तुम्हें उन में से कोई भयंकर पाप नहीं करना चाहिए। ये नियम इस्राएल के नागरिकों और जो तुम्हारे बीच रहते हैं, उनके लिए है। 27जो लोग तुम से पहले वहाँ रहे उन्होंने वे सभी भयंकर काम किए। जिससे वह धरती गन्दी हो गयी। 28यदि तुम भी वही काम करोगे तो तुम धरती को गंदा बनाओगे। यह तुम लोगों को वैसे ही निकाल बाहर करेगी, जैसे तुमसे पहले रहने वाली जातियों को किया गया। 29यदि कोई व्यक्ति वैसे भयंकर पाप करता है तो उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए। 30अन्य लोगों ने उन भयंकर पापों को किया है। किन्तु मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। तुम्हें उन भयंकर पापों में से कोई भी नहीं करना चाहिए। उन भयंकर पापों से अपने को अशुद्ध मत बनाओ। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ।"

इस्राएल परमेश्वर का है

19 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के सभी लोगों से कहो: कि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ मैं पवित्र हूँ! इसलिए तुम्हें पवित्र होना चाहिए! 3तुम में से हर एक व्यक्ति को अपने माता पिता का सम्मान करना चाहिए और मेरे विश्राम के विशेष दिनों को मानना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

4"मूर्तियों की उपासना मत करो। अपने लिए देवताओं की मूर्तियाँ धातु गला कर मत बनाओ। मैं तुम लोगों का परमेश्वर यहोवा हूँ!

5"जब तुम यहोवा को मेलबलि चढ़ाओ तो तुम उसे ऐसे चढ़ाओ कि तुम यहोवा द्वारा स्वीकार किए जा सको। 6तुम इसे चढ़ाने के दिन खा सकोगे और अगले दिन भी। किन्तु यदि बलि का कुछ भाग तीसरे दिन भी बच जाए तो उसे तुम्हें आग में जला देना चाहिए। 7किसी भी बलि को तीसरे दिन नहीं खाना चाहिए। यह अशुद्ध है। यह स्वीकार नहीं होगी। 8यदि कोई व्यक्ति ऐसा करता है तो वह अपराधी होगा! क्यों? क्योंकि उसने यहोवा की पवित्र चीज़ों का सम्मान नहीं किया। उस व्यक्ति को अपने लोगों से अलग कर दिया जाना चाहिए।

9"जब तुम कटनी के समय अपनी फ़सल काटो तो तुम सब ओर से खेत के कोनों तक मत काटो और यदि अन्न जमीन पर गिर जाता है तो तुम्हें उसे इकट्ठा नहीं करना चाहिए। 10अपने अँगूर के बाग के सारे अँगूर न तोड़ो और जो जमीन पर गिर जाएँ उन्हें न उठाओ। क्यों? क्योंकि तुम्हें वे चीज़ें गरीब लोगों और जो तुम्हारे देश से यात्रा करेंगे, उनके लिए छोड़नी चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

11"तुम्हें चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें लोगों को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें आपस में झूठ नहीं बोलना चाहिए। 12तुम्हें मेरे नाम पर झूठा वचन नहीं देना चाहिए। यदि तुम ऐसा करते हो तो तुम यह दिखाते हो कि तुम अपने परमेश्वर के नाम का सम्मान नहीं करते हो। मैं यहोवा हूँ!

13"तुम्हें अपने पड़ोसी को धोखा नहीं देना चाहिए। तुम्हें उसकी चोरी नहीं करनी चाहिए। तुम्हें मजदूर की मजदूरी पूरी रात, सवेरे तक नहीं रोकनी चाहिए।*

तुम्हारा भाई ... है "वह तुम्हारे भाई की नग्नता है।"

निकाल फेंक रहा है उल्टी कर रहा है।

तुम्हें मजदूर ... रोकनी चाहिये इससे यह पता चलता है कि मजदूरी पर रखे गए मजदूर को उस दिन किए गए काम की मजदूरी उसी दिन दी जाती थी।

14“तुम्हें किसी बहरे आदमी को अपशब्द नहीं कहना
चाहिए। तुम्हें किसी अन्धे को गिराने के लिए उसके
सामने कोई चीज़ नहीं रखनी चाहिए। किन्तु तुम्हें
अपने परमेश्वर यहोवा का सम्मान करना चाहिए। मैं
यहोवा हूँ!

15“तुम्हें न्याय करने में ईमानदार होना चाहिए। न तो
तुम्हें ग़रीब के साथ विशेष पक्षपात करना चाहिए और
न ही बड़े एवं धनी लोगों के प्रति कोई आदर दिखाना
चाहिए। तुम्हें अपने पड़ोसी के साथ न्याय करते समय
ईमानदार होना चाहिए। 16तुम्हें अन्य लोगों के विरुद्ध
चारों ओर अफवाहें फैलाते हुए नहीं चलना चाहिए।
ऐसा कुछ न करो जो तुम्हारे पड़ोसी के जीवन को
ख़तरे में डाले। मैं यहोवा हूँ!

17“तुम्हें अपने हृदय में अपने भाईयों से घृणा नहीं
करनी चाहिए। यदि तुम्हारा पड़ोसी कुछ बुरा करता है
तो इसके बारे में उसे समझाओ। किन्तु उसे क्षमा
करो।! 18लोग, जो तुम्हारा बुरा करें, उसे भूल जाओ।
उससे बदला लेने का प्रयत्न न करो। अपने पड़ोसी से
वैसे ही प्रेम करो जैसे अपने आप से करते हो। मैं
यहोवा हूँ!

19“तुम्हें मेरे नियमों का पालन करना चाहिए। दो
जातियों के पशुओं को प्रजनन के लिए आपस में मत
मिलाओ। तुम्हें खेत में दो प्रकार के बीज नहीं बोने
चाहिए। तुम्हें दो प्रकार की चीज़ों के मिलावट से बने
वस्त्रों को नहीं पहनना चाहिए।

20“यह हो सकता है कि किसी दूसरे व्यक्ति की दासी
से किसी व्यक्ति का यौन सम्बन्ध हो। यदि यह दासी न
तो खरीदी गई है न ही स्वतन्त्र कराई गई है तो उन्हें
दण्ड दिया जाना चाहिए। किन्तु वे मारे नहीं जाएंगे।
क्यों? क्योंकि स्त्री स्वतन्त्र नहीं थी। 21उस व्यक्ति को
अपने अपराध के लिए मिलापवाले तम्बू के द्वार पर
यहोवा को बलि चढ़ानी चाहिए। व्यक्ति को एक मेढ़ा
दोषबलि के रूप में लाना चाहिए। 22याजक उस व्यक्ति
के पापों के भुगतान करने के लिए उपासना करेगा।
याजक यहोवा को दोषबलि के रूप में मेढ़े को चढ़ाएगा।
यह व्यक्ति के किए हुए पापों के लिए होगा। तब व्यक्ति
अपने किए पाप के लिए क्षमा किया जाएगा।

23“भविष्य में तुम अपने प्रदेश में प्रवेश करोगे। उस
समय भोजन के लिए तुम अनेकों प्रकार के पेड़ लगाओगे।
पेड़ लगाने के बाद पेड़ के किसी फल का उपयोग
करने के लिए तुम्हें तीन वर्ष तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।
तुम्हें उससे पहले के फल का उपयोग नहीं करना
चाहिए। 24चौथे वर्ष उस पेड़ के फल यहोवा के होंगे।
यह यहोवा की स्तुति के लिए पवित्र भेंट होगी। 25तब,
पाँचवें वर्ष तुम उस पेड़ का फल खा सकते हो और पेड़
तुम्हारे लिए अधिक से अधिक फल पैदा करेगा। मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

26“तुम्हें कोई चीज़, उसमें खून रहते तक नहीं खानी
चाहिए। तुम्हें भविष्यवाणी करने के लिये जादू या शगुन
आदि का उपयोग नहीं करना चाहिए।

27“तुम्हें अपने सिर के बगल के बढ़े बालों को कटवाना
नहीं चाहिए। तुम्हें अपनी दाढ़ी के किनारे नहीं कटवाने
चाहिए। 28किसी मरे व्यक्ति की याद को बनाए रखने
के लिए तुम्हें अपने शरीर को काटना नहीं चाहिए।
तुम्हें अपने ऊपर कोई चिन्ह गुदवाना नहीं चाहिए। मैं
यहोवाहूँ!

29“तुम अपनी पुत्री को वेश्या मत बनने दो। इससे
केवल यह पता चलता है कि तुम उसका आदर नहीं
करते। तुम अपने देश में स्त्रियों को वेश्याएँ मत बनने
दो। तुम अपने देश को इस प्रकार के पापों से मत भर
जानेदो।

30“तुम्हें मेरे विश्राम के विशेष दिनों में काम नहीं
करना चाहिए। तुम्हें मेरे पवित्र स्थान का सम्मान करना
चाहिए। मैं यहोवा हूँ!”31ओझाओं तथा भूतसिद्धियों के
पास सलाह के लिए मत जाओ। उनके पास तुम मत
जाओ, वे केवल तुम्हें अशुद्ध बनाएँगे। मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ!”

32“बूढ़े लोगोका सम्मान करो। जब वे कमरे में आएँ
तो खड़े हो जाओ। अपने परमेश्वर का सम्मान करो।
मैं यहोवा हूँ!”

33“अपने देश में रहने वाले विदेशियों के साथ बुरा
व्यवहार मत करो! 34तुम्हें विदेशियों के साथ वैसा ही
व्यवहार करना चाहिए जैसा तुम अपने नागरिकों के
साथ करते हो। तुम विदेशियों से वैसा प्यार करो जैसा
अपने से करते हो। क्यों? क्योंकि तुम भी एक समय
मिस्र में विदेशी थे। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!
35तुम्हें न्याय करते समय लोगों के प्रति ईमानदार होना
चाहिए। तुम्हें चीज़ों के नापने और तौलने में ईमानदार
होना चाहिए। 36तुम्हारी टोकरियाँ ठीक माप की होनी
चाहिए। तुम्हारे नापने के पात्रों में द्रव की उचित मात्रा
आनी चाहिए। तुम्हारे तराजू और तुम्हारे बाट चीज़ों को
ठीक तौलने वाले होने चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर
यहोवा हूँ! मैं तुम्हें मिस्र देश से बाहर लाया! 37तुम्हें मेरे
सभी नियमों और निर्णयों को याद रखना चाहिएऔर
तुम्हें उनका पालन करना चाहिए। मैं यहोवा हूँ!”

मूर्ति पूजा के विरुद्ध चेतावनी

20 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“तुम्हें इस्राएल के
लोगों से यह भी कहना चाहिए: तुम्हारे देश में
कोई व्यक्ति अपने बच्चों में से किसी को झूठे देवता
मोलेक को दे सकता है। उस व्यक्ति को मार डालना
चाहिए। इससे अन्तर नहीं पड़ता कि वह इस्राएल का
नागरिक है या इस्राएल में रहने वाला कोई विदेशी है,
तुम्हें उसे पत्थर फेंक-फेंक कर मार डालना चाहिए।

3मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा। मैं उसे उसके लोगों
से अलग करूँगा। क्यों? क्योंकि उसने अपने बच्चों को
मोलेक को दिया। उसने यह प्रकट किया कि वह मेरे
पवित्र नाम का सम्मान नहीं करता। उसने मेरे पवित्र
स्थान को अशुद्ध किया। 4सम्भव है साधारण लोग उस
व्यक्ति की उपेक्षा करे। सम्भव है वे उस व्यक्ति को न
मारे जिसने बच्चों को मोलेक को दिया है। 5किन्तु मैं
उस व्यक्ति और उसके परिवार के विरुद्ध होऊँगा। मैं
उसे उसके लोगों से अलग करूँगा। मैं किसी भी ऐसे
व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा जो मेरे प्रति
विश्वास नहीं रखता और मोलेक का अनुसरण करता
है। 6मैं उस व्यक्ति के विरुद्ध होऊँगा जो किसी ओझा
और भूतसिद्धि के पास सलाह के लिए जाता है। वह
व्यक्ति मुझसे विश्वासघात करता है। इसलिए मैं उस
व्यक्ति को उसके लोगों से अलग करूँगा। 7विशेष
बनो। अपने को पवित्र बनाओ। क्यों? क्योंकि मैं पवित्र
हूँ! मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। 8मेरे आज्ञाओं
का पालन करो और उन्हें याद रखो। मैं यहोवा हूँ और
मैंने तुम्हें अपना विशेष लोग बनाया है। 9यदि कोई
व्यक्ति अपने माता–पिता के अनिष्ट की कामना करता
है तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए। उसने अपने
पिता या माँ का अनिष्ट चाहा है, इसलिए उसे दण्ड देना
चाहिए।*

यौन पापों के दण्ड

10"यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोसी की पत्नी के साथ
यौन सम्बन्ध करता है तो स्त्री और पुरुष दोनों अनैतिक
सम्बन्ध के अपराधी हैं। इसलिए स्त्री और पुरुष दोनों
को मार डालना चाहिए। 11यदि कोई व्यक्ति अपनी
विमाता से यौन सम्बन्ध करता है तो उस व्यक्ति को मार
डालना चाहिए। उस व्यक्ति को और उसकी विमाता
दोनों को मार डालना चाहिए। उस व्यक्ति ने अपने पिता
के विरूद्ध पाप किया है।*

12"यदि कोई व्यक्ति अपनी पुत्रवधू के साथ यौनसम्बन्ध
करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए। उन्होंने बहुत
बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना
चाहिए।

13"यदि कोई व्यक्ति किसी पुरुष के साथ स्त्री जैसा
यौन सम्बन्ध करता है तो दोनों को मार डालना चाहिए।
उन्होंने बहुत बुरा यौन पाप किया है। उन्हें दण्ड अवश्य
मिलना चाहिए।

14"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री और उसकी माँ के
साथ यौन सम्बन्ध करता है तो यह यौन पाप है। लोगों
को उस व्यक्ति तथा दोनों स्त्रियों को आग में जला देना
चाहिए। इस यौन पाप को अपने लोगों में मत होने दो।

15"यदि कोई व्यक्ति किसी जानवर से यौन सम्बन्ध
करे तो उस व्यक्ति को मार डालना चाहिए और तुम्हें
उस जानवर को भी मार देना चाहिए। 16यदि कोई स्त्री
किसी जानवर से यौन सम्बन्ध करती है तो तुम्हें उस
स्त्री और जानवर को मार डालना चाहिए। उन्हें अवश्य
मार देना चाहिए। उन्हें दण्ड अवश्य मिलना चाहिए।

17"यह एक भाई और उसकी बहन के लिए लज्जाजनक
है कि आपस में वे यौन सम्बन्ध करे।* उन्हें सामाजिक
रूप में दण्ड मिलना चाहिए। वे अपने लोगों से अलग
कर दिए जाने चाहिए। वह व्यक्ति जिसने अपनी बहन
के साथ यौन सम्बन्ध किया है, अपने पाप के लिए दण्ड
पाएगा।

18"यदि कोई व्यक्ति किसी स्त्री के साथ मासिकधर्म
के रक्त स्राव के समय यौन सम्बन्ध करेगा तो स्त्री पुरुष
दोनों को अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।
उन्होंने पाप किया है क्योंकि उसने खून के स्रोत को
उघाड़ा। 19तुम्हें यौन सम्बन्ध अपनी माँ की बहन या
पिता की बहन के साथ नहीं करना चाहिए। यह गोत्रीय
अनैतिकता का पाप है।* उन्हें उनके पाप के लिए
दण्ड मिलेगा।

20"किसी पुरुष को अपने चाचा/मामा की पत्नी के
साथ नहीं सोना चाहिए। यह व्यक्ति तथा उसकी चाची
व मामी को उनके पापों के लिए दण्ड मिलेगा। वे बिना
किसी सन्तान के मरेंगे।

21"किसी व्यक्ति के लिए यह बुरा है कि वह अपने
भाई की पत्नी के साथ यौन सम्बन्ध करे। उस व्यक्ति ने
अपने भाई के विरुद्ध पाप किया है।* उनकी कोई
सन्तान नहीं होगी।

22"तुम्हें मेरे सारे नियमों और निर्णयों को याद रखना
चाहिए और तुम्हें उनका पालन अवश्य करना चाहिए।
मैं तुम्हें तुम्हारे प्रदेश को ले जा रहा हूँ। तुम लोग उस
प्रदेश में रहोगे। यदि तुम लोग मेरे नियमों और निर्णयों
को मानते रहे तो वह प्रदेश तुम लोगों को निकाल
बाहर नहीं करेगा। 23मैं अन्य लोगों को उस प्रदेश को
छोड़ने के लिए विवश कर रहा हूँ। क्यों? क्योंकि उन
लोगों ने वे सभी पाप किए। मैं उन पापों से घृणा करता
हूँ। इसलिए जिस प्रकार वे लोग रहे, उस तरह तुम नहीं
रहोगे। 24मैंने कहा है कि तुम उनका प्रदेश प्राप्त करोगे।
मैं उनका प्रदेश तुमको दूँगा। यह तुम्हारा प्रदेश होगा।

उसने पिता … देना चाहिये शाब्दिक "उसने अपनी मौत आप बुलाई है।"

पिता … है शाब्दिक "उसने अपने पिता की नग्नता को उघाड़ा।"

आपस में यौन सम्बन्ध करें शाब्दिक "वह उसकी नग्नता को देखता है और वह उसकी नग्नता को देखती हैं।

गोत्रीय … पाप है गोत्र के व्यक्तियों के यौन सम्बन्ध का पाप।

उस व्यक्ति … पाप किया है शाब्दिक "उस व्यक्ति ने अपने भाई की नग्नता को उघाड़ा हैं।"

वह प्रदेश बहुत सुन्दर है। उसमें दूध व मधु की नदियाँ
बहती हैं। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

"मैंने तुम्हें विशेष बनाया है। मैंने तुम्हारे साथ अन्य
लोगों से भिन्न व्यवहार किया है। **25**इसलिए तुम्हें शुद्ध
जानवरों के साथ अशुद्ध जानवरों से भिन्न व्यवहार
करना चाहिए। तुम्हें शुद्ध पक्षियों के साथ अशुद्ध पक्षियों
से भिन्न व्यवहार करना चाहिए। उन में से किसी भी
अशुद्ध पक्षी, जानवर और कीट-पतंग को मत खाओ
जो भूमि पर रेंगते हैं। मैंने उन चीज़ों को अशुद्ध बनाया
है। **26**मैंने तुम्हें अपना विशेष जन बनाया है। इसलिए
तुम्हें मेरे लिए पवित्र होना चाहिए। क्यों? क्योंकि मैं
यहोवा हूँ और मैं पवित्र हूँ!

27"कोई पुरुष या कोई स्त्री जो ओझा हो या कोई
भूतसिद्धि हो, तो उन्हें निश्चय ही मार दिया जाना चाहिए।
लोगों को चाहिए कि वे उन्हें पत्थर मार–मार कर मार
दें। उन्हें मार ही दिया जाना चाहिए।"

याजकों के लिये नियम

21 यहोवा ने मूसा से कहा, "ये बातें हारून के
याजक पुत्रों से कहो: किसी मरे व्यक्ति को
छूकर याजक अपने को अशुद्ध न करें। **2** किन्तु यदि
मरा हुआ व्यक्ति उसके नजदीकी सम्बन्धियों में से कोई
है तो वह मृतक के शरीर को छू सकता है। याजक
अपने को अशुद्ध कर सकता है यदि मृत व्यक्ति उसकी
माँ, पिता, उसका पुत्र, या पुत्री, उसका भाई, **3**उसकी
अविवाहित बहन है। (यह बहन उसकी नजदीकी है
क्योंकि उसका पति नहीं है।) इसलिए याजक अपने को
अशुद्ध कर सकता है, यदि वह मरती है। **4**किन्तु याजक
अपने को अशुद्ध नहीं कर सकता, यदि मरा व्यक्ति
उसके दासों में से एक हो।*

5"याजक को शोक प्रकट करने के लिए अपने सिर
का मुण्डन नहीं कराना चाहिए। याजक को अपनी दाढ़ी
के सिरे नहीं कटवाने चाहिए। याजक को अपने शरीर
को कहीं भी काटना नहीं चाहिए। **6**याजक को अपने
परमेश्वर के लिए पवित्र होना चाहिए। इन्हे परमेश्वर
के नाम के लिए सम्मान दिखाना चाहिए। क्यों? क्योंकि
वे रोटी और आग द्वारा भेंट यहोवा को पहुँचाते हैं।
इसलिए उन्हें पवित्र होना चाहिए।

7"याजक परमेश्वर की सेवा विशेष ढंग से करता है।
इसलिए याजक को ऐसी स्त्री से विवाह नहीं करना
चाहिए जिसने किसी के साथ यौन सम्बन्ध किया हो।
याजक को किसी वेश्या, या किसी तलाक दी गई स्त्री
से विवाह नहीं करना चाहिए। **8**याजक परमेश्वर की
सेवा विशेष ढंग से करता है। इसलिए तुम्हें उसके साथ
विशेष व्यवहार करना चाहिए। क्यों? क्योंकि वह पवित्र
चीज़ें ले चलता है। वह पवित्र रोटी यहोवा को पहुँचाता
है और मैं पवित्र हूँ। मैं यहोवा हूँ, और मैं तुम्हें पवित्र
बनाता हूँ।

9"यदि याजक की पुत्री वेश्या बन जाती है तो वह
अपनी प्रतिष्ठा नष्ट करती है तथा अपने पिता को
कलंक लगाती है। इसलिए उसे जला देना चाहिए।

10"महायाजक अपने भाइयों में से चुना जाता था।
अभिषेक का तेल उसके सिर पर डाला जाता था। इस
प्रकार वह महायाजक के विशेष कर्त्तव्य के लिए नियुक्त
किया जाता था। वह महायाजक के विशेष वस्त्र को
पहनने के लिए चुना जाता था। इसलिए उसे अपने दुःख
को प्रकट करने वाला कोई काम समाज में नहीं करना
चाहिए। उसे अपने बाल जंगली ढंग से नहीं बिखेरने
चाहिए। उसे अपने वस्त्र नहीं फाड़ने चाहिए। **11**उसे मुर्दे
को छूकर अपने को अशुद्ध नहीं बनाना चाहिए। उसे
किसी मुर्दे के पास नहीं जाना चाहिए। चाहे वह उसके
अपने माता–पिता का ही क्यों न हो। **12**महायाजक को
परमेश्वर के पवित्र स्थान के बाहर नहीं जाना
चाहिए। यदि उसने ऐसा किया तो वह अशुद्ध हो जायेगा
और तब वह परमेश्वर के पवित्र स्थान को अशुद्ध
कर देगा। अभिषेक का तेल महायाजक के सिर पर
डाला जाता था। यह उसे शेष लोगों से भिन्न करता
था। मैं यहोवा हूँ!

13"महायाजक को विवाह करके उसे पत्नी बनाना
चाहिए जो कुवाँरी हो। **14**महायाजक को ऐसी स्त्री से
विवाह नहीं करना चाहिए जो किसी अन्य पुरुष के
साथ यौन सम्बन्ध रख चुकी हो। महायाजक को किसी
वेश्या, या तलाक दी गई स्त्री, या विधवा स्त्री से विवाह
नहीं करना चाहिए। महायाजक को अपने लोगों में से
एक कुवाँरी से विवाह करना चाहिए। **15**इस प्रकार लोग
उसके बच्चों को सम्मान देंगे। मैं, यहोवा ने, याजक को
विशेष काम के लिए भिन्न बनाया है।"

16यहोवा ने मूसा से कहा, **17**"हारून से कहो: यदि
तुम्हारे वंशजों की सन्तानों में से कोई अपने में कोई
दोष पाए तो उन्हें विशेष रोटी परमेश्वर तक नहीं ले
जानी चाहिए। **18**कोई व्यक्ति, जिसमें कोई दोष हो, याजक
का काम न करे और न ही मेरे पास भेंट लाए, ये लोग
याजक के रूप में सेवा नहीं कर सकते:

अन्धे व्यक्ति, लगंड़े व्यक्ति, विकृत चेहरे वाले व्यक्ति,
अत्यधिक लम्बी भुजा और टाँग वाले व्यक्ति।

19 टूटे पैर या हाथ वाले व्यक्ति, **20**कुबड़े व्यक्ति, बौने,
आँख में दोष वाले व्यक्ति,। खुजली और चर्म रोग वाले
व्यक्ति, बधिया किए गए नपुंसक व्यक्ति।

21यदि हारून के वंशजों मे से कोई कुछ दोष वाला है
तो वह यहोवा को आग से बलि नहीं चढ़ा सकता और
वह व्यक्ति विशेष रोटी अपने परमेश्वर को नहीं पहुँचा

किन्तु याजक … एक हो शाब्दिक "किन्तु स्वामी को अपने
लोगों के लिए अशुद्ध नहीं होना चाहिये।"

सकता। 22वह व्यक्ति याजकों के परिवार से है अत: वह
पवित्र रोटी खा सकता है। वह अति पवित्र रोटी भी खा
सकता है। 23किन्तु वह सबसे अधिक पवित्र स्थान में
पर्दे से होकर नहीं जा सकता और न ही वह वेदी के
पास जा सकता है। क्यों? क्योंकि उस में कुछ दोष है।
उसे मेरे पवित्र स्थान को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए।
मैं यहोवा उन स्थानों को पवित्र बनाता हूँ।"

24इसलिए मूसा ने ये बातें हारून से, हारून के पुत्रों
और इस्राएल के सभी लोगों से कही।

22 परमेश्वर यहोवा ने मूसा से कहा, 2"हारून
और उसके पुत्रों से कहो: इस्राएल के लोग जो
चीज़ें मुझे देंगे, वे पवित्र हो जाएंगी। वे मेरी हैं। इसलिए
तुम याजकों को वे चीज़ें नहीं लेनी चाहिए। यदि तुम उन
पवित्र चीज़ों का उपयोग करते हो तो तुम यह प्रकट
करोगे कि तुम मेरे पवित्र नाम का सम्मान नहीं करते।
मैं यहोवा हूँ। 3यदि तुम्हारे सभी वंशजो में से कोई व्यक्ति
उन चीज़ों को छूएगा तो वह अशुद्ध हो जाएगा। वह
व्यक्ति मुझसे अलग हो जाएगा। इस्राएल के लोगों ने वे
चीज़ें मुझे दीं। मैं यहोवा हूँ!

4"यदि हारून के किसी वंशज को बुरे चर्म रोगों में से
कोई रोग हो या उससे कुछ रिस रहा हो तो वह तब
तक पवित्र भोजन नहीं कर सकता जब तक वह शुद्ध
न हो जाय। यह नियम किसी भी याजक के लिए है जो
अशुद्ध हो। वह याजक किसी शव को छू कर या अपने
वीर्य पात से अशुद्ध हो सकता है। 5वह तब अशुद्ध हो
सकता है जब वह किसी रेंगने वाले जानवर को छूए।
वह तब अशुद्ध हो सकता है जब वह किसी अशुद्ध
व्यक्ति को छूए। इसका कोई महत्व नहीं कि उस व्यक्ति
को किस चीज़ ने अशुद्ध किया है। 6यदि कोई व्यक्ति
उन चीज़ों को छुएगा तो वह सन्ध्या तक अशुद्ध रहेगा।
उस व्यक्ति को पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं खाना
चाहिए। पानी डालकर नहाये बिना वह पवित्र भोजन
नहीं कर सकता है। 7वह सूरज के डूबने पर ही शुद्ध
होगा। तभी वह पवित्र भोजन कर सकता है। क्यों?
क्योंकि वह भोजन उसका है।

8"यदि याजक को कोई ऐसा जानवर मिलता है जो
स्वयं मर गया हो या किसी अन्य जानवर द्वारा मार दिया
गया हो तो उसे मरे जानवर को नहीं खाना चाहिए। यदि
वह व्यक्ति उस जानवर को खाता है तो वह अशुद्ध
होगा। मैं यहोवा हूँ!

9"याजक को मेरी सेवा के विशेष समय रखने होंगे।
उन्हें उन दिनों सावधान रहना होगा। उन्हें इस बात के
लिए सावधान रहना होगा कि वे पवित्र चीज़ों को अपवित्र
न बनाएँ। यदि वे सावधान रहेंगे तो मरेंगे नहीं। मैं यहोवा
ने उन्हें इस विशेष काम के लिए दूसरों से भिन्न किया
है। 10केवल याजकों के परिवार के व्यक्ति ही पवित्र
भोजन खा सकते हैं। याजक के साथ ठहरने वाला
अतिथि या मजदूर पवित्र भोजन में से कुछ भी नहीं
खाएगा। 11किन्तु यदि याजक अपने धन से किसी दास
को खरीदता है तो वह पवित्र चीज़ों में से कुछ को खा
सकता है और याजक के घर में उत्पन्न दास भी उस
पवित्र भोजन में से कुछ खा सकता है। 12किसी याजक
की पुत्री ऐसे व्यक्ति से विवाह कर सकती है जो याजक
न हो। यदि वह ऐसा करती है तो पवित्र भेंट में से कुछ
नहीं खा सकती। 13किसी याजक की पुत्री विधवा हो
सकती है, या उसे तलाक दिया जा सकता है। यदि
उसके भरन पोषण के लिए उसके बच्चे नहीं हैं और
वह अपने पिता के यहाँ लौटती है, जहाँ वह बचपन में
रही है तो वह पिता के भोजन में से कुछ खा सकती है।
किन्तु केवल याजक के परिवार के व्यक्ति ही इस
भोजन को खा सकते हैं।

14"कोई व्यक्ति भूल से कुछ पवित्र भोजन खा सकता
है। उस व्यक्ति को वह पवित्र भोजन याजक को देना
चाहिए और उसके अतिरिक्त उस भोजन के मूल्य का
पाँचवाँ भाग उसे और देना होगा।

15"इस्राएल के लोग यहोवा को भेंट चढ़ाएँगे। वे भेंटें
पवित्र हो जाती हैं। इसलिए याजक को उन पवित्र चीज़ों
को अपवित्र नहीं बनाना चाहिए। 16यदि याजक उन
चीज़ों को अपवित्र समझते हैं तो वे तब अपने पाप को
बढ़ाएँगे जब पवित्र भोजन को खाएँगे। मैं, यहोवा, उन्हें
पवित्र बनाता हूँ!"

17यहोवा ने मूसा से कहा, 18"हारून और उसके पुत्रों,
और इस्राएल के सभी लोगों से कहो: सम्भव है कि
इस्राएल का कोई नागरिक या कोई विदेशी कोई भेंट
लाना चाहे। सम्भव है उसने कोई विशेष वचन दिया हो,
और यह उसके लिए हो। या सम्भव है यह वह विशेष
भेंट हो जिसे वह व्यक्ति अर्पित करना चाहता हो। 19-20ये
ऐसी भेंटें हैं जिन्हें लोग इसलिए लाते हैं कि वे यहोवा को
भेंट चढ़ाना चाहते हैं। तुम्हें कोई ऐसी भेंट नहीं स्वीकार
करनी चाहिए जिसमें कोई दोष हो। मैं उस भेंट से
प्रसन्न नहीं होऊँगा! यदि भेंट एक साँड़ है, या एक भेड़
है, या एक बकरा है तो वह नर होना चाहिए और इसमें
कोई दोष नहीं होना चाहिए।

21"कोई व्यक्ति यहोवा को मेलबलि चढ़ा सकता है।
वह मेलबलि उस व्यक्ति द्वारा दिए गए किसी वचन के
लिए भेंट के रूप में हो सकती है या यह कोई स्वत:
प्रेरित भेंट हो सकती है जिसे वह व्यक्ति यहोवा को
चढ़ाना चाहता है। यह बैल या मेढ़ा हो सकता है। किन्तु
वह स्वस्थ तथा दोष रहित होना चााहिए। 22तुम्हें यहोवा
को ऐसा कोई जानवर नहीं भेंट करना चाहिए जो अन्धा
हो या जिसकी हड्डियाँ टूटी हों, या जो लंगड़ा हो, या
जिसके कोई घाव रिस रहा हो या बुरे चर्म रोग वाला
हो। तुम्हें यहोवा की वेदी की आग पर उस बीमार
जानवर की भेंट नहीं चढ़ानी चाहिए।

23“कभी-कभी किसी मवेशी या मेमने के पैर
अत्याधिक लम्बे हो सकते हैं या ऐसे पैर हो सकते हैं
जिनका विकास ठीक से न हुआ हो। यदि कोई व्यक्ति
ऐसे जानवर को यहोवा को विशेष भेंट के रूप में
चढ़ाना चाहता है तो वह स्वीकार किया जाएगा। किन्तु
इसे किसी व्यक्ति द्वारा दिए गए वचन के लिए किये जाने
वाले भुगतान के रूप में स्वीकार नहीं किया जाएगा।
24यदि जानवर के अण्ड कोष जख़्मी, कुचले हुए या
फाड़े हुए हों तो तुम्हें उस जानवर की भेंट यहोवा को
नहीं चढ़ानी चाहिए।

25“तुम्हें विदेशियों से बलि के लिए ऐसे जानवरों को
नहीं लेना चाहिए। क्यों? क्योंकि ये जानवर किसी प्रकार
चोट खाए हुए हैं। उनमें कुछ दोष है। ये स्वीकार नहीं
किए जाएंगे।”

26यहोवा ने मूसा से कहा, 27“जब कोई बछड़ा, या
भेड़, या बकरी पैदा हो तो अपनी माँ के साथ उसे सात
दिन रहने देना चाहिए। तब आठवें दिन और उसके
बाद यह जानवर यहोवा को आग द्वारा दी जाने वाली
बलि के रूप में स्वीकार किया जाएगा। 28किन्तु तुम्हें
उसी दिन उस जानवर और उसकी माँ को नहीं मारना
चाहिए। यही नियम गाय और भेड़ों के लिए है।

29“यदि तुम्हें यहोवा को कोई विशेष कृतज्ञता बलि
चढ़ानी हो तो तुम उस भेंट को चढ़ाने में स्वतन्त्र हो।
किन्तु यह इस प्रकार करो कि वह परमेश्वर को
प्रसन्न करे। 30तुम्हें पूरा जानवर उसी दिन खा लेना
चाहिए। तुम्हें अगली सुबह के लिए कुछ भी माँस नहीं
छोड़ना चाहिए। मै यहोवा हूँ! 31मेरे आदेशों को याद
रखो और उनका पालन करो। मैं यहोवा हूँ! 32मेरे
पवित्र नाम का सम्मान करो! मुझे इस्राएल के लोगों के
लिए बहुत विशिष्ट होना चाहिए। मैं, यहोवा ने तुम्हें
अपना विशेष लोग बनाया है। 33मैं तुम्हें मिस्र से लाया।
मैं तुम्हारा परमेश्वर बना। मैं यहोवा हूँ!”

विशेष पवित्र दिन

23 यहोवा ने मूसा के कहा, 2“इस्राएल के लोगों
से कहो: तुम यहोवा के निश्चित पर्वों को
पवित्र घोषित करो। ये मेरे विशेष पवित्र दिन हैं:

सब्त

3“छ: दिन काम करो। किन्तु सातवाँ दिन, आराम
का एक विशेष दिन या पवित्र मिलन का दिन होगा।
उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। यह
तुम्हारे सभी घरों में यहोवा का सब्त है।

फ़सह पर्व

4“ये यहोवा के चुने हुए पवित्र दिन हैं। उनके लिए
निश्चित समय पर तुम पवित्र सभाओ की घोषणा करोगे।
5यहोवा का फ़सह पर्व पहले महीने की चौदह तारीख
को सन्ध्या काल में है।

अख़मीरी मैदे के फुलकों का पर्व

6“उसी महीने की पन्द्रह तारीख को अखमीरी मैदे
के फुलकों का पर्व होगा तुम सात दिन तक
अखमीरी मैदे के फुलके खाओगे। 7इस पर्व के पहले
दिन तुम एक पवित्र सभा करोगे। उस दिन तुम्हें कोई
काम नहीं करना चाहिए। 8सात दिन तक तुम यहोवा
को आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। सातवें दिन एक पवित्र
सभा होगी। उस दिन तुम्हें कोई काम नहीं करना
चाहिए।”

पहली फ़सल का पर्व

9यहोवा ने मूसा से कहा, 10“इस्राएल के लोगों से
कहो: तुम उस धरती पर जाओगे जिसे मैं तुम्हें दूँगा। तुम
उसकी फ़सल काटोगे। उस समय तुम्हें अपनी फ़सल
की पहली पूली याजक के पास लानी चाहिए। 11याजक
पूली को यहोवा के सामने उत्तोलित करेगा। तब वह
तुम्हारे लिए स्वीकार कर ली जाएगी। याजक पूली को
रविवार के प्रात: काल उत्तोलित करेगा।

12“जिस दिन तुम पूली को उत्तोलित करो, उस दिन
तुम एक वर्ष का एक नर मेमना बलि चढ़ाओगे। उस
मेमने में कोई दोष नहीं होना चाहिए। वह मेमना यहोवा
को होमबलि होगी। 13तुम्हें चार क्वॉट अच्छे जैतून के
तेल मिले आटे की अन्नबलि देनी चाहिए। तुम्हें एक
क्वॉट दाखमधु भी देनी चाहिए। यह भेंट यहोवा को
प्रसन्न करने वाली सुगन्ध होगी। 14जब तक तुम अपने
परमेश्वर को भेंट नहीं चढ़ाते, तब तक तुम्हें कोई नया
अन्न, या फल या नये अन्न से बनी रोटी नहीं खानी
चाहिए। यह नियम तुम चाहे जहाँ भी रहो, तुम्हारी पीढ़ी
दर पीढ़ी चलता रहेगा।

सप्ताहों का पर्व

15“उस रविवार के प्रात:काल से वह दिन जब तुम
पूली उत्तोलन भेंट के लिए लाते हो, सात सप्ताह गिनो।
16सातवें सप्ताह के अगले रविवार को (अर्थात् पचास
दिन) बाद तुम यहोवा के लिये नये अन्नबलि लाओगे।
17उस दिन तुम अपने घरों से दो-दो रोटियाँ लाओ। ये
रोटियाँ उत्तोलन भेंट होगी। खमीर का उपयोग करो
और चार क्वॉट आटे की रोटियाँ बनाओ। वह तुम्हारी
पहली फसल से यहोवा की भेंट होगी।

18“लोगों से अन्नबलि के साथ में एक बछड़ा, दो मेढ़े
और एक-एक वर्ष के सात नर मेमने भेंट किए जाएंगे।
इन जानवरों में कोई दोष नहीं होना चाहिए। ये यहोवा
की होमबलि होंगे। वे आग द्वारा यहोवा को दी गई भेंट
होगी। इस की सुगन्ध से यहोवा प्रसन्न होगा। 19तुम भी

पापबलि के रूप में एक बकरा तथा एक वर्ष के दो
मेमने मेलबलि के रूप में चढ़ाओगे।
20“याजक यहोवा के सामने उत्तोलन बलि के लिए दो
मेमने और पहली फ़सल की रोटी उन्हें उत्तोलित करेगा।
वे यहोवा के लिए पवित्र हैं। वे याजक के होंगे। 21उसी
दिन, तुम एक पवित्र सभा बुलाओगे। तुम कोई काम
नहीं करोगे। यह नियम तुम्हारे सभी घरों में सदैव
चलेगा।
22“जब तुम अपने खेतों की फ़सल काटो तो खेतों के
कोनों की सारी फ़सल मत काटो। जो अन्न जमीन पर
गिरे, उसे मत उठाओ। उसे तुम गरीब लोगों तथा तुम्हारे
देश में यात्रा करने वाले विदेशियों के लिए छोड़ दो। मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!”

तुरही का पर्व

23यहोवा ने मूसा से फिर कहा, 24“इस्राएल के लोगों
से कहो: सातवें महीने के प्रथम दिन तुम्हें आराम का
विशेष दिन मानना चाहिए। उस दिन एक धर्म सभा
होगी। तुम्हें इसे मनाने के लिए तुरही बजानी चाहिए।
25तुम्हें कोई काम नहीं करना चाहिए। तुम यहोवा को
आग द्वारा बलि चढ़ाने के लिए बलि लाओगे।”

प्रायश्चित्त का दिन

26यहोवा ने मूसा से कहा, 27“सातवें महीने के दसवें
दिन प्रायश्चित्त का दिन होगा। उस दिन एक धर्म सभा
होगी। तुम भोजन नहीं करोगे* और तुम यहोवा को
आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। 28तुम उस दिन कोई काम
नहीं करोगे। क्यों? क्योंकि यह प्रायश्चित्त का दिन है।
उस दिन याजक यहोवा के सामने जाएगा और वह
उपासना करेगा जो तुम्हें शुद्ध बनाती है।
29“यदि कोई व्यक्ति उस दिन उपवास करने से मना
करता है तो उसे अपने लोगों से अलग कर देना चाहिए।
30यदि कोई व्यक्ति उस दिन काम करेगा तो उसे मैं
(परमेश्वर) उसके लोगों में से काट दूँगा। 31तुम्हें कोई
भी काम नहीं करना चाहिए। यह नियम तुम जहाँ कहीं
रहो, सदैव रहेगा। 32यह तुम्हारे लिए आराम का विशेष
दिन होगा। तुम्हें भोजन नहीं करना चाहिए। तुम आराम
के इस विशेष दिन को महीने के नवें दिन की सन्ध्या*
से आरम्भ करोगे। यह आराम का विशेष दिन उस
सन्ध्या से आरम्भ करके अगली सन्ध्या तक रहता है।”

आश्रय का पर्व

33यहोवा ने मूसा से फिर कहा, 34“इस्राएल के लोगों
से कहो : सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन आश्रय का पर्व
होगा। यहोवा के लिए यह पवित्र पर्व सात दिन तक
चलेगा। 35पहले दिन एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई
काम नहीं करना चाहिए। 36तुम सात दिनों तक यहोवा
के लिये आग द्वारा बलि चढ़ाओगे। आठवें दिन तुम
दूसरी धर्म सभा करोगे। तुम यहोवा को आग द्वारा बलि
चढ़ाओगे। यह एक धर्म सभा होगी। तुम्हें तब कोई
काम नहीं करना चाहिए।
37“ये यहोवा का विशेष पवित्र दिन है। उन दिनों धर्म
सभाएँ होंगी। तुम यहोवा को होमबलि, अन्नबलि, बलियाँ,
पेयबलि अग्नि द्वारा चढ़ाओगे। तुम वे बलियाँ ठीक
समय पर लाओगे। 38तुम यहोवा के सब्त दिवसों को
याद करने के अतिरिक्त उन पवित्र दिनों का पर्व मनाओगे।
तुम उन बलियों को यहोवा को अपनी अन्नबलि के
अतिरिक्त दोगे। तुम विशेष दिए गए अपने वचन को
पूरा करने के रूप में दी गई किसी भेंट के अतिरिक्त
उन चीज़ों को दोगे। वे उन विशेष भेंटों के अतिरिक्त
होंगी जिन्हें तुम यहोवा को देना चाहते हो।
39“सातवें महीने के पन्द्रहवें दिन, जब तुम अपने खेतों
से फसल ला चुकोगे, सात दिन तक यहोवा का पर्व
मनाओगे। तुम पहले और आठवें दिन आराम करोगे।
40पहले दिन तुम फलदार पेड़ों से अच्छे फल लोगे और
तुम नाले के किनारे के खजूर के पेड़, चीड़ और बेंत
के पेड़ों से शाखाएँ लोगे। तुम अपने परमेश्वर यहोवा के
सामने सात दिन तक पर्व मनाओगे।
41“तुम इस पवित्र दिन को हर वर्ष यहोवा के लिये
सात दिनों तक मनाओगे। यह नियम सदैव रहेगा। तुम
इस पवित्र दिन को सातवें महीने में मनाओगे। 42तुम
सात दिन तक अस्थायी आश्रयों में रहोगे। इस्राएल में
उत्पन्न हुए सभी लोग उन आश्रयों में रहेंगे। 43क्यों?
इससे तुम्हारे सभी वंशज यह जानेंगे कि मैंने इस्राएल के
लोगों को अस्थायी आश्रयों में रहने वाला उस समय
बनाया जिस समय मैं उन्हें मिस्र से लाया। मैं तुम्हारा
परमेश्वर यहोवा हूँ!”
44इस प्रकार मूसा ने इस्राएल के लोगों को यहोवा के
विशेष पवित्र दिनों के बारे में बताया।

दीपाधार और पवित्र रोटी

24 यहोवा ने मूसा से कहा, 2“इस्राएल के लोगों
को कोल्हू से निकाला हुआ जैतून का शुद्ध
तेल अपने पास लाने का आदेश दो। वह तेल दीपकों के
लिए है। ये दीपक बिना बुझे जलते रहने चाहिए। 3हारून
यहोवा के मिलापवाले तम्बू में साक्षीपत्र के पर्दे के आगे
सन्ध्या समय से प्रात:काल तक दीपकों को जलाये रखेगा।
यह नियम सदा-सदा के लिए है। 4हारून को सोने की
दीपाधार पर यहोवा के सामने दीपकों को सदैव जलता
हुआ रखना चाहिए।
5“अच्छा महीन आटा लो और उसकी बारह रोटियाँ
बनाओ। हर एक रोटी के लिए चार क्वार्ट आटे का

भोजन नहीं करोगे शाब्दिक “अपने को विनीत दिखाओगे।”

सन्ध्या यहूदी लोगों के लिए दिन का आरम्भ सन्ध्या से होता है।

उपयोग करो। 6उन्हें दो पँक्तियों में सुनहरी मेज़ पर
यहोवा के सामने रखो। हर एक पँक्ति में छ: रोटियाँ
होंगी। 7हर एक पँक्ति पर शुद्ध लोबान रखो। यह यहोवा
को आग द्वारा दी गई भेंट के सम्बन्ध में यहोवा को याद
दिलाने में सहायता करेगा। 8हर एक सब्त दिवस को
हारून रोटियों को यहोवा के सामने क्रम में रखेगा।
इसे सदैव करना चाहिए। इस्राएल के लोगों के साथ यह
वाचा सदैव बनी रहेगी। 9वह रोटी हारून और उसके
पुत्रों की होगी। वे रोटियों को पवित्र स्थान में खायेंगे।
क्यों? क्योंकि वह रोटी यहोवा को आग द्वारा चढ़ाई गई
भेंटों में से है। वह रोटी सदैव हारून का हिस्सा है।"

वह व्यक्ति जिसने यहोवा को शाप दिया

10एक इस्राएली स्त्री का पुत्र था। उसका पिता मिस्री
था। इस्राएली स्त्री का यह पुत्र इस्राएली था। वह इस्राएली
लोगों के बीच में घूम रहा था और उसने डेरे में लड़ना
आरम्भ किया। 11इस्राएली स्त्री के लड़के ने यहोवा के
नाम के बारे में बुरी बातें कहनी शुरू कीं। इसलिए
लोग उस पुत्र को मूसा के सामने लाए। (लड़के की माँ
का नाम शलोमीत था जो दान के परिवार समूह से दिब्री
की पुत्री थी।) 12लोगों ने लड़के को कैदी की तरह
पकड़े रखा और तब तक प्रतीक्षा की, जब तक यहोवा
का आदेश उन्हें स्पष्ट रूप से ज्ञात नहीं हो गया।

13तब यहोवा ने मूसा से कहा,

14"उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर
लाओ, जिसने शाप दिया है। तब उन सभी लोगों को
एक साथ बुलाओ जिन्होंने उसे शाप देते सुना है। वे लोग
अपने हाथ उसके सिर पर रखेंगे।* और तब सभी लोग
उस पर पत्थर मारेंगे और उसे मार डालेंगे। 15तुम्हें
इस्राएल के लोगों से कहना चाहिए : यदि कोई व्यक्ति
अपने परमेश्वर को शाप देता है तो उस व्यक्ति को
दण्ड मिलना चाहिए। 16कोई व्यक्ति, जो यहोवा के नाम
के विरुद्ध बोलता है, अवश्य मार दिया जाना चाहिए।
सभी लोगों को उसे पत्थर मारने चाहिए। विदेशी को
वैसे ही दण्ड मिलना चाहिए जैसे इस्राएल में जन्म लेने
वाले व्यक्ति को मिलता है। यदि कोई व्यक्ति यहोवा
के नाम को अपशब्द कहता है तो उसे अवश्य मार
देना चाहिए।

17"और यदि कोई व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार
डालता है तो उसे अवश्य मार डालना चाहिए। 18यदि
कोई व्यक्ति किसी व्यक्ति के जानवर को मार डालता है
तो उसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना चाहिए।*

19"यदि कोई व्यक्ति अपने पड़ोस में किसी को चोट
पहुँचाता है तो उस व्यक्ति को उसी प्रकार की चोट उस
व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए।* 20एक टूटी हड्डी के लिए
एक टूटी हड्डी, एक आँख के लिए एक आँख, और
एक दाँत के लिए दाँत। उसी प्रकार की चोट उस
व्यक्ति को पहुँचानी चाहिए, जैसा उसने दूसरे को पहुँचाई
है। 21इसलिए जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के जानवर
को मारे तो इसके बदले में उसे दूसरा जानवर देना
चाहिए। किन्तु जो व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति को मार
डालता है वह अवश्य मार डाला जाना चाहिए। 22तुम्हारे
लिए एक ही प्रकार का न्याय होगा। यह विदेशी और
तुम्हारे अपने देशवासी के लिए समान होगा। क्योंकि मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!"

23तब मूसा ने इस्राएल के लोगों से बात की और वे
उस व्यक्ति को डेरे के बाहर एक स्थान पर लाए,
जिसने शाप दिया था। तब उन्होंने उसे पत्थरों से मार
डाला। इस प्रकार इस्राएल के लोगों ने वह किया जो
यहोवा ने मूसा को आदेश दिया था।

भूमि के लिए आराम का समय

25 यहोवा ने मूसा से सीनै पर्वत पर कहा। यहोवा
ने कहा, 2"इस्राएल के लोगों से कहो, तुम लोग
उस भूमि पर जाओगे जिसे मैं तुमको दे रहा हूँ। उस
समय तुम्हें भूमि को आराम का विशेष समय देना
चाहिए। यह यहोवा को सम्मान देने के लिए धरती के
आराम का विशेष समय होगा। 3तुम छ: वर्ष तक अपने
खेतों में बीज बोओगे। तुम अपने अँगूर के बागों में छ:
वर्ष तक कटाई करोगे और उसके फल लाओगे। 4किन्तु
सातवें वर्ष तुम उस भूमि को आराम करने दोगे। यह
यहोवा को सम्मान देने के लिए आराम का विशेष
समय होगा। तुम्हें अपने खेतों में बीज नहीं बोना चाहिए
और अँगूर के बागों में बेलों की कटाई नहीं करनी
चाहिए। 5तुम्हें उन फ़सलों की कटाई नहीं करनी चाहिए
जो फ़सल काटने के बाद अपने आप उगती है। तुम्हें
अपनी उन अँगूर की बेलों से अँगूर नहीं उतारने चाहिए
जिनकी तुमने कटाई नहीं की है। यह भूमि के विश्राम
का वर्ष होगा। 6यह भूमि के विश्राम का वर्ष होगा,
किन्तु तुम्हारे पास फिर भी पर्याप्त भोजन रहेगा। तुम्हारे
पुरुष व स्त्री दासों के लिए पर्याप्त भोजन रहेगा। मज़दूरी
पर रखे गए तुम्हारे मजदूर और तुम्हारे देश में रहने
वाले विदेशियों के लिए भोजन रहेगा। 7तुम्हारे मवेशियों
और अन्य जानवरों के खाने के लिए पर्याप्त चारा
होगा।

हाथ उसके सिर पर रखेंगे इससे पता चलता है कि वे सब लोग उस लड़के को दण्ड देने में हाथ बटा रहे थे।

दूसरा जानवर देना चाहिये शाब्दिक इसके लिए भुगतान करो "जीवन के लिये जीवन।"

यदि ... चाहिये यह नियम समाज को अपराधों का दण्ड निश्चत करने के लिए एक दिशा निर्देश देता है। निजी रूप से बदला लेने की अपेक्षा अपराध के अनुरूप दण्ड समाज को निश्चित करना है।

जुबली मुक्ति वर्ष

8“तुम सात वर्षों के सात समूहों को गिनोगे। ये उन्नचास
वर्ष होंगे। इस समय के भीतर भूमि के लिए सात वर्ष
आराम के होंगे। 9प्रायश्चित्त के दिन तुम्हें मेढ़े का सींग
बजाना चाहिए। वह सातवें महीने के दसवें दिन होगा।
तुम्हें पूरे देश में मेढ़े का सींगा बजाना चाहिए। 10तुम
पचासवें वर्ष को विशेष वर्ष मनाओगे। तुम अपने देश
में रहने वाले सभी लोगों की स्वतन्त्रता घोषित करोगे।
इस समय को “जुबली मुक्तिवर्ष” कहा जाएगा। तुममें से
हर एक को उसकी धरती लौटा दी जाएगी।* और
तुममें से हर एक अपने परिवार में लौट जाएगा। 11पचासवाँ
वर्ष तुम्हारे लिए विशेष उत्सव का वर्ष होगा। उस वर्ष
तुम बीज मत बोओ। अपने आप उगी फसल न काटो।
अँगूर की उन बेलों से अँगूर मत लो। 12वह जुबली वर्ष
है। यह तुम्हारे लिए पवित्र समय होगा। तुम उस पैदावार
को खाओगे जो तुम्हारे खेतों से आती है। 13जुबली वर्ष
में हर एक व्यक्ति को उसकी धरती वापस हो जाएगी।

14“किसी व्यक्ति को अपनी भूमि बेचने में मत ठगो
और जब तुम उससे भूमि खरीदो तब उसे अपने को मत
ठगने दो। 15यदि तुम किसी की भूमि खरीदना चाहते हो
तो पिछले जुबली से काल गणना करो और उस गणना
का उपयोग धरती का ठीक मूल्य तय करने के लिए
करो। यदि तुम भूमि को बेचो, तो फसलों के काटने के
वर्षों को गिनो और वर्षों की उस गणना का उपयोग
ठीक मूल्य तय करने के लिए करो। 16यदि अधिक
वर्ष हैं तो मूल्य ऊँचा होगा। यदि वर्ष थोड़े हैं तो मूल्य
कम करो। क्यों? क्योंकि वह व्यक्ति तुमको सचमुच
कुछ वर्षों की कुछ फसलें ही बेच रहा है। अगली जुबली
पर भूमि उसके परिवारों की हो जाएगी। 17तुम्हें एक
दूसरे को ठगना नहीं चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का
सम्मान करना चाहिए। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

18“मेरे नियमों और निर्णयों को याद रखो। उनका
पालन करो। तब तुम अपने देश में सुरक्षित रहोगे।
19भूमि तुम्हारे लिए उत्तम फ़सल पैदा करेगी। तब
तुम्हारे पास बहुत अधिक भोजन होगा और तुम अपने
प्रदेश में सुरक्षित रहोगे।

20“किन्तु कदाचित तुम यह कहो, ‘यदि हम बीज न
बोए या अपनी फ़सलें न इकट्ठी करें तो सातवें वर्ष हम
लोगों के लिए खाने को कुछ भी नहीं रहेगा।’ 21चिन्ता
मत करो! मैं छठे वर्ष में अपनी आशीष को तुम्हारे पास
आने का आदेश दूँगा। भूमि तीन वर्ष तक फ़सल पैदा
करती रहेगी। 22जब आठवें वर्ष तुम बोओगे तब तक
फ़सल पैदा करती रहेगी। तुम पुरानी पैदावार को नवें
वर्ष तक खाते रहोगे जब आठवें वर्ष में बोयी हुई फ़सल
घरों में आ जाएगी।

आवासीय भूमि के नियम

23“भूमि वस्तुत: मेरी है। इसलिए तुम इसे स्थायी रूप
में नहीं बेच सकते। तुम मेरे साथ मेरी भूमि पर केवल
विदेशी और यात्री के रूप में रह रहे हो। 24कोई व्यक्ति
अपनी भूमि बेच सकता है, किन्तु उसका परिवार सदैव
अपनी भूमि वापस पाएगा। 25कोई व्यक्ति तुम्हारे देश में
बहुत गरीब हो सकता है। वह इतना गरीब हो सकता
कि उसे अपनी सम्पत्ति बेचनी पड़े। ऐसी हालत में उसके
नजदीकी रिश्तेदारों को आगे आना चाहिए और अपने
रिश्तेदार के लिए वह सम्पत्ति वापस खरीदनी चाहिए।
26किसी व्यक्ति का कोई ऐसा नजदीकी रिश्तेदार नहीं
भी हो सकता है जो उसके लिए सम्पत्ति वापस खरीदे।
किन्तु हो सकता है वह स्वयं भूमि को वापस खरीदने
के लिए पर्याप्त धन पा ले। 27तो उसे जब से भूमि बिकी
थी तब से वर्षों को गिनना चाहिए। उसे उस गणना का
उपयोग, भूमि का मूल्य निश्चित करने के लिए करना
चाहिए। तब उसे भूमि को वापस खरीदना चाहिए। तब
भूमि फिर उसकी हो जाएगी। 28किन्तु यदि वह व्यक्ति
अपने लिए भूमि को वापस खरीदने के लिए पर्याप्त धन
नहीं जुटा पाता तो जो कुछ उसने बेचा है वह उस व्यक्ति
के हाथ में जिसने उसे खरीदा है, जुबली पर्व के आने
तक रहेगा। तब उस विशेष उत्सव के समय भूमि प्रथम
भू स्वामी के परिवार की हो जाएगी। इस प्रकार सम्पत्ति
पुन: मूल अधिकारी परिवार की हो जाएगी।

29“यदि कोई व्यक्ति नगर परकोटे के भीतर अपना
घर बेचता है तो घर के बेचे जाने के बाद एक वर्ष तक
उसे वापस लेने का अधिकार होगा। घर को वापस लेने
का उसका अधिकार एक वर्ष तक रहेगा। 30किन्तु
यदि घर का स्वामी एक पूरा वर्ष बीतने के पहले अपना
घर वापस नहीं खरीदता तो नगर परकोटे के भीतर का
घर जो व्यक्ति खरीदता है उसका और उसके वंशजों
का हो जाता है। जुबली के समय प्रथम गृह स्वामी को
वापस नहीं होगा। 31बिना परकोटे वाले नगर खुले मैदान
माने जाएंगे। अत: उन छोटे नगरों में बने हुए घर जुबली
पर्व के समय प्रथम गृहस्वामी को वापस होंगे।

32“किन्तु लेवियों के नगर के बारे में: जो नगर
लेवियों के अपने हैं, उनमें वे अपने घरों को किसी भी
समय वापस खरीद सकते हैं। 33यदि कोई व्यक्ति लेवी से
कोई घर खरीदे तो लेवीयों के नगर का वह घर फिर
जुबली पर्व के समय लेवियों का हो जाएगा। क्यों? क्योंकि
लेवी नगर के घर लेवी के परिवार समूह के लोगों के
हैं। इस्राएल के लोगों ने उन नगरों को लेवी लोगों को
दिया। 34लेवी नगरों के चारों ओर के खेत और चरागाह
बेचे नहीं जा सकते। वे खेत सदा के लिए लेवियों के हैं।

धरती लौटा दी जाएगी इस्राएल में भूमि परिवारों और परिवार–समूहों की थी। कोई व्यक्ति अपनी भूमि बेच सकता था, किन्तु जुबली के समय वह भूमि फिर उसी परिवार या सयुँक्त परिवार की हो जाती थी जिसे वह सर्वप्रथम दी गई थी।

दासों के स्वामियों के लिए नियम

35“सम्भवत: तुम्हारे देश का कोई व्यक्ति इतना अधिक
गरीब हो जाए कि अपना भरण पोषण न कर सके। तुम
उसे एक अतिथि की तरह जीवित रखोगे। 36उसे दिए
गए अपने कर्ज़ पर कोई सूद मत लो। अपने परमेश्वर
का सम्मान करो और अपने भाई को अपने साथ रहने
दो। 37उसे सूद पर पैसा उधार मत दो। जो भोजन वह
करे, उस पर कोई लाभ लेने का प्रयत्न मत करो। 38मैं
तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। मैं तुम्हें मिस्र देश से कनान
प्रदेश देने और तुम्हारा परमेश्वर बनने के लिए बाहर
लाया।

39“सम्भवत: तुम्हारा कोई बन्धु इतना गरीब हो जाय
कि वह दास के रूप में तुम्हे अपने को बेचे। तुम्हें उससे
दास की तरह काम नहीं लेना चाहिए। 40वह जुबली वर्ष
तक मजदूर और एक अतिथि की तरह तुम्हारे साथ
रहेगा। 41तब वह तुम्हें छोड़ सकता है। वह अपने बच्चों
को अपने साथ ले जा सकता है और अपने परिवार में
लौट सकता है। वह अपने पूर्वजों की सम्पत्ति को लौट
सकता है। 42क्यों? क्योंकि वे मेरे सेवक हैं। मैंने उन्हें
मिस्र की दासता से मुक्त किया। वे फिर दास नहीं होने
चाहिए। 43तुम्हें ऐसे व्यक्ति पर क्रूरता से शासन नहीं
करना चाहिए। तुम्हें अपने परमेश्वर का सम्मान करना
चाहिए।

44“तुम्हारे दास दासियों के बारे में : तुम अपने चारों
ओर के अन्य राष्ट्रों से दास दासियाँ ले सकते हो। 45यदि
तुम्हारे देश में रहने वाले विदेशियों के परिवारों के बच्चे
तुम्हारे पास आते हैं तो तुम उन्हें भी दास रख सकते हो।
वे बच्चे तुम्हारे दास होंगे। 46तुम इन विदेशी दासों को
अपने बच्चों को भी दे सकते हो जो तुम्हारे मरने के
बाद तुम्हारे बच्चों के होंगे। वे सदा के लिए तुम्हारे दास
रहेंगे। तुम इन विदेशियों को दास बना सकते हो। किन्तु
तुम्हें अपने भाईयों, इस्राएल के लोगों पर क्रूरता से
शासन नहीं करना चाहिए।

47“सम्भव है कि कोई विदेशी यात्री या अतिथि तुम्हारे
बीच धनी हो जाय। सम्भव है कि तुम्हारे देश का कोई
व्यक्ति इतना गरीब हो जाय कि वह अपने को तुम्हारे
बीच रहने वाले किसी विदेशी या विदेशी परिवार के
सदस्य को दास के रूप में बेचे। 48वह व्यक्ति वापस
खरीदे जाने और स्वतन्त्र होने का अधिकारी होगा।
उसके भाईयों में से कोई भी उसे वापस खरीद सकता है
49अथवा उसके चाचा, मामा व चचेरे, ममेरे भाई उसे
वापस खरीद सकते हैं या उसके नजदीकी रिश्तेदारों में
से उसे कोई खरीद सकता है अथवा यदि व्यक्ति पर्याप्त
धन पाता है तो स्वयं धन देकर वह फिर मुक्त हो
सकता है।

50“तुम उसका मूल्य कैसे निश्चित करोगे? विदेशी
के पास जब से उसने अपने को बेचा है तब से अगली
जुबली तक के वर्षों को तुम गिनोगे। उस गणना का
उपयोग मूल्य निश्चित करने में करो। क्यों? क्योंकि
वस्तुत: उस व्यक्ति ने कुछ वर्षों के लिए उसे 'मजदूरी'
पर रखा।

51“यदि जुबली के वर्ष के पूर्व कई वर्ष हो तो व्यक्ति
को मूल्य का बड़ा हिस्सा लौटाना चाहिए। यह उन वर्षों
की संख्या पर आधारित है। 52यदि जुबली के वर्ष तक
कुछ ही वर्ष शेष हो तो व्यक्ति को मूल कीमत का थोड़ा
सा भाग ही लौटाना चाहिए। 53किन्तु वह व्यक्ति प्रति वर्ष
विदेशी के यहाँ मजदूर की तरह रहेगा, विदेशी को उस
व्यक्ति पर क्रूरता से शासन न करने दो।

54“वह व्यक्ति किसी के द्वारा वापस न खरीदे जाने
पर भी मुक्त होगा। जुबली के वर्ष वह तथा उसके बच्चे
मुक्त हो जाएंगे। 55क्यों? क्योंकि इस्राएल के लोग मेरे
दास हैं। वे मेरे सेवक हैं। मैंने मिस्र की दासता से उन्हें
मुक्त किया। मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

परमेश्वर की आज्ञा पालन का पुरस्कार

26 “अपने लिए मूर्तियाँ मत बनाओ। मूर्तियाँ या
यादगार के पत्थर स्थापित मत करो। अपने
देश में उपासना करने के लिए पत्थर की मूर्तियाँ स्थापित
न करो। क्यों? क्योंकि मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ!

2“मेरे आराम के विशेष दिनों को याद रखो और मेरे
पवित्र स्थान का सम्मान करो। मैं यहोवा हूँ!

3“मेरे नियमों और आदेशों को याद रखो और उनका
पालन करो। 4यदि तुम ऐसा करोगे तो मैं जिस समय
वर्षा आनी चाहिए, उसी समय वर्षा कराऊँगा। भूमि
फ़सलें पैदा करेंगी और पेड़ अपने फल देंगे। 5तुम्हारा
अनाज निकालने का काम तब तक चलेगा जब तक
अँगूर इकट्ठा करने का समय आएगा और अँगूर का
इकट्ठा करना तब तक चलेगा जब तक बोने का
समय आएगा। तब तुम्हारे पास खाने के लिए बहुत
होगा, और तुम अपने प्रदेश में सुरक्षित रहोगे। 6मैं
तुम्हारे देश को शान्ति दूँगा। तुम शान्ति से सो सकोगे।
कोई व्यक्ति भयभीत करने नहीं आएगा। मैं विनाशकारी
जानवरों को तुम्हारे देश से बाहर रखूँगा। और सेनाएं
तुम्हारे देश से नहीं गुजरेंगी।

7“तुम अपने शत्रुओं को पीछा करके भगाओगे और
उन्हें हराओगे। तुम उन्हें अपनी तलवार से मार डालोगे।
8तुम्हारे पाँच व्यक्ति सौ व्यक्तियों को पीछा कर के
भगाएंगे और तुम्हारे सौ व्यक्ति हजार व्यक्तियों का पीछा
करेंगे। तुम अपने शत्रुओं को हराओगे और उन्हें
तलवार से मार डालोगे।

9“तब मैं तुम्हारी ओर मुड़ूंगा मैं तुम्हें बहुत से बच्चों
वाला बनाऊँगा। मैं तुम्हारे साथ अपनी वाचा का
पालन करूँगा। 10तुम्हारे पास एक वर्ष से अधिक चलने
वाली पर्याप्त पैदावार रहेगी। तुम नयी फसल

काटोगे। किन्तु तब तुम्हें पुरानी पैदावार नयी पैदावार के लिए जगह बनाने हेतु फेंकनी पड़ेगी। 11तुम लोगों के बीच में अपना पवित्र तम्बू रखूँगा। मैं तुम लोगों से अलग नहीं होऊँगा। 12मैं तुम्हारे साथ चलूँगा और तुम्हारा परमेश्वर रहूँगा। तुम मेरे लोग रहोगे। 13मैं तुम्हारा परमेश्वर यहोवा हूँ। तुम मिस्र में दास थे। किन्तु मैं तुम्हें मिस्र से बाहर लाया। तुम लोग दास के रूप में भारी बोझ ढोने से झुके हुए थे किन्तु मैंने तुम्हारे कंधों के जुंए को तोड़ फेंका। मैंने तुम्हें पुन: गर्व से चलने वाला बनाया।

यहोवा की आज्ञा पालन न करने के लिए दण्ड

14"किन्तु यदि तुम मेरी आज्ञा का पालन नहीं करोगे और मेरे ये सब आदेश नहीं मानोगे तो ये बुरी बातें होंगी। 15यदि तुम मेरे नियमों और आदेशों को मानना अस्वीकार करते हो तो तुमने मेरी वाचा को तोड़ दिया है। 16यदि तुम ऐसा करते हो तो मैं ऐसा करूँगा कि तुम्हारा भयंकर अनिष्ट होगा। मैं तुमको असाध्य रोग और तीव्र ज्वर लगाऊँगा। वे तुम्हारी आँखे नष्ट करेंगे और तुम्हारा जीवन ले लेंगे। जब तुम अपने बीज बोओगे तो तुम्हें सफलता नहीं मिलेगी तुम्हारी पैदावार तुम्हारे शत्रु खाएंगे।

17मैं तुम्हारे विरुद्ध होऊँगा, अत: तुम्हारे शत्रु तुमको हराएंगे। वे शत्रु तुमसे घृणा करेंगे और तुम्हारे ऊपर शासन करेंगे। तुम तब भी भागोगे, जब तुम्हारा पीछा कोई न कर रहा होगा।

18"यदि इस के बाद भी तुम मेरी आज्ञा पालन नहीं करते हो तो मैं तुम्हारे पापों के लिए सात गुना अधिक दण्ड दूँगा। 19मैं उन बड़े नगरों को भी नष्ट करूँगा जो तुम्हें गर्वीला बनाते हैं। आकाश वर्षा नहीं देगा और धरती पैदावार नहीं उत्पन्न करेगी।* 20तुम कठोर परिश्रम करोगे, किन्तु इससे कुछ भी नहीं होगा। तुम्हारी भूमि में कोई पैदावार नहीं होगी और तुम्हारे पेड़ों पर फल नहीं आएंगे।

21"यदि तब भी तुम मेरे विरुद्ध जाते हो और मेरी आज्ञा का पालन करना अस्वीकार करते हो तो मैं सात गुना कठोरता से मारूँगा। जितना अधिक पाप करोगे उतना अधिक दण्ड पाओगे। 22मैं तुम्हारे विरुद्ध जंगली जानवरों को भेजूँगा। वे तुम्हारे बच्चों को तुमसे छीन ले जाएगें। वे तुम्हारे मवेशियों को नष्ट करेंगे। वे तुम्हारी संख्या बहुत कम कर देंगे। लोग यात्रा करने से भय खाएंगे, सड़कें खाली हो जाएंगी!

23"यदि उन चीज़ों के होने पर भी तुम्हें सबक नहीं मिलता और तुम मेरे विरुद्ध जाते हो, 24तो मैं तुम्हारे विरुद्ध होऊँगा। मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हारे पापों के लिए तुम्हें सात गुना दण्ड दूँगा। 25तुमने मेरी वाचा तोड़ी है, अत: मैं तुम्हें दण्ड दूँगा। मैं तुम्हारे विरुद्ध सेनाएँ भेजूँगा। तुम सुरक्षा के लिए अपने नगरों में जाओगे। किन्तु मैं ऐसा करूँगा कि तुम लोगों में बीमारियाँ फैलें। तब तुम्हारे शत्रु तुम्हें हराएंगे। 26मैं उस नगर में छोड़े गए अन्न का एक भाग तुम्हें दूँगा। किन्तु खाने के लिए बहुत कम अन्न रहेगा। दस स्त्रियाँ अपनी सभी रोटी एक चूल्हे में पका सकेंगी। वे रोटी के हर एक टूकड़े को नापेंगी। तुम खाओगे, किन्तु फिर भी भूखे रहोगे!

27"यदि तुम इतने पर भी मेरी बातें सुनना अस्वीकार करते हो, और मेरे विरुद्ध रहते हो 28तो मैं वस्तुत: अपना क्रोध प्रकट करूँगा! मैं, हाँ, मैं (यहोवा), तुम्हें तुम्हारे पापों के लिए सात गुना दण्ड दूँगा। 29तुम अपने पुत्र, पुत्रियों के शरीरों को खाओगे। 30मैं तुम्हारे ऊँचे स्थानों को नष्ट करूँगा। मैं तुम्हारी सुगन्धित वेदियों को काट डालूँगा। मैं तुम्हारे शवों को तुम्हारी निर्जीव मूर्तियों के शवों पर डालूँगा। तुम मुझको अत्यन्त घिनौने लगोगे। 31मैं तुम्हारे नगरों को नष्ट करूँगा। मैं ऊँचे पवित्र स्थानों को खाली कर दूँगा। मैं तुम्हारी भेंटों की मधुर सुगन्ध को नहीं लूँगा। 32मैं तुम्हारे देश को इतना खाली कर दूँगा कि तुम्हारे शत्रु तक जो इसमें रहने आएंगे, वे इस पर चकित होंगे। 33और मैं तुम्हें विभिन्न प्रदेशों में बिखेर दूँगा। मैं अपनी तलवार खीचूँगा और तुम्हें नष्ट करूँगा। तुम्हारी भूमि ख़ाली हो जाएगी और तुम्हारे नगर उजाड़ हो जाएंगे।

34"तुम अपने शत्रु के देशों में ले जाये जाओगे। तुम्हारी धरती खाली हो जायेगी और वह अंत में उस विश्राम को पायेगी। 35जिसे तुमने उसे तब नहीं दिया था जब तुम उस पर रहते थे। 36बचे हुए व्यक्ति अपने शत्रुओं के देश में अपना साहस खो देंगे। वह हर चीज़ से भयभीत होंगे। वह हवा में उड़ती पत्ती की तरह चारों ओर भागेंगें। वे ऐसे भागेंगे मानों कोई तलवार लिए उनका पीछा कर रहा हो। 37वे एक दूसरे पर तब भी गिरेंगे, जब कोई भी उनका पीछा नहीं कर रहा होगा।

"तुम इतने शक्तिशाली नहीं रहोगे कि अपने शत्रुओं के मुकाबले खड़े रह सको। 38तुम अन्य लोगों में विलीन हो जाओगे। तुम अपने शत्रुओं के देश में लुप्त हो जाओगे। 39इस प्रकार तुम्हारी सन्तानें तुम्हारे शत्रुओं के देश में अपने पापों में सड़ेंगी। वे अपने पापों में ठीक वैसे ही सड़ेंगी जैसे उनके पूर्वज सड़े।

आशा सदा रहती है

40"सम्भव है कि लोग अपने पाप स्वीकार करें और वे अपने पूर्वजों के पापों को स्वीकार करेंगे। सम्भव है वे स्वीकार करें कि वे मेरे विरुद्ध हुए। सम्भव है वे यह स्वीकार करें कि उन्होंने मेरे विरुद्ध पाप किया है।

आकाश ... करेगी शाब्दिक "तुम्हारे लिए आकाश लोहा सा होगा और भूमि काँसे जैसी।"

41सम्भव है कि वे स्वीकार करें कि मैं उनके विरुद्ध
हुआ और उन्हें उनके शत्रुओं के देश में लाया। उन
लोगों ने मेरे साथ अजनबी का सा व्यवहार किया। यदि
वे विनम्र* हो जाएं और अपने पापों के लिए दण्ड
स्वीकार करें 42तो मैं याकूब के साथ के अपनी वाचा
को याद करूँगा। इसहाक के साथ के अपनी वाचा को
याद करूँगा। इब्राहीम के साथ की गई वाचा को मैं याद
करूँगा और मैं उस भूमि को याद करूँगा।

43"भूमि खाली रहेगी। भूमि आराम के समय का
आनन्द लेगी। तब तुम्हारे बचे हुए लोग अपने पाप के
लिए दण्ड स्वीकार करेगें। वे सीखेंगे कि उन्हें इसलिए
दण्ड मिला कि उन्होंने मेरे व्यवस्था से घृणा की और
नियमों का पालन करना अस्वीकार किया। 44उन्होंने
सचमुच पाप किया। किन्तु यदि वे मेरे पास सहायता के
लिए आते हैं तो मैं उनसे दूर नहीं रहूँगा। मैं उनकी बातें
तब भी सुनूँगा जब वे अपने शत्रुओं के देश में भी होगें।
मैं उन्हें पूरी तरह नष्ट नहीं करूँगा। मैं उनके साथ
अपनी वाचा को नहीं तोड़ूँगा। क्यों? क्योंकि मैं उनका
परमेश्वर यहोवा हूँ! 45मैं उनके पूर्वजों के साथ की गई
वाचा को याद रखूँगा। मैं उनके पूर्वजों को इसलिए मिस्र
से बाहर लाया कि मैं उनका परमेश्वर हो सकूँ। दूसरे
राष्ट्रों ने उन बातों को देखा। मैं यहोवा हूँ!"

46ये वे विधियाँ, नियम और व्यवस्थाएं हैं जिन्हें यहोवा
ने इस्राएल के लोगों को दिया। वे नियम इस्राएल के
लोगों और यहोवा के बीच वाचा है। यहोवा ने उन
नियमों को सीनै पर्वत पर दिया था। उसने मूसा को
नियम दिए और मूसा ने उन्हें लोगों को दिया।

वचन महत्वपूर्ण हैं

27 यहोवा ने मूसा से कहा, 2"इस्राएल के लोगों से
कहो : कोई व्यक्ति यहोवा को विशेष वचन दे
सकता है। वह व्यक्ति यहोवा को किसी व्यक्ति को
अर्पित करने का वचन दे सकता है। वह व्यक्ति यहोवा
की सेवा विशेष ढंग से करेगा। याजक उस व्यक्ति के
लिए विशेष मूल्य निश्चित करेगा। यदि लोग उसे यहोवा
से वापस खरीदना चाहते हैं तो वे मूल्य देंगे। 3बीस से
साठ वर्ष तक की आयु के पुरुष का मूल्य पचास
शेकेल चाँदी होगी। (तुम्हें चाँदी को तोलने के लिए
पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग करना
चाहिए।) 4बीस से साठ वर्ष आयु की स्त्री का मूल्य
तीस शेकेल है। 5पाँच से बीस वर्ष की आयु के पुरुष
का मूल्य बीस शेकेल है। पाँच से बीस वर्ष आयु की स्त्री
का मूल्य दस शेकेल हैं। 6एक महीने से पाँच महीने
तक के बालक का मूल्य पाँच शेकेल है। एक बालिका
का मूल्य तीन शेकेल है। 7साठ या साठ से अधिक
आयु के पुरुष का मूल्य पन्द्रह शेकेल है। एक स्त्री का
मूल्य दस शेकेल है।

8"यदि व्यक्ति इतना गरीब है कि मूल्य देने में असमर्थ
है तो उस व्यक्ति को याजक के सामने लाओ। याजक
यह निश्चित करेगा कि वह व्यक्ति कितना मूल्य भुगतान
में दे सकता है।

यहोवा को भेंट

9"कुछ जानवरों का उपयोग यहोवा की बलि के रूप
में किया जा सकता है। यदि कोई व्यक्ति उन जानवरों में
से किसी को लाता है तो वह जानवर पवित्र हो जाएगा।
10वह व्यक्ति यहोवा को उस जानवर को देने का वचन
देता है। इसलिए उस व्यक्ति को उस जानवर के स्थान
पर दूसरा जानवर रखने का प्रयत्न नहीं करना चाहिए।
उसे अच्छे जानवर को बुरे जानवर से नहीं बदलना
चाहिए। उसे बुरे जानवर को अच्छे जानवर से नहीं
बदलना चाहिए। यदि वह व्यक्ति दोनों जानवरों को
बदलना ही चाहता है तो दोनों जानवर पवित्र हो जाएगें।
दोनों जानवर यहोवा के हो जाएंगे।

11"कुछ जानवर यहोवा को बलि के रूप में नहीं भेंट
किए जा सकते। यदि कोई व्यक्ति उन अशुद्ध जानवरों
में से किसी को यहोवा के लिए लाता है तो वह जानवर
याजक के सामने लाया जाना चाहिए। 12याजक उस
जानवर का मूल्य निश्चित करेगा। इससे कोई जानवर
नहीं कहा जाएगा कि वह जानवर अच्छा है या बुरा,
यदि याजक मूल्य निश्चित कर देता है तो जानवर का
वही मूल्य है। 13यदि व्यक्ति जानवर को वापस खरीदना
चाहता है* तो उसे मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा और जोड़ना
चाहिए।

यहोवा को भेंट किए गए मकान का मूल्य

14"यदि कोई व्यक्ति अपने मकान को पवित्र
मकान के रूप में यहोवा को अर्पित करता है तो
याजक को इसका मूल्य निश्चित करना चाहिए। इससे
कोई अन्तर नहीं पड़ता कि मकान अच्छा है या बुरा,
यदि याजक मूल्य निश्चित करता है तो वही मकान
का मूल्य है। 15किन्तु वह व्यक्ति जो मकान अर्पित
करता है यदि उसे वापस खरीदना चाहता है तो उसे
मूल्य में पाँचवाँ हिस्सा जोड़ना चाहिए । तब घर उस
व्यक्ति का हो जाएगा।

उन लोगो ... विनम्र शाब्दिक "यदि वे अपने खतनारहित हृदय को विनम्र करें।"

वापस खरीदना चाहता है पहलौठा बच्चे या जानवर यहोवा को दिये जाते थे। किन्तु गधों की तरह बच्चों की बलि नहीं दी जाती थी। इस प्रकार व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को याजक को देता था। याजक मूल्य निश्चित करता था, और व्यक्ति प्रथम उत्पन्न को धन या बलि चढ़ाने योग्य जानवर से वापस खरीद लेता था। देखें निर्गमन 13:1– 16

भूसम्पत्ति का मूल्य

16"यदि कोई व्यक्ति अपने खेत का कोई भाग यहोवा को अर्पित करता है तो उन खेतों का मूल्य उनको बोने के लिए आवश्यक बीज पर आधारित होगा। एक होमेर जौ के बीज की कीमत चाँदी के पचास शेकेल होगी। 17यदि व्यक्ति जुबली के वर्ष खेत का दान करता है तब मूल्य वह होगा जो याजक निश्चित करेगा। 18किन्तु व्यक्ति यदि जुबली के बाद खेत का दान करता है तो याजक को वास्तविक मूल्य निश्चित करना चाहिए। उसे अगले जुबली वर्ष तक के वर्षों को गिनना चाहिए। तब वह उस गणना का उपयोग मूल्य निश्चित करने के लिए करेगा। 19यदि खेत दान देने वाला व्यक्ति खेत को वापस खरीदना चाहे तो उसके मुल्य में पाँचवाँ भाग और जोड़ा जाएगा। 20यदि वह व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो खेत सदैव याजकों का होगा। यदि खेत किसी अन्य को बेचा जाता है तो पहला व्यक्ति उसे वापस नहीं खरीद सकता।

21"यदि व्यक्ति खेत को वापस नहीं खरीदता है तो जुबली के वर्ष खेत केवल यहोवा के लिए पवित्र रहेगा। यह सदैव याजकों का रहेगा। यह उस भूमि की तरह होगा जो पूरी तरह यहोवा को दे दी गई हो।

22"यदि कोई अपने खरीदे खेत को यहोवा को अर्पित करता है जो उसकी निजी सम्पत्ति* का भाग नहीं है। 23तब याजक को जुबली के वर्ष तक वर्षों को गिनना चाहिए और खेत का मूल्य निश्चित करना चाहिए। तब वह खेत यहोवा का होगा। 24जुबली के वर्ष वह खेत मूल भूस्वामी के पास चला जाएगा। वह उस परिवार को जाएगा जो उसका स्वामी है।

25"तुम्हें पवित्र स्थान से प्रामाणिक शेकेल का उपयोग उन मूल्यों को अदा करने के लिए करना चाहिए। पवित्र स्थान के प्रामाणिक शेकेल का तोल बीस गेरा* है।

जानवरों का मूल्य

26"लोग मवेशियों और भेड़ों को यहोवा को दान दे सकते हैं, किन्तु यदि जानवर पहलौठा है तो वह जानवर जन्म से ही यहोवा का है। इसलिए लोग पहलौठा जानवर का दान नहीं कर सकते। 27लोगों को पहलौठा जानवर यहोवा को देना चाहिए। किन्तु यदि पहलौठा जानवर अशुद्ध है तो व्यक्ति को उस जानवर को वापस खरीदना चाहिए। याजक उस जानवर का मूल्य निश्चित करेगा और व्यक्ति को उस मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए। यदि व्यक्ति जानवर को वापस नहीं खरीदता तो याजक को अपने निश्चित किए गए मूल्य पर उसे बेच देना चाहिए।

विशेष भेंटें

28"एक विशेष प्रकार की भेंट है जिसे लोग यहोवा को चढ़ाते हैं। वह भेंट पूरी तरह यहोवा की है। वह भेंट न तो वापस खरीदी जा सकती है न ही बेची जा सकती है। वह भेंट यहोवा की है। उस प्रकार की भेंटें ऐसे लोग, जानवर और खेत हैं, जो परिवार की सम्पत्ति है।29यदि वह विशेष प्रकार की यहोवा को भेंट कोई व्यक्ति है तो उसे वापस खरीदा नहीं जा सकता। उसे अवश्य मार दिया जाना चाहिए।

30"सभी पैदावारों का दसवाँ भाग यहोवा का है। इसमें खेतों, फसलें और पेड़ों के फल सम्मिलित हैं। वह दसवाँ भाग यहोवा का है। 31इसलिए यदि कोई व्यक्ति अपना दसवाँ भाग वापस लेना चाहता है तो उसके मूल्य का पाँचवाँ भाग उसमें जोड़ना चाहिए और वापस खरीदना चाहिए।

32"याजक व्यक्तियों के मवेशियों और भेड़ों में से हर दसवाँ जानवर लेगा। हर दसवाँ जानवर यहोवा का होगा। 33मालिक को यह चिन्ता नहीं करनी चाहिए कि वह जानवर अच्छा है या बुरा। उसे जानवर को अन्य जानवर से नहीं बदलना चाहिए। यदि वह बदलने का निश्चय करता है तो दोनों जानवर यहोवा के होंगे। वह जानवर वापस नहीं खरीदा जा सकता।"

34ये वे आदेश हैं जिन्हें यहोवा ने सीनै पर्वत पर मूसा को दिये। ये आदेश इस्राएल के लोगों के लिए हैं।

निजी सम्पत्ति अर्थात् वह भूमि जो उसके परिवार या उसके परिवार समूह को दी गई हो।

बीस गेरा 1/50 औंस।